राजदूतों के अद्‌भुत कार्य

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

लूकस प्रभु येशु के शिष्य थे जिन्होंने दो पुस्तकें लिखी हैं। पहली पुस्तक का नाम है, "मुक्तिदाता येशु का शुभ संदेश" जिसमें लूकस ने प्रभु येशु के जीवन, उपदेशों, अद्‌भुत चमत्कारों और उनकी दर्दनाक मृत्यु के बाद ज़िन्दा होने के बारे में लिखा है।

शिष्य लूकस की दूसरी पुस्तक जिसे हम यहाँ देख रहे हैं, उसका नाम है, "मुक्तिदाता येशु के राजदूतों के अद्‌भुत कार्य।" इसमें लूकस लिखते हैं कि कैसे अगले 30 सालों में प्रभु येशु के राजदूतों और शिष्यों ने परमात्मा की पवित्र आत्मा की शक्ति से भरकर उनके प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए अद्‌भुत तरीके से उनके संदेश को संसार में फैलाना शुरू किया।

पुस्तक के पहले पाँच अध्यायों में, प्रभु येशु के नज़दीकी शिष्य पतरस और योहन अपने गुरु के नाम का पुरे जोश से फैलाते हैं और लोगों को पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा स्वस्थ करते हैं। उस समय पतरस और योहन खासतौर पर यहूदी समाज में ही प्रभु येशु के शुभ संदेश के बारे में बताते थे।

बाद के तीन अध्यायों में, पवित्र आत्मा दो और शिष्यों, स्टैफनस और फिलिपस को प्रेरणा देती है कि वे प्रभु येशु के बारे में दूसरे समाज के लोगों में भी बताएँ।

बाकि अध्यायों में, शाऊल, जिसे पौलुस भी कहा जाता है, का वर्णन आता हैं। शुरू में पौलुस को लगता था कि प्रभु येशु का मार्ग पूरी तरह से गलत है और उसने प्रभु येशु के शिष्य को जेल में डलवा दिया यहाँ तक कि मरवा भी दिया। लेकिन एक दर्शन में प्रभु येशु के साथ उनका

अद्‌भुत सामना होने के बाद, वह एक समर्पित शिष्य बन गए और अन्य नए शिष्यों के साथ कई सत्संगों की शुरुआत की।

बहुत मुश्किलों के साथ, राजदूतों और शिष्यों ने प्रभु येशु के शुभ संदेश को फैलाया और परमात्मा ने कई चमत्कारों को दिखा कर उनके संदेशों की पुष्टि की। कुछ सालों के भीतर ही अनेक अलग-अलग समाज के लोगों ने प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की और उनके सत्संग पूरे रोम साम्राज्य में फैलते चले गए।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार भारत देश में भी प्रभु येशु के एक राजदूत थोमस द्वारा (सन् 52 सी.ई. में) यह अद्‌भुत संदेश भारत में फैलाया, लेकिन इस पुस्तक में थोमस का यह उल्लेख शामिल नहीं है।

इस पुस्तक की समाप्ति राजदूत पौलुस के रोम शहर की जेल में बंद होने से होती है। परंतु इससे संदेश रुका नहीं, दुनिया भर में लगातार फैलता चला गया।

अब हम भी जो हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बोलते हैं, परमात्मा की कृपा से प्रभु येशु के शिष्यों और राजदूतों के साथ मिलकर इस अद्‌भुत मार्ग का हिस्सा बन गए हैं।

प्रार्थना - “हे परमात्मा, शिष्य लूकस को मुक्तिदाता येशु के दूतों द्वारा किए गए अद्‌भुत कार्यों के बारे में लिखने की प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। यह आपकी कृपा है कि हम भी आपकी पवित्र आत्मा प्राप्त कर सकते हैं, आपके सत्संग का हिस्सा बन सकते हैं और आपके शुभ संदेश को पूरी दुनिया में फैला सकते हैं।”

. . . ▪ . . .

1

प्रभु येशु के अंतिम 40 दिनों के उपदेश

[1-2] आदरणीय थिओफिलस, अपनी पहली पुस्तक में मैंने उन सभी चीज़ों के बारे में लिखा था जो प्रभु येशु ने अपने जीवन में की थीं और सीखाई थीं जब तक उनको परमस्वर्ग में न उठा लिया गया। लेकिन उनके

परमस्वर्ग में उठाए जाने से पहले, उन्होंने परमात्मा की पवित्र आत्मा की
सहायता से उनके चुने हुए राजदूतों को आदेश दिए थे। [3]प्रभु येशु ने क्रूस
पर दर्दनाक मृत्यु के बाद अनेक सबूतों के द्वारा अपने राजदूतों के सामने
प्रमाणित किया कि वह ज़िन्दा है। वह स्वयं चालीस दिन तक उन्हें दर्शन
देते और परमात्मा के साम्राज्य के बारे में सिखाते रहे।
[4]जिस समय प्रभु येशु राजदूतों के साथ थे, उन्होंने यह आदेश दिया,
"यरूशलम शहर से बाहर न जाना, परंतु मेरे पिता परमात्मा की उस
प्रतिज्ञा के पूरा होने का इंतज़ार करना, जिसकी चर्चा तुमने मुझसे सुनी
है। [5]योहन ने तो पानी में समर्पण-स्नान दिया, परंतु थोड़े ही दिन बाद
तुम परमात्मा की पवित्र आत्मा का स्नान पाओगे।"
[6]जब वे इकट्ठा हुए तब उनके राजदूतों ने प्रभु येशु से पूछा, "प्रभु,
क्या आप इज़राएल का राज्य इसी समय फिर से स्थापित करेंगे?"
[7]प्रभु येशु ने कहा, "यह तुम्हारा काम नहीं है कि तुम उन तय समय
या तारीखों को जानो जिन्हें मेरे पिता परमात्मा ने अपने अधिकार में
रखा है। [8]परंतु जब पवित्र आत्मा तुम पर आए तब तुम शक्ति प्राप्त
करोगे और यरूशलम शहर में, सारे यहूदिया प्रदेश और समेरिया प्रदेश
में, और दुनिया के अंतिम छोर तक मेरे गवाह होगे।"
[9]इतना कहने के बाद प्रभु येशु अपने राजदूतों के देखते-देखते आकाश में
उठा लिए गए और बादलों के कारण वे उन्हें नहीं देख पाए। [10]जब वे आँखें
गड़ाए हुए प्रभु येशु को आकाश में जाते हुए देख रहे थे, तब एकाएक
चमकदार कपड़े पहने हुए दो स्वर्गदूत* उनके पास आ खड़े हुए। [11]वे उनसे
बोले, "गलील प्रदेश के पुरुषो, तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख
रहे हो? यही येशु, जो तुम्हारे पास से परमस्वर्ग में उठा लिए गए हैं, इसी
प्रकार वापस लौटेंगे, जैसे तुमने उनको आकाश में जाते हुए देखा है।"

बारहवें राजदूत की नियुक्ति

[12]तब प्रभु येशु के राजदूत जैतून नामक पहाड़ी से यरूशलम लौट
गए। यह रास्ता लगभग एक किलोमीटर दूर है। [13]वे शहर में पहुँचे और

---

* **1:10** *दो स्वर्गदूत* - या, "दो पुरुष।" यहूदी परंपरा में सफेद कपड़े पहने पुरुष आमतौर पर स्वर्गदूत होते हैं।

जहाँ वे ठहरे हुए थे वहाँ ऊपर के कमरे में इकट्ठा हुए। वहाँ पतरस,
योहन, याकोब, अंदरियास, फिलिपस, थोमस, बरतोलोमै, मत्तियाह,
हलफियस का पुत्र याकोब, शिमोन जो "देशभक्त" कहलाता है, और
याकोब का पुत्र यहूदा मोजूद थे। 14ये सब एक मन होकर प्रार्थना में
लगे रहे। उनके साथ कई महिलाएँ और प्रभु येशु की माता मरियम और
उनके भाई* भी प्रार्थना में शामिल थे।
15इन्हीं दिनों पतरस ने लगभग एक सौ बीस भक्त भाइयों और
बहनों के बीच खड़े होकर कहा, 16"भक्त भाइयो, यह ज़रूरी था
कि परमात्मा-ग्रंथ की भविष्यवाणी पूरी हो जो पवित्र आत्मा ने राजा
दाविद से यहूदा इस्करियोत के विषय में की थी। यह वही यहूदा
है जिसने प्रभु येशु को गिरफ्तर करवाने वालों की सहायता की थी।
17उसकी गिनती हम बारह राजदूतों में होती थी और वह प्रभु येशु द्वारा
दिए गए काम में हमारा साथी था।" 18(यहूदा ने इस अधर्म के पैसे से
जो ज़मीन खरीदा था, उसी ज़मीन में वह सिर के बल ऐसा गिरा कि
उसका पेट फट गया और उसकी आँतें बाहर निकल गई। 19यरूशलम
के सब निवासी यह जान गए। इस कारण उन्होंने अपनी भाषा में उस
ज़मीन का नाम "हकलदमा," अर्थात् "खूनी ज़मीन" रखा है।)*
20पतरस ने आगे कहा, "भजन शास्त्र में यह भी लिखा है,

'उसका निवास स्थान उजड़ जाए,
उसमें बसने वाला कोई न बचे' और
'उसका पद कोई दूसरा व्यक्ति ले ले।'

21-22"इसलिए यह ज़रूरी है कि एक ऐसे व्यक्ति को चुना जाए जो प्रभु
येशु के मरे हुओं में से जीवित होने का गवाह हो और वह उन व्यक्तियों में
से हो जो हमेशा हमारे साथ रहा। 'हमेशा' अर्थात् योहन द्वारा प्रभु येशु को
समर्पण-स्नान देने से लेकर उनके परमस्वर्ग में उठाए जाने के दिन तक।"
23इसलिए प्रभु येशु के राजदूतों ने दो व्यक्तियों को खड़ा किया, एक
योसफ बरसबास जो यूस्तुस भी कहलाता था, और दूसरा मत्तियस। 24तब

---

* **1:14** *माता मरियम और उनके भाई* - यहाँ पर प्रभु येशु के परिवार को भी सत्संग में भाग लेते हुए दिखाया गया है। प्रभु येशु के भाइयों में से एक "याकोब" जो बाद में यरूशलम के परमात्मा-सत्संग के मुख्य बने। * **1:19** पद 18-19 लेखक लूकस द्वारा दी गई टिप्पणियाँ हैं, न कि पतरस के भाषण का हिस्सा। **1:20** भजन शास्त्र 109:8

उन्होंने प्रार्थना की, “हे अंतर्यामी प्रभु, हम पर यह प्रकट करें कि इन दोनों
में से आपने किसे चुना है 25जो यहूदा का स्थान+ ले सके और राजदूत
का कार्य करे। क्योंकि यहूदा ने आपका काम छोड़ दिया, वह उस स्थान
को चला गया जहाँ उसे उसके कर्मों का फल मिल गया।” 26तब उन्होंने
चुनने के लिए दोनों के नाम की पर्ची डाली। वे समझ गए कि परमात्मा ने
मत्तियस को चुना है, और वह ग्यारह राजदूतों में शामिल किया गया।

2

परमात्मा की पवित्र आत्मा का अवतरण

1उस समय जब पेंतेकोस्ट-त्यौहार का दिन* आया, प्रभु येशु के शिष्य
एक घर में इकट्ठा थे। 2तभी अचानक आकाश से तेज़ आँधी जैसी आवाज़
हुई और उस आवाज़ से सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज उठा। 3उनके सामने
आग की ऐसी लपटें प्रकट हुईं जिनका आकार जीभ के समान था, और
वे विभाजित होकर उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। 4वे सब परमात्मा की
पवित्र आत्मा से भर गए और पवित्र आत्मा ने उन्हें अलग-अलग भाषाओं
में बोलने की शक्ति दी जो उन्होंने कभी नहीं सीखी थीं।

5उस समय विश्व के हर एक देश से आए धार्मिक यहूदी लोग
यरूशलम शहर में ठहरे हुए थे। 6जब आँधी और भाषाओं का शोर
हुआ तो वहाँ भीड़ लग गई। लोग हैरान रह गए, क्योंकि हर एक
व्यक्ति ने उनको अपनी ही भाषा में बोलते सुना। 7वे सब हैरान होकर
कहने लगे, “देखो, ये जो बोल रहे हैं, क्या ये सब गलील-निवासी
नहीं हैं? 8तो फिर हममें से हर एक व्यक्ति इन्हें हमारी अपनी-अपनी
मातृभाषा में * बोलते, कैसे सुन रहा है? 9हम पारथी,* मेदे, और एलम

---

* **2:1** *पेंतेकोस्ट-त्यौहार का दिन* - पेंतेकोस्ट एक यहूदी फसल का त्यौहार है जो मुक्ति-त्यौहार के खत्म होने के पचासवें दिन बाद मनाया जाता है। * **2:8** *अपनी-अपनी मातृभाषा में* - ये लोग यहूदी थे जो कई सालों से दुनिया के दूसरे देशों में रह रहे थे और यरूशलम में मुक्ति और पेंतेकोस्ट-त्यौहार के लिए आते थे। वे कम-से-कम दो भाषाएँ बोलना जानते थे, इज़राएल की यहूदी भाषा (स्थानीय शिष्यों की तरह), और साथ ही उस देश की भाषा भी जहाँ वे रह रहे थे। * **2:9** *पारथी* - उस समय दो पारथी साम्राज्य थे, एक पारथी और दूसरा इंडो-पारथी (ग्रंथ के पीछे “पेंतेकोस्ट त्यौहार” का नक्शा देखें)। इंडो-पारथियों की राजधानी तक्षशिला थी जो अब पाकिस्तान के पंजाब में है। संभवतः पेंतेकोस्ट-त्यौहार के समय जो यहूदी इंडो-पारथी इलाके में रहते थे, कुछ वहाँ उपस्थित थे। लगभग 15 साल बाद (सन् सी.ई. 46) प्रभु येशु के एक राजदूत थोमस राजा गोंदाफरेस चतुर्थ से मिलने इंडो-पारथी साम्राज्य में गए और उन्होंने वहाँ प्रभु येशु के शुभ संदेश का प्रचार किया।

देशों के लोग हैं। हम मेसोपोतामिया क्षेत्र तथा यहूदिया, कपदोकिया,
पोंतुस, और आसिया प्रदेशों के रहने वाले हैं। 10-11हम फिरीगिया और
पंफिलिया क्षेत्रों और इजिप्ट देश के निवासी हैं तथा लीबिया देश में
साइरेन शहर के निवासी हैं। हम रोम शहर से आए प्रवासी, जन्म से
यहूदी और यहूदी धर्म अपनाने वाले हैं, और क्रेते द्वीप तथा अरब देश
के रहने वाले हैं। हम सब इन स्थानीय निवासियों से अपनी-अपनी
भाषा में परमात्मा के महान कार्यों के बारे में सुन रहे हैं।"
12ये सब हैरान रह गए और घबराकर एक-दूसरे से कहने लगे, "यह
क्या हो रहा है?"
13परंतु दूसरे हँसी उड़ाते हुए कह रहे थे, "ये तो शराब पीकर मस्त हो
रहे हैं।"

पतरस का भाषण

14तब पतरस प्रभु येशु के ग्यारह राजदूतों के साथ खड़े हुए और लोगों
को ऊँची आवाज़ में इस प्रकार कहने लगे, "मेरे यहूदी भाइयो और
सब यरूशलम निवासियो, मेरी बातों को ध्यान से सुनो। 15यह जान
लो कि ये लोग नशे में नहीं हैं जैसा तुम समझ रहे हो, क्योंकि अभी
तो सुबह के नौ बजे हैं। 16-17यहाँ पर जो घटना हो रही है परमात्मा के
प्रवक्ता योएल ने बहुत साल पहले ही इसकी भविष्यवाणी कर दी थी,

'परमात्मा कहते हैं, "संसार के अंतिम समय में
मैं अपनी पवित्र आत्मा सब लोगों को दूँगा।
तब तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ
मेरे दिव्य संदेशों को लोगों तक पहुँचाएँगे,
तुम्हारे युवक दिव्य दर्शन पाएँगे
और तुम्हारे बुज़ुर्ग दिव्य स्वप्न देखेंगे।
18मैं अपने सेवक-सेविकाओं को भी
उन दिनों में अपनी पवित्र आत्मा दूँगा
और वे मेरे दिव्य संदेशों को लोगों तक पहुँचाएँगे।
19मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत कार्य
और नीचे पृथ्वी पर चमत्कार करूँगा
अर्थात् ख़ून, अग्नि और धुएँ के बादल।"'

20 'प्रभु परमात्मा का महान और तेज से भरा दिन आने से पहले
सूर्य अंधकारमय और चंद्रमा खून समान लाल हो जाएगा।
21 तब जो प्रभु को पुकारेगा, मुक्ति पाएगा।'"
22 प्रभु येशु के राजदूत पतरस ने आगे कहा, "इज़राएल के भाइयो, नासरत-निवासी येशु के बारे में यह बात सुनो। परमात्मा ने तुम्हारे बीच प्रभु येशु के द्वारा अद्‌भुत चमत्कारों और चिन्हों को दिखा कर पुष्टि की है कि उन्हें परमात्मा ने भेजा है। तुम सब यह बात जानते ही हो। 23 परमात्मा की निर्धारित योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार प्रभु येशु को तुम्हारे हाथ सौंप दिया गया और तुमने उन्हें क्रूस पर मृत्यु-दंड के लिए अधर्मी लोगों के हाथों में सौंप दिया। 24 परंतु परमात्मा ने उनको मौत की पीड़ा से आज़ाद कर ज़िन्दा कर दिया। यह असंभव था कि मृत्यु उन्हें अपने वश में रख सके। 25 राजा दाविद उनके बारे में यह कहते हैं,

'मैं, प्रभु परमात्मा को हमेशा अपने सामने देखता रहा।
क्योंकि वह मेरी दाईं ओर हैं
इसलिए मैं उन लोगों से नहीं डरूँगा
जो मुझे नुकसान पहुँचाना चाहते हैं।
26 इस कारण मेरा मन खुश होगा
और मैं खुशी से भरकर आपका गुणगान करूँगा।
अब मेरा शरीर इस आशा में ज़िन्दा रहेगा
27 कि आप मुझे मृत्युलोक में नहीं रहने देंगे
और न ही अपने पवित्र भक्त के शव को सड़ने देंगे।
28 आपने मुझे जीवन का मार्ग दिखाया है
और आप मुझे पूरी खुशी देंगे
क्योंकि आप मेरे साथ होंगे।'

29 "भाइयो, मैं तुमसे हमारे पूर्वज राजा दाविद के बारे में बिना किसी शक के कह सकता हूँ। वह मर गए, शव-गुफा में रखे गए और उनकी शव-गुफा आज तक वहीं है। 30 लेकिन राजा दाविद परमात्मा के प्रवक्ता थे और इस कारण वह जानते थे कि परमात्मा ने उससे शपथ ली कि वह उसके वंश में से एक मनुष्य को उसके सिंहासन पर बैठाएँगे। 31 राजा

2:21 योएल 2:28-32 **2:28** भजन शास्त्र 16:8-11

दाविद जानते थे कि ऐसा होगा और उन्होंने हमें बताया कि मुक्तिदाता
मरकर फिर ज़िन्दा हो जाएँगे। राजा दाविद ने कहा कि परमात्मा उनको
मृत्युलोक में नहीं रहने देंगे और न उनके शव को सड़ने देंगे।
32"यह भविष्यवाणी मुक्तिदाता येशु के बारे में है जिन्हें परमात्मा ने
मरे हुओं में से ज़िन्दा कर दिया और हम सब इस सच्चाई के गवाह हैं।
33"अब उन्हें सम्मान के सबसे ऊँचे पद परमात्मा के दाएँ हाथ पर
बैठाया गया और पिता परमात्मा से पवित्र आत्मा प्राप्त करने की
प्रतिज्ञा के बाद, प्रभु येशु ने यह पवित्र आत्मा हम को दे दिया है जिसे
अब आप स्वयं सुन और देख रहे हैं।
34-35"क्योंकि राजा दाविद परमस्वर्ग में परमात्मा के साथ बैठने के
लिए नहीं चढ़े, परंतु राजा दाविद ने स्वयं कहा है,

'प्रभु परमात्मा ने मेरे प्रभु से कहा,
"जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को
तुम्हारे पाँव तले न ले आऊँ,
तुम मेरे सिंहासन के दाईं ओर
बैठकर शासन करो।"'

36"इसलिए सब इज़राएल के लोगो, यह अच्छी तरह से जान लो कि
जिन येशु को तुमने क्रूस पर चढ़ाया, उन्हीं को परमात्मा ने प्रभु और
मुक्तिदाता दोनों बना दिया।"
37यह सुनकर लोगों के मन में बहुत दुख हुआ। वे पतरस और प्रभु येशु
के दूसरे राजदूतों से पूछने लगे, "भाइयो, हम क्या करें?"
38पतरस ने उनसे कहा, "अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करो, और
तुममें से हर एक व्यक्ति अपने बुरे कर्मों के खाते को मिटाने के लिए
मुक्तिदाता येशु के नाम से समर्पण-स्नान ले, तो उसे पवित्र आत्मा का
वरदान मिलेगा। 39यह वादा तुम्हारे और तुम्हारी संतान के लिए है। यह
उन सभी के लिए है जिन्हें हमारे प्रभु परमात्मा अपना बनाने के लिए
चुनेंगे, चाहे वे कहीं भी रहते हो।" 40पतरस ने और भी बहुत सी बातें
बताते हुए उनसे कहा, "परमात्मा से विनती करो कि वह तुम्हें इस दुष्ट
पीढ़ी से बचाएँ।"

2:34-35 भजन शास्त्र 110:1

41जिन लोगों ने पतरस का उपदेश स्वीकार किया, उन्होंने
समर्पण-स्नान लिया और उस दिन लगभग तीन हज़ार व्यक्ति शिष्यों के
समूह में शामिल हो गए।

आरंभिक सत्संग में शिष्यों का जीवन

42इन सभी शिष्यों ने अपने मन प्रभु येशु के राजदूतों से शिक्षा लेने
और एक दूसरे से संगति करने में लगा दिए। वे प्रभु की स्मृति भोज
और प्रार्थना में भी लीन रहते थे।
43सब के मन परमात्मा के प्रति आदर-सम्मान से भर गए क्योंकि
राजदूतों द्वारा बहुत अद्‌भुत काम और परमात्मा की शक्ति के चिन्ह
दिखाए जा रहे थे। 44जिन्होंने प्रभु येशु पर आस्था रखी थी, वे सब
मिल-जुलकर रहते थे और उनकी सब चीजें साझे में थीं। 45वे अपनी
संपत्ति बेच देते और उससे प्राप्त पैसे को लोगों की ज़रूरत के अनुसार
उनमें बाँट देते थे। 46हर रोज़ वे परमात्मा के मंदिर के आँगन में एक
मन से इकट्ठा होते, और एक दूसरे के घर जाकर खुशी और उदारता
के साथ एक दूसरे के साथ मिल-बाँट कर खाते। 47वे परमात्मा का
गुणगान करते रहते थे और सारे लोग उनसे खुश थे। प्रभु येशु हर दिन
मुक्ति पाए लोगों को शिष्यों के समूह में शामिल करते जा रहे थे।

3

लँगड़े भिखारी को स्वस्थ करना

1एक दिन प्रभु येशु के राजदूत पतरस और योहन प्रार्थना के लिए
निर्धारित समय, दोपहर के तीन बजे, परमात्मा के मंदिर में जा रहे थे।
2उसी समय एक मनुष्य जो जन्म से लंगड़ा था, लोगों ने उसे ले जाकर
मंदिर के द्वार के नज़दीक छोड़ दिया जिसे "सुंदर द्वार" कहा जाता था।
हर दिन उस लंगड़े व्यक्ति को लोग वहाँ बैठा देते थे ताकि वह मंदिर
के अंदर जाने वाले लोगों से भीख माँग सके। 3जब लँगड़े भिखारी ने
पतरस और योहन को देखा कि वे मंदिर में आ रहे हैं, वह उनसे भीख
माँगने लगा।
4पतरस और योहन ने उसे गौर से देखा और कहा, "हमारी ओर
देखो।" 5वह उनसे कुछ पाने की आशा से उनकी ओर ताकने लगा।

[6]पतरस ने कहा, “मेरे पास सोना, चाँदी तो है नहीं, परंतु जो कुछ मेरे
पास है, वह तुम्हें देता हूँ। नासरत-निवासी मुक्तिदाता येशु के नाम और
अधिकार से कहता हूँ, खड़े हो जाओ और चलने लगो!”
[7]यह कहकर पतरस ने उसका दायाँ हाथ पकड़कर उसको उठाया।
तुरंत ही उसके पैरों और टखनों में जान आ गई। [8]वह उछलकर खड़ा
हो गया और चलने-फिरने लगा। वह उछलता-कूदता परमात्मा का
गुणगान करता हुआ, पतरस और योहन के साथ मंदिर के अंदर चला
गया।
[9]सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और परमात्मा का गुणगान करते
देखकर [10]उसे पहचान लिया कि यह तो वही है जो मंदिर के सुंदर द्वार
पर बैठकर भीख माँगा करता था। उसके साथ जो चमत्कार हुआ था,
उसको देखकर सब लोग अचंभित और हैरान रह गए।
[11]अचानक, हैरान भीड़ राजा शलोमो के बरामदे में उस ओर दौड़ी
जहाँ वह भिखारी योहन और पतरस के चरणों से लिपटा हुआ था।
[12]यह देखकर पतरस भीड़ से बोला, “इज़राएल के भाइयो, इस पर
क्यों आश्चर्य करते हो, और क्यों हमारी ओर हैरानी से देखते हो मानो
हमने अपनी भक्ति और शक्ति से इसे चलने-फिरने योग्य बना दिया
है? [13]जिस परमात्मा की अब्राहम, इसहाक, याकोब और हमारे अन्य
पूर्वजों ने भक्ति की थी, उन्हीं ने अपने सेवक प्रभु येशु को सम्मान दिया
है, पर तुमने उन्हें राज्यपाल पिलातुस के हाथ पकड़वा दिया। जबकि
पिलातुस ने उन्हें छोड़ देने का फैसला किया तब भी तुमने पिलातुस के
सामने बार-बार कहा कि तुम नहीं चाहते कि उसे छोड़ा जाए।
[14]“तुमने उस पवित्र और बेगुनाह व्यक्ति को ठुकरा दिया और एक
हत्यारे को छोड़ने की माँग करी। [15]तुमने उनकी हत्या कर दी जो मोक्ष
दाता हैं, पर परमात्मा ने उन्हें उनकी मौत होने के बाद भी ज़िन्दा कर
दिया। और इसके हम गवाह हैं! [16]मुक्तिदाता येशु में आस्था रखने के
द्वारा यह व्यक्ति स्वस्थ हो गया। तुम इस मनुष्य को जानते हो और
यह भी जानते हो कि पहले यह लँगड़ा था, परंतु अब तुम्हारी आँखों के
सामने मुक्तिदाता येशु पर आस्था रखने के द्वारा यह ठीक हो गया है।
[17]“भाइयो, मैं जानता हूँ कि तुमने और तुम्हारे शासकों ने भी यह
काम अज्ञानता में किया। [18]परमात्मा ने अपने सब प्रवक्ताओं के द्वारा

पहले ही बता दिया था कि उनका चुना हुआ मुक्तिदाता दुख उठाएगा।
अब परमात्मा ने उस वादे को पूरा किया है। [19]इसलिए अपने बुरे कर्मों
से पश्चाताप करो और परमात्मा के पास लौट आओ जिससे तुम्हारे
बुरे कर्मों का खाता मिट जाएँ [20]ताकि प्रभु परमात्मा तुम्हें सुख-चैन से
भरे दिन प्रदान करें और वह तुम्हारे लिए प्रभु येशु को, अर्थात् चुने हुए
मुक्तिदाता को फिर से भेजेंगे। [21]यह ज़रूरी है कि प्रभु येशु परम-लोक
में ही रहें जब तक परमात्मा का सब चीज़ों को ठीक करने का समय न
आए, जैसे कि बहुत समय पहले उनके पवित्र परमात्मा के प्रवक्ताओं
ने भविष्यवाणी की थी।

[22]"परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने कहा, 'जैसे तुम्हारे प्रभु परमात्मा
ने मुझे अपना प्रवक्ता नियुक्त किया है वैसे ही वह तुम्हारे भाइयों में
से तुम्हारे लिए एक प्रवक्ता नियुक्त करेगें। वह जो कुछ तुमसे कहे,
उसका पालन करना। [23]जो व्यक्ति उस परमात्मा के प्रवक्ता की बातों
पर ध्यान नहीं देगा, तुम्हारे बीच से नाश कर दिया जाएगा।'

[24]"शमुएल से लेकर उनके बाद आने वालों तक सभी परमात्मा
के प्रवक्ताओं ने इन दिनों की घोषणा की है। [25]तुम परमात्मा के
प्रवक्ताओं के वंशज हो और उस अनुबंध के वारिस हो जिसे परमात्मा
ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ कुलपिता अब्राहम से यह कहकर किया
था, 'तुम्हारे वंश द्वारा दुनिया के हर समाज के लोग आशीर्वाद पाएँगे।'
[26]परमात्मा ने अपने सेवक येशु को ज़िन्दा कर पहले तुम्हारे पास भेजा
कि तुम्हें आशीर्वाद दें जिससे तुम सब लोग अपने बुरे कर्मों से मन
फिराओ।"

4

यहूदी धर्म-महासभा के सामने पतरस और योहन

[1]जब प्रभु येशु के राजदूत पतरस और योहन लोगों से बोल ही रहे थे
तब पुरोहित, मंदिर के सिपाहियों का नायक और सदूकी पंथ के लोग
उनके पास आए। [2]ये लोग गुस्सा थे क्योंकि पतरस और योहन लोगों
को सिखा रहे थे कि मरे हुए लोग ज़िन्दा हो जाएँगे, जैसे कि प्रभु येशु

3:23 उपदेश 18:15-19 **3:25** उत्पत्ति 12:3

मर कर ज़िन्दा हो गए थे। 3उन्होंने दोनों राजदूतों को गिरफ्तार किया
और दूसरे दिन तक के लिए जेल में डाल दिया क्योंकि शाम हो गई थी।
4परंतु जो लोग उनके संदेश को सुन रहे थे, उनमें से बहुत से लोगों ने
उस पर विश्वास किया और इस प्रकार अब भक्तों की संख्या लगभग
5,000 पुरुषों की हो गयी, जिसमें महिलाएँ और बच्चे शामिल नहीं हैं।
5दूसरे दिन, यहूदी उच्चाधिकारी, समाज के बड़े और धर्मगुरु, यरूशलम
में इकट्ठा हुए। 6वहाँ महापुरोहित हनास, काइफस, सिकंदर, योहन और
महापुरोहित के परिवार के अन्य सदस्य भी थे। 7उन्होंने पतरस और योहन
को धर्म-महासभा के बीच में खड़ा किया और उनसे पूछा, "तुम लोगों को
कहाँ से यह शक्ति मिली है या किस नाम से तुमने यह काम किया?"
8इस पर पतरस ने परमात्मा की पवित्र आत्मा से भरकर उनसे कहा,
"आदरणीय शासकों और समाज के बड़ो, 9यदि आज हमारी जाँच
इसलिए की जा रही है कि हमने एक लंगड़े व्यक्ति को ठीक करके
उसका भला किया है, 10तो आप सब और इज़राएल के सारे लोग यह
जान ले कि नासरत-निवासी मुक्तिदाता येशु के नाम से यह मनुष्य अपनी
दोनों टांगों पर खड़ा है। उन्हीं मुक्तिदाता येशु को आप लोगों ने क्रूस पर
चढ़ाकर मार डाला था किंतु परमात्मा ने उनकी मृत्यु के बाद उन्हें फिर से
ज़िन्दा कर दिया। 11परमात्मा-ग्रंथ के अनुसार यही वह येशु हैं

'जिस पत्थर को तुम भवन-बनाने वालों ने बेकार समझा
वही सबसे महत्वपूर्ण पत्थर* बन गया।'

12"किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा मुक्ति नहीं, क्योंकि पूरी दुनिया में लोगों को
परमात्मा ने कोई दूसरा नाम दिया ही नहीं जिसके द्वारा मुक्ति मिल सके।"
13धर्म-महासभा के लोग पतरस और योहन की हिम्मत देखकर हैरान
रह गए, क्योंकि वे जानते थे कि वे साधारण मनुष्य हैं और इनके पास
कोई धार्मिक शिक्षा भी नहीं है। वे भी समझ गए कि ये प्रभु येशु के
साथी रहे हैं। 14जो कुछ हुआ था, उससे वे इनकार नहीं कर सकते थे
क्योंकि जो आदमी स्वस्थ हुआ था, वह वहाँ पतरस और योहन के
साथ खड़ा था। 15तो उन्होंने उन दोनों को धर्म-महासभा से बाहर जाने
का आदेश दिया। उसके बाद वे आपस में विचार करने लगे,

---

* **4:11** *महत्वपूर्ण पत्थर* - या, "कोने का पत्थर" **4:11** भजन शास्त्र 118:22

16“हम इन मनुष्यों का क्या करें? इनके द्वारा एक अद्‌भुत काम हुआ है।
यह सब यरूशलम निवासियों को मालूम हो चुका है और हम इससे इंकार
नहीं कर सकते। 17अब यह बात लोगों में और नहीं फैलनी चाहिए, इसलिए
हम इन्हें धमकाएँ कि ये येशु का नाम लेकर किसी मनुष्य से चर्चा न करें।”
18तब उन्होंने पतरस और योहन को फिर बुलाकर यह चेतावनी दी
कि वे येशु का नाम लेकर न कोई चर्चा करें और न ही शिक्षा दें।
19इस पर पतरस और योहन ने उन से कहा, “आप ही न्याय कीजिए।
परमात्मा की नज़र में क्या यह सही होगा कि हम परमात्मा की बात से
बढ़कर आपकी बात मानें? 20यह तो हमसे नहीं हो सकता कि जो कुछ
हमने देखा और सुना है, उसे न कहें।”
21-22धर्मगुरुओं को पतरस और योहन को दण्ड देने का कोई कारण नहीं
मिला। इसलिए उन्होंने उन्हें धमकी दी और जाने दिया। वह व्यक्ति जो
इस चमत्कार से स्वस्थ हुआ था, वह चालीस साल से ज़्यादा समय तक
लंगड़ा था। चमत्कार देखने के बाद, हर कोई परमात्मा का गुणगान कर
रहा था।

पतरस और योहन का अपने साथियों के पास लौटना

23वहाँ से छूटकर पतरस और योहन अपने भक्त भाइयों और बहनों
के पास आए और जो कुछ महापुरोहितों और बड़ों ने उनसे कहा था,
उन्हें बता दिया। 24यह सुनकर वे एक साथ ऊँची आवाज़ में परमात्मा
का गुणगान करने लगे, “हे प्रभु, आप ही आकाश, पृथ्वी और समुद्र
तथा इनमें जो कुछ है, सबके बनाने वाले हैं। 25आपने पवित्र आत्मा के
द्वारा अपने सेवक हमारे पूर्वज राजा दाविद से कहलवाया था,

‘देशों के लोग इतने क्रोधित क्यों हैं?
और समाज के लोग व्यर्थ की योजनाएँ क्यों बना रहे हैं?
26इस पृथ्वी के राजा युद्ध के लिए खड़े हैं
और उनके नेता एक साथ मिलकर
प्रभु परमात्मा और उनके मुक्तिदाता के विरुद्ध
योजनाएँ बना रहे हैं।’

4:26 भजन शास्त्र 2:1-2

27“हे प्रभु, वास्तव में यह घटना इसी शहर में घटी है। राजा हेरोदेस,
राज्यपाल पोंतियुस पिलातुस, इज़राएल के लोग और दूसरे देश के
लोग आपके द्वारा नियुक्त* पवित्र सेवक मुक्तिदाता येशु के विरुद्ध,
एका कर लिया है 28ताकि उसे पूरा करें जिसको आपकी शक्ति और
योजना के अनुसार पहले से ही निर्धारित किया गया था।
29“हे प्रभु, अब उनकी धमकियों को देखे और अपने सेवकों को
शक्ति दें कि वे आपका संदेश पूरे साहस से सुनाएँ। 30स्वस्थ करने के
लिए अपना हाथ बढाएँ जिससे आपके पवित्र सेवक प्रभु येशु के नाम
के द्वारा अद्‌भुत काम और आपकी शक्ति के चिन्ह दिखाएँ।”
31जब उन्होंने यह प्रार्थना समाप्त की, वह स्थान जहाँ वे इकट्ठा हुए
थे, हिल गया और वे पवित्र आत्मा से भरकर परमात्मा का संदेश पूरे
साहस से सुनाने लगे।
32आस्था रखने वालों का यह समूह एक मन और एक प्राण था।
उनमें से कोई भी व्यक्ति अपनी संपत्ति को अपना नहीं समझता था,
परंतु उनकी सब चीज़ें साझे की थीं। 33राजदूत प्रभावशाली तरीके से
प्रभु येशु के मरने के बाद उनके ज़िन्दा होने के बारे में बताते थे। उन
सब भक्तों पर परमात्मा की बड़ी कृपा थी। 34उनकी हर ज़रूरत पूरी
हो जाती थी, क्योंकि जिनके पास ज़मीन या घर थे, वे उनको बेचकर
पैसे लाते 35और उसे राजदूतों के चरणों में रख देते थे और फिर हर एक
व्यक्ति को उसकी ज़रूरत के अनुसार बाँट दिया जाता था।
36उदाहरण के लिए, साइप्रस द्वीप निवासी योसफ नामक एक लेवी
वंशी था। राजदूतों ने उसको बरनबास नाम दिया जिसका अर्थ है,
“जोश भरने वाला।” 37बरनबास के पास कुछ ज़मीन थी जिसे उसने
बेच कर पैसे लाकर राजदूतों के चरणों में रख दिए।

5

झूठ छुपाने का नतीजा

1हनन्याह नामक एक पुरुष और उसकी पत्नी सफ़ीरा ने भी कुछ
ज़मीन बेची। 2हनन्याह ने अपनी पत्नी की सहमति से ज़मीन बेचकर

---

* **4:27** *नियुक्त* - या, “अभिषिक्त”

मिले पैसे का कुछ हिस्सा अपने पास रख लिया और बाकी हिस्सा
लाकर राजदूतों के चरणों में रख दिया।
3इस पर पतरस ने कहा, “हनन्याह, शैतान ने तुम्हारे मन में यह बात
क्यों डाली कि तुम परमात्मा की पवित्र आत्मा से झूठ बोलो और
अपनी बेची गई ज़मीन से मिले पैसों का कुछ हिस्सा अपने पास रख
लो? 4क्या बेचे जाने से पहले वह ज़मीन तुम्हारी नहीं थी? और उसके
बिक जाने से मिले पैसों पर तुम्हारा अधिकार न था? तुमने इस विचार
को अपने मन में क्यों जगह दी? तुमने मनुष्य से नहीं, लेकिन परमात्मा
से झूठ बोला।”
5ये शब्द सुनते ही हनन्याह ज़मीन पर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो
गई, और सब सुनने वालों पर बड़ा डर छा गया। 6कुछ जवान लड़कों
ने आकर उसको कफन में लपेटा और शहर के बाहर ले जाकर उसका
अंतिम संसार कर दिया।
7लगभग तीन घंटे बाद उसकी पत्नी, जो इस घटना से अनजान थी,
वहाँ आई। 8पतरस ने उससे पूछा, “मुझे बताओ, क्या तुम दोनों ने वह
ज़मीन इतने में ही बेची थी?”
उसने कहा, “हाँ, इतने में ही।”
9पतरस ने उससे कहा, “तुम दोनों को प्रभु की आत्मा को परखते
हुए डर नहीं लगता? देखो, तुम्हारे पति का अंतिम संस्कार करने वाले
दरवाज़े पर हैं और वे तुम्हें भी ले जाएँगे।”
10वह उसी समय पतरस के चरणों पर गिर पड़ी और वह भी मर गई।
जवान लड़कों ने अंदर आकर उसे मरा हुआ पाया और बाहर ले गए।
उन्होंने उसका अंतिम संस्कार ठीक उसी जगह पर किया जहाँ उसके
पति का हुआ था। 11इससे सारे सत्संगियों पर और जितनों ने भी यह
सुना, उन सब पर बड़ा डर छा गया।

परमात्मा की शक्ति के चिन्ह

12प्रभु येशु के राजदूतों द्वारा लोगों में बहुत-से अद्‌भुत काम और
परमात्मा की शक्ति के चिन्ह देखे जा रहे थे। और उनके सब शिष्य
एक साथ राजा शलोमो के बरामदे में इकट्ठा हुआ करते थे। 13हालाँकि
लोग उनकी तारीफ करते थे, उनके अपने समूह के लोगों के अलावा

कोई और उनकी संगत में आने की हिम्मत नहीं करता था। [14]फिर भी
प्रभु येशु पर आस्था रखने वाले आदमी और औरतों की संख्या पहले
से ज़्यादा बढ़ती जा रही थी। [15]राजदूतों के अद्‌भुत काम देखकर लोग
बीमारों को सड़कों पर लाकर चारपाइयों और चटाइयों पर लिटा देते
थे कि जब पतरस आए तो उनकी छाया ही बीमारों में से किसी पर
पड़ जाए और वह ठीक हो जाएँ। [16]यरूशलम के आसपास के नगरों
में भी बहुत लोग इकट्ठा हो बीमारों और अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित
व्यक्तियों को लाते और वे सब ठीक हो जाते थे।

यहूदी धर्म-महासभा के सामने पेशी

[17]इस पर महापुरोहित और उनके सब साथी जो सदूकी पंथ के थे,
जलन से भर गए और [18]उन्होंने राजदूतों को गिरफ्तार कर स्थानीय जेल
में डाल दिया। [19]परंतु प्रभु परमात्मा के एक स्वर्गदूत ने रात में जेल का
दरवाज़ा खोला और उन्हें बाहर लाकर उनसे कहा, [20]"जाओ, परमात्मा
के मंदिर के आँगन में खड़े होकर लोगों को मोक्ष का संदेश सुनाओ।"
[21]यह सुनकर वे सवेरा होते ही मंदिर के आँगन में चले गए और वहाँ
उपदेश देने लगे जैसे वे अक्सर किया करते थे।

महापुरोहित और उनके साथियों ने यहूदी धर्म-महासभा और
इज़राएल के सब बड़ों को बुलवाया और राजदूतों को जेल से लाने का
आदेश दिया।

[22]लेकिन जब सिपाही जेल में पहुँचे तो राजदूत वहाँ नहीं थे।
सिपाहियों ने लौटकर यह समाचार दिया, [23]"हमने जेल को बड़ी
सावधानी से बंद किया हुआ पाया और पहरेदारों को दरवाज़े पर खड़े
देखा, परंतु जेल का दरवाज़ा खोलने पर अंदर कोई न मिला।"

[24]जब मंदिर के सुरक्षा प्रमुख और प्रधान पुरोहितों ने यह समाचार
सुना तब वे चिंता में पड़ गए और सोचने लगे कि इस घटना का
परिणाम क्या होगा? [25]इतने में किसी ने आकर उन्हें समाचार दिया,
"देखिए, जिन लोगों को आपने जेल में डाला था, वे मंदिर के आँगन में
खड़े होकर लोगों को उपदेश दे रहे हैं।"

[26]तब सुरक्षा प्रमुख कुछ सिपाहियों के साथ वहाँ गया और राजदूतों
को ले आया, परंतु बलपूर्वक नहीं, क्योंकि वे लोगों से डरते थे

कि कहीं लोग उन पर पथराव न कर दें। [27]वे उनको ले आए और
धर्म-महासभा के सामने उनको खड़ा कर दिया। महापुरोहित ने उनसे
पूछा, [28]"क्या हमने तुम्हें कड़ा आदेश नहीं दिया था कि इस नाम से
शिक्षा न देना? पर तुमने सारे यरूशलम के चप्पे-चप्पे पर अपनी शिक्षा
को फैला दिया है और इस व्यक्ति की हत्या का शाप हमारे सिर पर
मढ़ना चाहते हो!"

[29]इस पर पतरस और दूसरे राजदूतों ने उत्तर दिया, "ज़रूरी यह है कि
हम मनुष्यों के बजाय परमात्मा की आज्ञा मानें। [30]जिन प्रभु येशु को
तुम लोगों ने लकड़ी की क्रूस पर कीलों से ठुकवाकर मार डाला था,
उन्हें हमारे पूर्वजों के परमात्मा ने ज़िन्दा कर दिया है। [31]परमात्मा ने
उनको अपनी दाईं ओर शासक और मसीहा के रूप में बैठाया कि वह
इज़राएल के लोगों को अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करने का अवसर
दें कि उनके बुरे कर्मों का खाता मिट सके। [32]हम इन बातों के गवाह हैं
और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमात्मा ने अपनी आज्ञा मानने वालों को
दिया है।"

[33]यह सुनकर धर्म-महासभा के सदस्य गुस्से से भर गए और उनको
मार डालना चाहा, [34]परंतु वहाँ गमालिएल नामक एक फरीसी पंथी था
जो मोशे के नियम और शिक्षा का आचार्य था और सब लोग उसका
आदर करते थे। वह धर्म-महासभा के सामने खड़ा हुआ। तब उसने
राजदूतों को थोड़ी देर के लिए बाहर जाने की आज्ञा दी। [35]इसके बाद
उसने लोगों से कहा, "इज़राएल के पुरुषो, ध्यान से सोचो कि इन
लोगों के साथ क्या करना चाहते हो। [36]कुछ समय पहले नेता थियुदस
ने विद्रोह का झंडा उठाया था। वह कहता था कि मैं भी कुछ हूँ।
लगभग चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए थे, परंतु वह मारा गया
और उसके साथ जो भी लोग थे बिखर गए और आंदोलन का कोई
परिणाम नहीं निकला।

[37]"इसके बाद जनगणना के दिनों में गलील-निवासी यहूदा ने बहुत से
लोगों को विद्रोह के लिए भड़काया। वह भी मारा गया और उसके पीछे
चलने वाले भी बिखर गए।

[38]"इसलिए इस बारे में मेरा तुमसे कहना है कि इन लोगों से दूर ही
रहो और इन्हें छोड़ दो। यदि आंदोलन का यह कार्य मनुष्यों की ओर

से है तो विफल हो जाएगा। [39]परंतु यदि परमात्मा की ओर से है तो
तुम इन्हें रोक नहीं पाओगे। कहीं ऐसा ना हो कि तुम अपने आपको
परमात्मा का विरोधी पाओ।"
धर्म-महासभा ने गमलीएल का यह सुझाव मान लिया और [40]उन्होंने
राजदूतों को बुलाकर कोड़े लगवाए और यह चेतावनी देकर छोड़
दिया कि वे प्रभु येशु के नाम का प्रचार न करें।
[41]राजदूत धर्म-महासभा से इस बात की खुशी मनाते हुए बाहर निकले
कि परमात्मा ने उन्हें यह गौरव दिया कि वे प्रभु येशु के नाम के लिए
अपमानित हुए। [42]वे हर रोज़ मंदिर के आँगन में और घर-घर जाकर
निरंतर शिक्षा देते और इस शुभ संदेश को फैलाते रहे कि येशु ही
मुक्तिदाता हैं।

6

सत्संग के लिए सात सेवादारों का चुना जाना

[1]उन दिनों जब प्रभु येशु के शिष्यों की संख्या बढ़ रही थी, ग्रीक भाषी
शिष्यों ने इब्रानी भाषी* शिष्यों की शिकायत की कि दैनिक लंगर बाँटते
समय उनकी विधवाओं से भेद-भाव किया जाता है।
[2]इस पर प्रभु येशु के बारह राजदूतों ने सारे शिष्यों को बुलाकर कहा,
"यह ठीक नहीं है कि हम परमात्मा का संदेश सुनाना छोड़कर लंगर
की सेवा में लगें। [3]इसलिए भाइयो, अपने में से सात भरोसे लायक ऐसे
पुरुषों को ढूँढ़ निकालो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से भरे हों जिन्हें
हम इस काम पर नियुक्त कर दें। [4]हम अपना समय प्रार्थना में और
परमात्मा के संदेश को लोगों तक पहुँचाने के काम में बिताएँ।"
[5]यह बात सबको अच्छी लगी और उन्होंने स्टैफनस नामक व्यक्ति को
जो आस्था और परमात्मा की पवित्र आत्मा से भरा था और फिलिपस,
प्रोखोरस, नीकानोर, तीमोन, परमिनास और अंताकिया निवासी निकोलस
को जिसने यहूदी धर्म अपना लिया था चुन लिया। [6]उन्हें राजदूतों के सामने
पेश किया गया और राजदूतों ने उन्हें इस काम पर नियुक्त करने के लिए
प्रार्थना की और उनके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

---

* **6:1** *इब्रानी भाषी* - या, "अरामी भाषी"

7परमात्मा का संदेश फैलता गया और शिष्यों की संख्या यरूशलम
शहर में बहुत बढ़ती गई। और उनमें से बहुत-से यहूदी पुरोहित भी प्रभु
मार्ग पर चलने लगे।

स्टैफनस का चेहरा तेज से भर गया

8स्टैफनस परमात्मा की कृपा और उनकी शक्ति से भरकर लोगों में
बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और परमात्मा की शक्ति के चिन्ह दिखाने लगा।
9लेकिन गुलामी मुक्त नामक यहूदी सत्संग भवन के कुछ सदस्य ने
उसका विरोध किया। इन्हीं यहूदियों के साथ जो मूलरूप से साइरेन,
सिकंदरिया, किलिकिया और आसिया प्रदेश के निवासी थे, खड़े होकर
स्टैफनस से वाद-विवाद करने लगे। 10परंतु वे स्टैफनस के सामने टिक
नहीं पाए, क्योंकि वह तो पवित्र आत्मा से बुद्धि प्राप्त कर बोल रहा था।
11तब गुलामी मुक्त सत्संग के लोगों ने कुछ लोगों को स्टैफनस के
विरोध में यह कहने के लिए फुसलाया, "हमने इसे मोशे और परमात्मा
के विरुद्ध बुरी बातें कहते सुना है।" 12इस प्रकार लोगों को, समाज
के बड़ों को और धर्मगुरुओं को उकसाकर ये गुलामी मुक्त सत्संग के
लोग स्टैफनस के पास आए और उसे यहूदी धर्म-महासभा के सामनें ले
गए। 13वहाँ उन्होंने झूठे गवाह खड़े किए जिन्होंने कहा, "यह व्यक्ति
हमेशा हमारे पवित्र मंदिर और मोशे के नियम और शिक्षा के विरुद्ध
बोलता रहता है। 14हमने इसको यह कहते सुना है कि नासरत-निवासी
येशु इस स्थान को नष्ट कर देगा और वह उन प्रथाओं को बदल देगा
जो हमें परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने प्रदान की थीं।"
15धर्म-महासभा में बैठे सदस्य स्टैफनस को गौर से देखने लगे। उस
समय उन्हें स्टैफनस का चेहरा स्वर्गदूत के चेहरे के समान दिखाई दे
रहा था।

7

शिष्य स्टैफनस का अपने बचाव में भाषण

1महापुरोहित ने पूछा, "क्या ये आरोप सच हैं?"
2स्टैफनस ने कहा, "गुरुवर और भाइयो, सुनिए! हमारे कुलपिता
अब्राहम हारान शहर में निवास करने से पहले मेसोपोतामिया क्षेत्र में

थे। तेजस्वी परमात्मा ने उन्हें दर्शन दिया 3और उनसे यह कहा, 'तुम
अपने देश और कुटुम्ब से निकल जाओ और उस देश में चले जाओ जो
मैं तुम्हें दिखाऊँगा।' 4तब अब्राहम खसदी देश से निकलकर हारान में
जा बसे।
"उनके पिता की मृत्यु के बाद परमात्मा उन्हें इस भूमि पर ले आए
जहाँ तुम अब रहते हो। 5यहाँ परमात्मा ने उनको भूमि पर कोई
अधिकार नहीं दिया, यहाँ तक कि पैर रखने को स्थान भी न दिया,
यद्यपि उस समय कुलपिता अब्राहम के कोई पुत्र न था तो भी परमात्मा
ने उनसे यह प्रतिज्ञा की, 'मैं यह देश तुम्हें और तुम्हारे वंश को दे दूँगा।'
6"'परमात्मा ने उनसे यह भी कहा, 'तुम्हारे वंशज पराए देश में पदेशी
बनकर रहेंगे, जहाँ के लोग उन्हें गुलाम बनाएँगे और चार सौ साल तक
उन पर अत्याचार करेंगे।' 7फिर परमात्मा ने कहा, 'जो देश उन्हें गुलाम
बनाएगा उसे मैं दंड दूँगा। इसके बाद वे उस देश से बाहर निकल
आएँगे और इस स्थान पर मेरी भक्ति करेंगे।'
8"'परमात्मा ने अब्राहम से कहा, 'हर एक परिवार में सब बेटों का
यह दिखाने के लिए चीरा-संस्कार किया जाना चाहिए कि तुमने मेरे
साथ एक अनुबंध किया है।' इसलिए जब इसहाक आठ का दिन
हुआ, तो अब्राहम ने उसका चीरा-संस्कार किया। बाद में, इसहाक ने
अपने बेटे याकोब का चीरा-संस्कार किया और याकोब ने अपने बारह
बेटों के साथ भी ऐसा ही किया। ये बारह पुरुष हमारे पूर्वज थे।
9"'तुम जानते हो कि याकोब के बड़े बेटे अपने छोटे भाई योसफ
से जलन रखने लगे और उसे इजिप्ट ले जाने के लिए एक गुलाम
के रूप में बेच दिया। किंतु परमात्मा उसके साथ था 10और वह सब
दुख-तकलीफों से उसको बचाते रहे। परमात्मा ने इजिप्ट के राजा फेरो
के मन में योसफ के प्रति कृपा भर दी और उसको बुद्धि प्रदान की।
फेरो ने योसफ को इजिप्ट का शासक और अपने पूरे राजभवन का
अधिकारी नियुक्त किया।
11"जब सारे इजिप्ट और कनान देशों में अकाल के कारण भयंकर
संकट पड़ा, हमारे पूर्वजों को अन्न की कमी हो गयी। 12जब याकोब ने

7:3 उत्पत्ति 12:1 **7:7** उत्पत्ति 15:13-15

यह सुना कि इजिप्ट में अन्न की कमी नहीं है, उसने हमारे पूर्वजों को
पहली बार वहाँ भेजा। 13इजिप्ट देश की अपनी दूसरी यात्रा में योसफ
ने अपने भाइयों को बता दिया कि वह कौन है। फेरो को भी योसफ के
कुल का पता चल गया।
14"तब योसफ ने अपने पिता याकोब और अपने सारे परिवार अर्थात्
पचहत्तर लोगों को बुलवाया। 15याकोब इजिप्ट को गए। वहीं उनकी
मृत्यु हुई और हमारे पूर्वजों की भी। 16उनकी अस्थियाँ शकेम नगर में
लाई गईं और उस शव रखने वाली गुफा में रखीं गईं जिसे कुलपिता
अब्राहम ने पैसे देकर शकेम निवासी हमोर के वंशजों से खरीद लिया
था।
17"जैसे-जैसे परमात्मा ने अब्राहम से की गई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा
करने का समय निकट आता गया, इजिप्ट में हमारे लोगों की संख्या
बहुत बढ़ गई। 18उस समय इजिप्ट में एक और राजा आया जो योसफ
के बारे में कुछ नहीं जानता था। 19उसने हमारे लोगों के साथ चालाकी
की और हमारे पूर्वजों पर अत्याचार कर उन्हें मजबूर किया कि वे
जन्म होते ही अपने बच्चों को घर के बाहर छोड़ दिया करें, जिससे वे
ज़िन्दा न बचें।
20"ऐसे कठिन समय में मोशे का जन्म हुआ परंतु परमात्मा उसका
जीवन सुंदर बनाएँगे। तीन महीने तक उनका पालन-पोषण अपने पिता
के घर में हुआ। 21जब उनको छुपाए रखना असंभव हो गया तो उनकी
माँ ने उन्हें नदी के किनारे छोड़ दिया था, फेरो की बेटी ने उन्हें उठा
लिया और अपने बेटे की तरह उनका पालन-पोषण करने लगी। 22मोशे
को इजिप्ट देश की सारी शिक्षाओं को सिखाया गया, और वह अपने
शब्दों और कार्यों में शक्तिशाली था।
23"जब मोशे चालीस साल के हुए तब उनके मन में आया कि वह
अपने भाइयों, अर्थात् इज़राएल के लोगों को मिलें और उनका हाल
चाल जाने। 24एक दिन मोशे ने देखा कि एक इजिप्ट निवासी उनके
अपने इज़राएल देश के व्यक्ति के साथ बुरा व्यवहार कर रहा है। तो
मोशे ने इजिप्ट निवासी की हत्या कर दी और उस व्यक्ति की रक्षा
की, और इस प्रकार अपने इज़राएल देश के भाई का बदला लिया।
25मोशे का विचार था, 'मेरे भाई, अर्थात् इज़राएल के लोग समझ जाएँगे

कि परमात्मा मेरे हाथों उनको मुक्ति कराएँगे।' परंतु इज़राएल के लोग
यह बात न समझे।
26"अगले दिन इज़राएल के दो लोग आपस में लड़ रहे थे। मोशे
ने उन्हें देखा और उनके पास जाकर मेल-मिलाप करने के लिए
समझाया। उन्होंने कहा, 'सज्जनो, तुम भाई-भाई हो। तो लड़ाई क्यों
करते हो?'
27"इस पर, जिस व्यक्ति ने लड़ाई की शुरुआत की थी, मोशे को
धक्का देते हुए कहा, 'तुम्हें किसने हमारे ऊपर शासक और जज नियुक्त
किया है? 28जिस तरह कल तुमने उस इजिप्ट देश के आदमी को मार
डाला, क्या उसी तरह मुझे भी मार डालना चाहते हो?' 29यह बात
सुनकर मोशे वहाँ से भाग खड़े हुए और मिद्यान देश में परदेशी के रूप
में बस गए। वहाँ उनके दो पुत्र हुए।
30"जब चालीस साल बीत गए तब सीनय पहाड़ के सुनसान बंजर
जगह में, जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में, परमात्मा के एक स्वर्गदूत
ने मोशे को दर्शन दिया। 31यह दर्शन पाकर मोशे हैरान हो गए। जब वह
देखने के लिए जलती झाड़ी के नज़दीक गए तब उन्हें प्रभु परमात्मा
की आवाज़ सुनाई दी, 32'मैं वह परमात्मा हूँ जिसकी भक्ति तुम्हारे
पूर्वजों अब्राहम, इसहाक और याकोब ने की थी।' यह सुनकर मोशे
काँप उठे और वह उस ओर देखने की हिम्मत न कर सके।
33"प्रभु ने उनसे कहा, 'अपने पैरों से जूतियाँ उतार दो, क्योंकि जिस
जगह पर तुम खड़े हो, वह पवित्र है। 34मैंने इजिप्ट देश में अपनी प्रजा
पर अन्याय होते देखा है। मैंने उनकी दुहाई सुनी है और मैं उन्हें गुलामी
से मुक्त करने के लिए उतरा हूँ। अब तुम तैयार हो जाओ, मैं तुम्हें
इजिप्ट देश भेजूँगा।'
35"परमात्मा ने उसी मोशे को दुबारा भेजा जिसे लोगों ने पहले यह
कहते हुए ठुकरा दिया था, 'किसने तुम्हें हम पर शासक और जज
नियुक्त किया है?' परमात्मा के स्वर्गदूत ने जलती हुई झाड़ी से मोशे से
बातचीत की थी। परमात्मा ने अपने उसी स्वर्गदूत द्वारा मोशे की मदद
की कि वह लोगों को छुड़ाएँ और शासन करें।

7:28 निर्गमन 2:14 **7:32** निर्गमन 3:6,15 **7:34** निर्गमन 3:5; 7; 8; 10

36“वह इजिप्ट देश में, लाल सागर के तट पर और चालीस साल तक
सुनसान बंजर जगह में अद्‌भुत काम और परमात्मा की शक्ति के चिन्ह
दिखाते हुए इज़राएल के लोगों को निकाल लाए।
37“यह वही मोशे हैं जिन्होंने इज़राएल के लोगों से कहा था,
‘परमात्मा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए एक परमात्मा के प्रवक्ता
नियुक्त करेंगे जैसे उन्होंने मुझे नियुक्त किया है।’ 38यह वही परमात्मा
के प्रवक्ता मोशे हैं जो सुनसान बंजर जगह में हमारे पूर्वजों के समूह
के साथ थे जब स्वर्गदूत ने सीनय पहाड़ पर उनसे बात की थी। उसी
स्थान पर मोशे को परमात्मा के जीवन-दायक संदेश प्राप्त हुए थे कि
वह उन संदेशों को हमें प्रदान करें।
39“परंतु हमारे पूर्वज परमात्मा के प्रवक्ता मोशे की बात नहीं सुनना
चाहते थे, इसलिए उनको अस्वीकार कर दिया और अपना मन फिर से
इजिप्ट की ओर लगाया।
40“वे मोशे के भाई हारोन से बोले, ‘हमारे लिए ऐसे देवता की मूर्ति
बनाओ जो हमारा मार्गदर्शन करे, क्योंकि उन मोशे का जो हमें इजिप्ट
देश से निकाल कर लाए थे, न जाने क्या हुआ।’ 41तब इज़राएल के
लोगों ने बछड़े की एक मूर्ति बनाई और उसके आगे बलि चढ़ाई। वे
अपने हाथों से बनाई गई मूर्ति के लिए खुशियाँ मनाने लगे।
42“इस पर परमात्मा ने उनसे अपना मुँह मोड़ लिया और उन्हें
आकाश के सूरज, चाँद और सितारों को पूजने को छोड़ दिया, जैसा
कि परमात्मा के प्रवक्ताओं की पुस्तक में लिखा है,
‘हे इज़राएल वंश,
क्या तुमने सुनसान बंजर जगह में
चालीस साल तक मुझे पशु-बलि चढ़ाई?
43नहीं! तुम लोग तो मोलोख देवता* की वेदी को
और रेफान देवता* के तारे को
अर्थात् उन मूर्तियों को जो तुमने पूजने के लिए बनाई थीं,
अपने साथ लेकर फिरते रहे।

7:37 उपदेश 18:15 **7:40** निर्गमन 32:1,23 * **7:43** *मोलोख देवता* - यह शुक्र ग्रह था, एक कनानी देवता जिसे लोग आकाश और सूर्य देवता के रूप में पूजते थे। * **7:43** *रेफान देवता* - शनि ग्रह को संदर्भित करता है जिसे इजिप्ट के लोगों द्वारा देवता के रूप में पूजा जाता था।

मैं तुमको बाबीलोन देश के उस पार बसाऊँगा।'
44"वह तंबू-मंदिर* जो परमात्मा की उपस्थिति को दर्शाता था
सुनसान बंजर जगह में हमारे पूर्वजों के साथ था। यह तंबू-मंदिर उस
आदेश के अनुसार बना था जो परमात्मा ने मोशे को दिया था, और
जिसका नमूना स्वयं मोशे देख चुके थे। 45हमारे पूर्वज इस तंबू-मंदिर
को यहोशु के नेतृत्व में अपने साथ उस भूमि पर ले आए, जिसे उन्होंने
अपने अधिकार में ले लिया था और जहाँ से परमात्मा ने हमारे पूर्वजों
के सामने से देशों को निकाल दिया था और यह तंबू-मंदिर वहाँ राजा
दाविद के समय तक रहा।
46"राजा दाविद ने परमात्मा को प्रसन्न किया और परमात्मा से पूछा
कि क्या वह इज़राएल के लोगों के लिए उनका एक मंदिर बना सकता
है। 47पर राजा शलोमो द्वारा ही परमात्मा के लिए एक मंदिर का निर्माण
किया गया।
48"सच तो यह है कि परमेश्वर मनुष्य के हाथों बनाए गए मंदिरों में
नहीं रहते, जैसा कि उनके प्रवक्ता यशायाह ने लिखा है कि परमात्मा
कहते हैं,*
49 'परमस्वर्ग मेरा सिंहासन है
और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी।
तुम मेरे लिए कैसा मंदिर बनाओगे?
क्या मुझे आराम करने की जगह की ज़रूरत है?
50 क्या यह सब मैंने अपने हाथ से नहीं बनाया है?'
51"कठोर मनवालो,* कान से बहरे और ढीठ लोगो! तुम हमेशा
पवित्र आत्मा का विरोध करते हो जैसे तुम्हारे पूर्वज करते थे। 52क्या
तुम्हारे पूर्वजों ने किसी परमात्मा के प्रवक्ता को नहीं सताया? उन्होंने
धर्मी मुक्तिदाता येशु के आने का संदेश बताने वालों की हत्या की थी,
और अब तुमने उन ही से धोखा किया और उनकी हत्या के भागी बने।

7:43 आमोस 5:25-27 * **7:44** *वह तंबू-मंदिर* - या "गवाह का तंबू" जो दर्शाता है कि परमात्मा उनके साथ है। * **7:48** *यशायाह ने लिखा है कि परमात्मा कहते हैं* - या, "यशायाह कहते हैं" लेकिन पूर्ण अर्थ वास्तव में है, "यशायाह ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि परमात्मा कहते हैं" **7:50** यशायाह 66:1-2 * **7:51** *कठोर मनवालो* - या "मन और कान के चीरा-संस्कार रहित लोग" जिसका अर्थ "कठोर मनवाले वे लोग जो यहूदी समाज से नहीं हैं।"

[53]तुम्हें स्वर्गदूतों द्वारा मोशे के नियम और शिक्षा प्राप्त हुए, पर उनका
तुमने पालन नहीं किया।"

शिष्य स्टैफनस की हत्या

[54]यह बात सुनकर यहूदी अगुवे भड़क उठे और स्टैफनस पर दाँत
पीसने लगे। [55]स्टैफनस पवित्र आत्मा से भरकर परमस्वर्ग की ओर
देखने लगे और उन्होंने परमात्मा का तेज, तथा प्रभु येशु को परमात्मा
की दाईं ओर खड़े हुए देखा। [56]वह बोल उठा, "देखो, मैं परमस्वर्ग को
खुला हुआ और तेजस्वी मानव-पुत्र को परमात्मा की दाईं ओर खड़े
देख रहा हूँ।"
[57]यह सुनकर लोग ऊँची आवाज़ में चिल्लाए और अपने कानों पर हाथ
रख एक साथ स्टैफनस पर टूट पड़े। [58]तब वे उसको शहर के बाहर
निकालकर जान से मारने के लिए उस पर पथराव करने लगे। गवाहों
ने अपने कुर्ते उतारकर* शाऊल नामक युवक के पैरों के पास रख दिए
थे।
[59]जब लोग स्टैफनस पर पथराव कर रहे थे, स्टैफनस ने इस प्रकार
प्रार्थना की, "प्रभु येशु, मेरी आत्मा स्वीकार कीजिए।" [60]तब स्टैफनस ने
घुटने टेककर ऊँची आवाज़ से कहा, "प्रभु, इनसे इस पाप का हिसाब
न लेना।" और यह कहने के बाद वह मृत्यु की नींद में सो गया।

8

सत्संग पर अत्याचार

[1]तो स्टैफनस की हत्या से शाऊल सहमत था।
उस दिन से यरूशलम के सत्संग पर घोर अत्याचार शुरू हो गए
और राजदूतों को छोड़कर सारे शिष्य यहूदिया और समेरिया प्रदेशों में
बिखर गए।
[2]भक्त लोग स्टैफनस के मृत शरीर को ले गए और उसके लिए गहरा
शोक मनाया। [3]उधर शाऊल सत्संग को उजाड़ रहा था। वह येशु-भक्तों

---

* **7:58** *कुर्ते उतारकर* - उन्होंने कुर्ते उतार दिए ताकि पत्थर फेंकने में कुर्ते की आस्तीनें रूकावट न
बनें

के घरों में जाता और आदमी और औरतों को वहाँ से घसीटता हुआ ले जाता और उन्हें जेल में डाल देता था।

शिष्य फिलिपस का शुभ संदेश फैलाने का कार्य

[4]बिखरे हुए भक्त जगह-जगह जा कर प्रभु येशु के शुभ संदेश को फैलाने लगे। [5]फिलिपस ने समेरिया के मुख्य शहर में आकर मुक्तिदाता के बारे में बताना शुरू किया। [6]भीड़ फिलिपस के द्वारा परमात्मा की शक्ति के चमत्कारों को देखकर उनकी बातें बहुत ध्यान से सुनने लगी। [7]बहुत लोगों के अन्दर से अशुद्ध आत्माएँ चिल्लाती हुई बाहर निकल रही थीं। अनेक अपंग और लकवे के पीड़ित भी ठीक हो रहे थे। [8]उस शहर में जो कुछ हो रहा था उससे लोग बहुत खुश थे।

जादूगर शिमोन

[9]उस शहर में सिमोन नामक एक आदमी रहता था। वह जादू दिखाकर समेरिया प्रदेश के लोगों को हैरान कर देता था और वह अपने मुँह से अपनी ही तारीफ करता था। [10]सभी लोग छोटे से लेकर बड़े तक ने उसका लोहा मान रखा था और कहते थे कि यही है वह जिसे "महादिव्य शक्ति" कहा जाता है। [11]उन्होंने उसकी बातें ध्यान से सुनीं क्योंकि लंबे समय से उसने अपना जादू दिखाकर उन्हें प्रभावित कर रखा था।

[12]परंतु जब उन्होंने उस बात पर विश्वास किया जो फिलिपस परमात्मा के साम्राज्य के शुभ संदेश और मुक्तिदाता येशु के नाम के बारे में कह रहा था, तो उन सब आदमी और औरतों ने समर्पण-स्नान लिया। [13]सिमोन ने भी मुक्तिदाता येशु पर आस्था प्रकट की और समर्पण-स्नान लिया। और जहाँ कहीं फिलिपस जाता था सिमोन भी उसके साथ जाने लगा क्योंकि वह परमात्मा की शक्ति के चिन्हों और अद्‌भुत चमत्कारों को देखकर हैरान था।

समेरिया प्रदेश में राजदूत पतरस और योहन

[14]जब यरूशलम में प्रभु येशु के राजदूतों ने सुना कि समेरिया निवासियों ने परमात्मा का संदेश स्वीकार कर लिया है, तब उन्होंने

पतरस और योहन को उनके पास भेजा। [15]वे दोनों वहाँ गए और उन
लोगों के लिए प्रार्थना की कि वे पवित्र आत्मा पाएँ, [16]क्योंकि अब
तक समेरिया समाज में से किसी को पवित्र आत्मा नहीं दिया गया
था। उन्होंने केवल प्रभु येशु के नाम में समर्पण-स्नान ही लिया था।
[17]तब पतरस और योहन ने उन समेरिया लोगों पर हाथ रखे और उन्होंने
पवित्र आत्मा प्राप्त किया।

[18]जब सिमोन ने देखा कि राजदूतों के हाथ रखने के द्वारा पवित्र
आत्मा मिलता है तब वह उनके पास पैसे लाकर बोला, [19]"मुझे भी यह
शक्ति दीजिए कि मैं जिसपर हाथ रखूँ उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हो जाए।"

[20]पतरस ने कहा, "नाश हो तुम्हारा और तुम्हारे पैसों का, क्योंकि तुम
परमात्मा का वरदान खरीदना चाहते हो! [21]इस परमात्मा के काम में न
तो तुम्हारा कुछ भाग है और न हिस्सेदारी, क्योंकि परमात्मा की दृष्टि
में तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है। [22]इसलिए अपने इस बुरे कर्म से पश्चाताप
करो, और प्रभु से प्रार्थना करो कि वह तुम्हारे मन के इरादे को माफ
कर दे। [23]मैं देख रहा हूँ कि तुम कड़वाहट से भरे हो और अधर्म के
बंधन में जकड़े हुए हो।"

[24]इस पर सिमोन ने कहा, "आप लोग ही मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना
कीजिए कि आपने जो कुछ कहा, वह मुझ पर घटित न हो।"

[25]जब पतरस और योहन लोगो के बीच प्रभु येशु का शुभ संदेश दे
चुके तब यरूशलम लौटते समय उन्होंने समेरिया प्रदेश के अनेक गाँवों
में भी शुभ संदेश सुनाया।

शिष्य फिलिपस और इथोपिया देश का किन्नर

[26]इसके कुछ समय बाद कि प्रभु परमात्मा के स्वर्गदूत ने फिलिपस
से कहा, "उठो और दक्षिण की ओर यरूशलम से गाज़ा नगर जाने
वाले बंजर रास्ते पर जाओ।" [27]तो फिलिपस इस आज्ञा के अनुसार
चल पड़े। मार्ग में उनकी भेंट इथोपिया-निवासी एक किन्नर से हुई जो
इथोपिया देश की रानी कंदाके* का उच्च पदाधिकारी और कोषाध्यक्ष

---

* **8:27** *रानी कंदाके* - कंदाके इथोपिया लोगों की रानी की उपाधि थी। इथियोपिया नूबिया राज्य को संदर्भित करता है जो वर्तमान में उत्तरी सूडान में स्थित है।

था। वह परमात्मा की भक्ति करने के लिए यरूशलम आया था [28]और
अब वापस घर लौट रहा था। वह अपने रथ पर बैठा हुआ परमात्मा के
प्रवक्ता यशायाह की पुस्तक पढ़ रहा था।
[29]परमात्मा की पवित्र आत्मा ने फिलिपस से कहा, "आगे बढ़ो और
इस रथ के साथ-साथ चलते जाओ।"
[30]फिलिपस दौड़ कर रथ के पास पहुँचे। उसने किन्नर को प्रवक्ता
यशायाह की पुस्तक पढ़ते सुना। उसने पूछा, "आप जो पढ़ रहे हैं क्या
उसे समझ रहे हैं?"
[31]उसने कहा, "जब तक कोई व्यक्ति मुझे न समझाए, मैं कैसे समझ
सकता हूँ?" तब किन्नर ने फिलिपस से कहा कि वह ऊपर आकर
उसके साथ बैठ जाएँ।
[32]परमात्मा-ग्रंथ का अंश जिसे वह पढ़ रहा था, यह था,
"जैसे भेड़ वध के लिए जाते समय चुप रहती है
और जैसे मेमना ऊन कतरने वाले के सामने शांत रहता है,
वैसे ही उसने अपना मुँह नहीं खोला चुप रहा।
[33]वह अपमानित हुआ और उसको इन्साफ नहीं मिला।
उनका वंश कैसे आगे बढ़ सकता है,
क्योंकि उनका जीवन पृथ्वी पर खत्म होने जा रहा है?"
[34]किन्नर ने फिलिपस से पूछा, "कृपाकर बताइए कि परमात्मा के
प्रवक्ता ने यह किसके बारे में कहा है? अपने बारे में या किसी अन्य
व्यक्ति के बारे में?" [35]तब फिलिपस ने उसे बताना शुरू किया, और
परमात्मा-ग्रंथ के इसी पाठ से शुरू कर प्रभु येशु का शुभ संदेश उसे
सुनाया।
[36]चलते-चलते मार्ग में वे एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ पानी था। किन्नर
बोला, "देखिए पानी! अब मुझे समर्पण-स्नान लेने में क्या बाधा है?"
[37-38]तब+ उसने आदेश दिया कि रथ रोका जाए। फिलिपस और किन्नर
दोनों पानी में उतर गए और फिलिपस ने उसे समर्पण-स्नान दिया। [39]जब
वे पानी से बाहर निकलकर ऊपर आए तब प्रभु की आत्मा फिलिपस को
अचानक उठा ले गई। किन्नर ने उन्हें फिर न देखा और खुशी से आगे बढ़

8:33 यशायाह 53:7-8

गया। [40]उधर फिलिपस ने अपने आप को अज़ोतस नगर में पाया। कैसरया शहर पहुँचने तक वह नगर-नगर प्रभु येशु का शुभ संदेश सुनाता रहा।

9

कट्टर शाऊल का मन परिवर्तन

[1]शाऊल पर अभी भी प्रभु येशु के शिष्यों को धमकाने और उनकी हत्या करने की धुन सवार थी। वह महापुरोहित के पास गया [2]और उससे विनती की कि वह उसे यह अधिकार-पत्र दें जिससे वह दमस्कस शहर के यहूदी सत्संग भवनों के नेताओं को प्रस्तुत करे कि यदि वहाँ प्रभु मार्ग पर चलने वाले भक्त मिल जाएँ, चाहे वे पुरुष हों या स्त्री, तो उन्हें बंदी बनाकर यरूशलम शहर ले आए।

[3]यात्रा करते हुए जब शाऊल दमस्कस के नज़दीक पहुँचा तब आकाश से एक रोशनी उसके चारों ओर अचानक चमक उठी। [4]वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने एक आवाज़ सुनी। कोई उससे यह कह रहा था, "शाऊल, शाऊल! तुम मुझे क्यों सताते हो?"

[5]शाऊल ने पूछा, "प्रभु, आप कौन हैं?"

उत्तर मिला, "मैं येशु हूँ, जिसे तुम सता रहे हो। [6]अब उठो और शहर में जाओ। वहाँ तुम्हें बता दिया जाएगा कि तुम्हें क्या करना है।"

[7]जो लोग शाऊल के साथ यात्रा कर रहे थे, वे कुछ नहीं कह पाए, बस, खड़े के खड़े रह गए, क्योंकि उन्हें आवाज़ तो सुनाई दी, पर उन्होंने देखा किसी को नहीं। [8]जब शाऊल भूमि से उठा, तो वह अंधा हो चुका था। तब जो लोग उसके साथ थे उसका हाथ पकड़कर उसे दमस्कस शहर ले गए। [9]शाऊल को तीन दिनों तक कुछ न दिखाई दिया और उन दिनों उसने कुछ खाया-पिया भी नहीं।

दमस्कस शहर में शाऊल

[10]दमस्कस में हनन्याह नामक एक शिष्य था। प्रभु येशु ने उसे दर्शन देकर कहा, "हनन्याह!"

हनन्याह ने उत्तर दिया, "जी, क्या आज्ञा है प्रभु!"

[11]प्रभु येशु ने उससे कहा, "'सीधी' नामक गली में जाओ और वहाँ यहूदा के घर पर तरसुस निवासी शाऊल के बारे में पूछना। वह इस समय

प्रार्थना कर रहा है। 12उसने दिव्य दर्शन में देखा है कि हनन्याह नामक
एक व्यक्ति आकर उस पर हाथ रखे की वह दोबारा देखने लगे।"
13परंतु हनन्याह ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैनें इस व्यक्ति के बारे में बहुत
लोगों से सुन रखा है की उसने यरूशलम में आपके पवित्र भक्तों को
बहुत सताया है। 14उसको प्रधान पुरोहितों से अधिकार मिला है कि
यहाँ दमस्कस में जितने आपके भक्त हैं, उन सबको बंदी बना ले।"
15प्रभु ने उससे कहा, "शाऊल के पास जाओ, वह मेरा चुना हुआ
व्यक्ति है, जो राजाओं और इज़राएल के लोगों और उन लोगों को भी
मेरे बारे में बताएगा जो यहूदी समाज से नहीं हैं। 16और मैं उसे बताऊँगा
कि उसे मेरे नाम के लिए कितना दुख उठाना होगा।"
17तब हनन्याह ने उस घर में जाकर शाऊल पर अपने हाथ रखकर
कहा, "भाई शाऊल, प्रभु येशु, जिन्होंने मार्ग में आते समय आपको
दर्शन दिया है, उन्हीं ने मुझे आप के पास भेजा है कि आप फिर से देख
सकें और परमात्मा की पवित्र आत्मा की शक्ति से भर जाएँ।" 18उसी
समय शाऊल की आँखों से पपड़ी जैसी गिरी और वह फिर से देखने
लगा। तब वह उठा और उसने समर्पण-स्नान लिया। 19भोजन करने से
उसके शरीर में बल लौट आया।
शाऊल दमस्कस शहर में शिष्यों के साथ कुछ दिन रहा 20और बिना
देर किए यहूदी सत्संग भवनों में प्रचार करने लगा कि प्रभु येशु ही
परमात्मा के पुत्र हैं।
21इससे सब सुनने वाले हैरान रह गए और बोले, "क्या यह वही
व्यक्ति नहीं जो यरूशलम में येशु के शिष्यों पर अत्याचार कर रहा था
और यहाँ भी इसी मतलब से आया था कि उनको बंदी बनाकर प्रधान
पुरोहितों के पास ले जाए?"
22परंतु शाऊल के शुभ संदेश सुनाने के काम को और भी बल मिलता
गया, और इस बात का प्रमाण देकर कि प्रभु येशु ही मुक्तिदाता हैं,
उसने दमस्कस में रहने वाले यहूदियों का मुँह बंद कर दिया।

शाऊल का बाल-बाल बच जाना

23इस प्रकार बहुत दिनों के बाद, वहाँ के यहूदियों ने शाऊल की
हत्या करने के लिए गुप्त योजना बनाई, 24पर शाऊल को उनकी इस

योजना का पता चल गया कि यहूदी उसको मार डालने के लिए
दिन-रात नगर के फाटकों पर पहरा दे रहे हैं। 25उधर शाऊल के शिष्यों
ने उसे बड़े टोकरे में बैठाकर रात में शहर की सीमा पर बनी दीवार के
छेद में से नीचे उतार दिया।

यरूशलम और तरसस शहरों में शाऊल

26यरूशलम पहुँचने पर शाऊल ने शिष्यों के समूह में मिल जाने की
कोशिश की परंतु सब लोग उससे डरते थे, क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं
हो रहा था कि वह भी प्रभु येशु का शिष्य बन गया है। 27तब बरनबास
ने शाऊल को प्रभु येशु के राजदूतों से मिलवाया और उन्हें बताया कि
शाऊल ने किस प्रकार मार्ग में प्रभु येशु का दिव्य दर्शन पाया और प्रभु
ने उससे बातें कीं। बरनबास ने यह भी कहा कि जब शाऊल दमस्कस
शहर में था, तो उसने बिना किसी से डरे प्रभु येशु का शुभ संदेश
सुनाया था।
28अब शाऊल राजदूतों के साथ यरूशलम में घूमने-फिरने लगा और
निडर होकर प्रभु येशु का शुभ संदेश फ़ैलाने लगा। 29शाऊल ग्रीक-भाषी
यहूदियों से मुक्तिदाता के बारे में बातचीत और तर्क-वितर्क किया
करते थे, परंतु वे लोग लगातार उसकी हत्या करने का अवसर ढूँढ़ते
रहते थे। 30जब भक्त भाइयों और बहनों को इसका पता चला तब वे
शाऊल को कैसरया शहर ले गए और वहाँ से उन्हें तरसुस शहर को
भेज दिया।
31इसी समय यहूदिया, गलील और समेरिया प्रदेशों के परमात्मा के
सत्संग को शांति प्राप्त हुई और उनकी आस्था मज़बूत होती जा रही
थी। वे प्रभु येशु* के डर में जीवन बिताने लगे, पवित्र आत्मा ने उनमें
जोश भरा और उनकी संख्या बढ़ती गई।

पतरस का एनियास को स्वस्थ करना

32उधर राजदूत पतरस सब स्थानों पर घूमते हुए लिदा शहर में रहने
वाले पवित्र भक्तों के यहाँ पहुँचे। 33वहाँ उन्हें एनियास नामक व्यक्ति

---

* **9:31** *प्रभु येशु* - या "प्रभु परमात्मा"

मिला जो लकवे से पीड़ित था और आठ साल से बिस्तर पर पड़ा था।
34पतरस ने उससे कहा, “एनियास, मुक्तिदाता येशु तुमको ठीक कर
रहे हैं। खड़े हो और अपना बिस्तर उठाओ।” उसी समय वह खड़ा हो
गया। 35यह देखकर लिदा और शारोन के सारे निवासियों ने अपने बुरे
कर्मों से पश्चाताप किया और प्रभु येशु में आस्था प्रकट की।

पतरस का शिष्या दोरकास को ज़िन्दा करना

36योपा नगर में तबीथा नामक प्रभु येशु की एक शिष्या रहती थी जो
दोरकस के नाम से भी जानी जाती थी। वह अच्छे कर्म और गरीबों को
दान देने में लगी रहती थी। 37किसी बिमारी के कारण उसकी मृत्यु हो
गई। लोगों ने उसके शरीर को स्नान कराने के बाद ऊपर के कमरे में रख
दिया। 38लिदा नगर योपा नगर के पास है। इसलिए जब शिष्यों ने सुना
कि पतरस लिदा में हैं, तब उन्होंने दो आदमियों को पतरस के पास
भेजा और उससे विनती की, “कृपाकर योपा नगर में तुरंत आ जाएँ।”
39पतरस उठे और उनके साथ चल पड़े। जब पतरस वहाँ पहुँचे तब
लोग उन्हें उस ऊपर के कमरे में ले गए। वहाँ सब विधवाएँ रोती हुईं
पतरस के पास आ खड़ी हुईं। और उन्होंने पतरस को वे कुर्ते और कपड़े
दिखाए जो दोरकस ने बनाए थे जब वह ज़िन्दा थी। 40पतरस ने सबको
कमरे से बाहर जाने के लिए कहा। तब उसने घुटने टेककर प्रार्थना की,
और मृत शरीर की ओर देखकर कहा, “तबीथा, उठो।” उसने आखें
खोल दीं और वह पतरस को देखकर बैठ गई! 41पतरस ने अपना हाथ
दिया और उसे उठने में मदद की। तब पतरस ने पवित्र भक्तों तथा
विधवाओं को बुलाकर दोरकस को जीती-जागती उनके सामने लाया।
42यह बात सारे योपा नगर में फैल गई और बहुत से लोगों ने प्रभु येशु
पर आस्था प्रकट की। 43पतरस योपा में शिमोन नामक एक चमड़ा
व्यापारी के घर में बहुत दिनों तक रहे।

10

परमात्मा-भक्त कुरनेलियुस

1कैसरया शहर में कुरनेलियुस नामक एक व्यक्ति था जो इटली देश
का सेना-अधिकारी था। 2वह और उसके घर में रहनेवाले सब लोग

परमात्मा का आदर-सम्मान करते थे। वह गरीबों को बहुत दान देता
और निरंतर परमात्मा में लीन रहता था। 3उसे एक दिन लगभग दोपहर
के तीन बजे दर्शन मिला। उसने दर्शन में साफ देखा कि परमात्मा का
एक स्वर्गदूत उसके पास आया और उससे कहा, "कुरनेलियुस!"
4कुरनेलियुस स्वर्गदूत को देखकर डर गया और बोला, "जी, आप
क्या चाहते हैं?"
स्वर्गदूत ने कहा, "परमात्मा ने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है, और वह
गरीबों को दिए गए तुम्हारे दान के बारे में जानते हैं। 5अब तुम अपने
सेवकों को योपा नगर भेज कर शिमोन पतरस नामक व्यक्ति को यहाँ
बुलवा लो। 6वह साइमन नामक एक चमड़ा व्यापारी के यहाँ मेहमान है
जिसका घर सागर-किनारे है।"
7जब वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थीं चला गया तो
कुरनेलियुस ने अपने दो सेवकों और एक वफादार सैनिक को बुलाया,
8और उन्हें सब बातें समझाकर योपा नगर भेज दिया।
9दूसरे दिन जब वे लोग यात्रा करते-करते नगर के पास पहुँचने वाले
थे, तब लगभग दोपहर के उसी समय पतरस प्रार्थना के लिए छत
पर गया। 10पतरस को भूख लगी और कुछ खाने की इच्छा हुई। जब
अभी खाना बन रहा था तो पतरस ने प्रार्थना ध्यान अवस्था में दर्शन
देखा 11कि आकाश खुल गया है और चारों कोनों से लटकती हुई
लंबी-चौड़ी चादर जैसी कोई चीज़ पृथ्वी पर उतर रही है। 12उसमें सब
प्रकार के चौपाए पशु, रेंगने वाले जीव-जंतु और पक्षी थे। 13उसे यह
आवाज़ भी सुनाई पड़ी, "पतरस उठो, इन्हें मारो और खाओ!"
14पतरस ने कहा, "कभी नहीं, प्रभु! आज तक मैंने कोई अपवित्र या
अशुद्ध चीज़* नहीं खाई है।"
15इस पर उसे दूसरी बार फिर आवाज़ सुनाई दी, "जिसे परमात्मा ने
शुद्ध कर दिया है, उसे तुम अशुद्ध मत कहो।" 16तीन बार ऐसा ही हुआ
और तब वह चादर तुरंत आकाश में उठा ली गई।

---

* **10:14** *कोई अपवित्र या अशुद्ध चीज़* - मोशे के नियम और शिक्षा में यहूदी लोगों को कुछ "शुद्ध" मांस खाने की आज्ञा थी जैसे बकरे या भेड़ का मांस, अधिकतर मछलियों की किस्में और मुर्गा। हालाँकि, सूअर, झींगा और कौवे का मांस जैसे "अशुद्ध" मांस खाना मना थे (लेवी 11:1-23)। पतरस ने उनके दर्शन में इनमें से कुछ निषिद्ध मांस को देखा होगा।

[17]पतरस अभी अपने इन विचारों में खोए हुए थे कि जो दर्शन उसे
मिला है उसका क्या अर्थ हो सकता है। उसी समय कुरनेलियुस के भेजे
हुए सेवक और सैनिक शिमोन का घर पूछते-पूछते दरवाज़े पर आ खड़े
हुए। [18]उन्होंने आवाज़ दी और पूछा, "क्या शिमोन पतरस यहीं ठहरे
हैं?"
[19]पतरस अभी उस दर्शन के बारे में सोच ही रहे थे कि पवित्र आत्मा
ने उससे कहा, "देखो, तीन व्यक्ति तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं। [20]उठो, नीचे उतरो
और बिना झिझक उनके साथ चले जाओ, क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा
है।"
[21]तब पतरस उन लोगों के पास नीचे आकर बोला, "जिसको आप
ढूँढ़ रहे हैं, वह मैं ही हूँ। आप किस काम से यहाँ आए हैं?"
[22]उन्होंने कहा, "हमारे सेना-अधिकारी कुरनेलियुस परमात्मा का
आदर-सम्मान करने वाले एक धर्मी व्यक्ति हैं और पूरे यहूदी समाज
में सम्मानित हैं। उसको एक पवित्र स्वर्गदूत से आदेश मिला है कि
वह आपको अपने घर बुलवाएँ और आपकी बात सुनें।" [23]तब पतरस
उन लोगों को घर के अंदर ले गया और उनको अपने यहाँ उस रात
ठहराया। अगले दिन पतरस उनके साथ चल दिया और योपा नगर के
कुछ भक्त भी उसके साथ हो लिए।
[24]दूसरे दिन वे कैसरया शहर पहुँचे जहाँ कुरनेलियुस अपने रिश्तेदारों
और अपने करीबी दोस्तों के साथ उनका इंतज़ार कर रहा था। [25]जब
पतरस अंदर जाने वाला ही था तब कुरनेलियुस उससे मिला और वह
पतरस के चरणों में गिर कर उसका गुणगान करने लगा। [26]पतरस ने उसे
उठाते हुए कहा, "उठो, मैं भी तो तुम्हारी तरह एक इंसान ही तो हूँ।"
[27]वह कुरनेलियुस से बातचीत करते हुए अंदर गया और वहाँ बहुत
लोगों को इकट्ठा देखकर [28]उनसे कहा, "तुम लोग स्वयं जानते हो कि
हम यहुदियों के लिए दूसरे समाज के लोगों के साथ मेल-जोल रखना
मना है। परंतु परमात्मा ने मुझ पर प्रकट किया कि किसी व्यक्ति को
अपवित्र या अशुद्ध न मानूँ। [29]इसलिए बुलाए जाने पर मैं बिना कुछ पूछे
तुम्हारे पास चला आया। अब बताओ कि तुमने मुझे क्यों बुलाया है?"
[30]कुरनेलियुस ने उत्तर दिया, "चार दिन पहले ठीक इसी समय जब
मैं अपने घर में दोपहर के तीन बजे प्रार्थना कर रहा था तब उजले

कपड़े पहने हुए परमात्मा का एक स्वर्गदूत अचानक मेरे सामने आ
खड़ा हुआ। [31]उसने कहा, 'कुरनेलियुस, परमात्मा ने तुम्हारी प्रार्थनाओं
सुनी है, और वह गरीबों को दिए गए तुम्हारे दान के बारे में जानता
है। [32]इसलिए अब किसी को योपा नगर भेजकर शिमोन पतरस को
बुला लो। वह सागर-किनारे शिमोन नामक एक चमड़ा व्यापारी के घर
मेहमान है।' [33]मैंने उसी समय आपके पास आदमी भेजे और आपने
बड़ी कृपा की कि आप आ गए। अब हम सब परमात्मा के सामने हैं
और आपसे वह सब सुनना चाहते हैं जिसको बताने के लिए प्रभु ने
आपको कहा है।"

राजदूत पतरस का उपदेश

[34]तब पतरस ने उनसे कहा। "अब मुझे साफ समझ में आया कि
परमात्मा किसी की तरफदारी नहीं करते, [35]परंतु दुनिया के हर समाज
के लोग जो परमात्मा का आदर-सम्मान करते हैं और आज्ञाकारिता
से चलते है, परमात्मा उन्हें पसंद करते हैं। [36]यही संदेश परमात्मा ने
इज़राएल के लोगों को दिया, और मुक्तिदाता येशु के द्वारा शांति का
शुभ संदेश सुनाया जो सबके प्रभु हैं।
[37-38]"तुम जानते हो कि समर्पण-स्नान के बारे में योहन के उपदेश
के बाद क्या हुआ, और कैसे परमात्मा ने नासरत नगर में प्रभु येशु को
पवित्र आत्मा और शक्ति से अभिषेक किया। गलील प्रदेश से शुरू
करके वह पूरे यहूदिया प्रदेश में भलाई के काम करते हुए घूमते रहे
और उन्होंने शैतान की शक्ति के आधीन लोगों को स्वस्थ किया,
क्योंकि परमात्मा उनके साथ थे।
[39]"प्रभु येशु ने जो कार्य यहूदिया प्रदेश और यरूशलम में किए, उन
सबके हम गवाह हैं।
"यरूशलम के अधिकारियों ने उनको क्रूस पर* लटका कर मार
डाला, [40]परंतु परमात्मा ने प्रभु येशु के मरने के तीन दिन बाद उन्हें
ज़िन्दा कर दिया और उनका दर्शन कराया, [41]सबको नहीं, परंतु हम में

---

* **10:39** *क्रूस पर* - या, "पेड़ पर," लेकिन इस संदर्भ में यह लकड़ी का सुली को संदर्भित करता है
जिस पर प्रभु येशु को मौत दी गयी थी।

से कुछ लोगों को जिन्हें परमात्मा ने पहले से ही इस घटना का गवाह बनने के लिए चुना था। हम वही हैं जिन्होंने प्रभु येशु के मरे हुओ में से ज़िन्दा होने के बाद उनके साथ खाया-पिया।

42"प्रभु येशु ने हमें आदेश दिया है कि हम लोगों में प्रचार करें और सच्चाई से बताएँ कि यही हैं वह जिन्हें परमात्मा ने जीवित और मरे हुओ लोगों का जज नियुक्त किया है। 43इन्हीं के बारे में सब परमात्मा के प्रवक्ता बताते हैं कि जो कोई प्रभु येशु पर आस्था रखेगा, येशु नाम द्वारा उसके बुरे कर्मों का खाता मिट जाएगा।"

44पतरस अभी बोल ही रहा था कि उन सब पर जो प्रवचन सुन रहे थे, पवित्र आत्मा उतर आया। 45कुछ यहूदी येशु भक्त, जो पतरस के साथ आए हुए थे, हैरान रह गए कि पवित्र आत्मा का वरदान उनके साथ-साथ जो यहूदी समाज के नहीं हैं उनको भी दिया गया है। 46वे इन नए भक्तों को पवित्र आत्मा द्वारा अलग-अलग दिव्य भाषाएँ बोलते और परमात्मा का गुणगान करते हुए सुन रहे थे।

इस पर पतरस ने पूछा, 47"जिन लोगों ने हमारे समान ही पवित्र आत्मा प्राप्त किया है, क्या उनके समर्पण-स्नान लेने से किसी को कोई आपत्ति है?" 48तो पतरस ने आदेश दिया कि वे सब मुक्तिदाता येशु के नाम से समर्पण-स्नान लें। इसके बाद उन लोगों ने पतरस से विनती कि की वह कुछ दिन उनके साथ ठहरें।

11

पतरस की अपने बचाव में सफाई

1प्रभु येशु के राजदूतों और यहूदिया प्रदेश के कुछ यहूदी येशु-भक्तों ने सुना कि दूसरे समाज के लोगों ने भी परमात्मा का संदेश में अपनी आस्था प्रकट की है। 2परंतु जब पतरस यरूशलम लौटा तब यहूदी येशु-भक्तों ने उसको डांट कर कहा, 3"आप जो यहूदी समाज के नहीं हैं उनके घर गए और उनके साथ खाना भी खाया!"*

4तब पतरस ने उनको वह सब कुछ बता दिया जो उसके साथ हुआ था। 5"मैं योपा नगर में था और प्रार्थना में खोया हुआ था। उसी

---

* **11:3** *जो यहूदी समाज के नहीं हैं* - या, "चीरा-संस्कार रहित लोग।"

अवस्था में मैंने देखा कि चारों कोनों से लटकती हुई लंबी-चौड़ी चादर
जैसी कोई चीज़ आकाश से उतर रही है और वह मुझ तक आई। [6]जब
मैंने ध्यान से देखा तब मुझे उसमें पशु, रेंगने वाले जीव-जंतु और पक्षी
दिखाई दिए। [7]मुझे यह आवाज़ भी सुनाई दी, 'पतरस उठो। इन्हें मारो
और खाओ।'
[8]"किंतु मैंने कहा, 'जी नहीं प्रभु, कभी नहीं! आज तक मैंने कोई
अपवित्र या अशुद्ध चीज़ नहीं खाई है।'
[9]"आकाश से दूसरी बार आवाज़ आई, 'जिसे परमात्मा ने शुद्ध कहा
है, उसे तुम अशुद्ध मत कहो।' [10]ऐसा तीन बार हुआ और तब सबकुछ
आकाश में उठा लिया गया।
[11]"ठीक उसी समय कैसरया शहर से मेरे पास भेजे गए तीन
मनुष्य उस घर के सामने आकर खड़े हो गए जहाँ हम ठहरे हुए थे।
[12]परमात्मा की पवित्र आत्मा ने मुझे आदेश दिया कि मैं बिना झिझक
उनके साथ चला जाऊँ। छः यहूदी भाई भी मेरे साथ उस मनुष्य के घर
में गए। [13]उस मनुष्य ने हमें बताया कि उसने अपने घर में एक स्वर्गदूत
को खड़े हुए देखा था। स्वर्गदूत ने उससे कहा, 'अपने सेवकों को
योपा नगर भेजकर शिमोन पतरस को बुलवा लो। [14]वह तुम्हें प्रवचन
देगा जिससे तुमको और तुम्हारे घर में सब रहने वालों को मुक्ति प्राप्त
होगी।'
[15]"मैंने प्रवचन देना शुरू ही किया था कि उन पर भी पवित्र आत्मा
उतर आया, जैसे कुछ समय पहले हम पर पेंतेकोस्ट-त्यौहार के
समय उतरी थी। [16]उस समय मुझे प्रभु येशु के ये शब्द याद आए,
'योहन ने तो पानी से समर्पण-स्नान दिया, परंतु थोड़े ही दिन बाद
तुम पवित्र आत्मा का स्नान पाओगे।' [17]यदि परमात्मा ने उनको भी
वही वरदान दिया जो हमें दिया था जब हम ने मुक्तिदाता प्रभु येशु
पर आस्था रखी थी, तो मेरी क्या हैसियत है कि मैं परमात्मा को
रोकता?"
[18]यह सुनकर वह इसके जवाब में कुछ न कह पाए। इसके बाद
वे परमात्मा का गुणगान करने लगे कि परमात्मा ने यहूदी समाज के
अलावा दूसरे समाज के लोगों को भी अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप
करने का अवसर प्रदान किया है कि वे भी मोक्ष प्राप्त करें।

पहला ग्रीक येशु सत्संग

19शिष्य स्टैफनस की हत्या के बाद यरूशलम में रहने वाले अन्य
शिष्यों पर अत्याचार शुरू हो गया जिसके कारण वे बिखर गए और
फिनिके प्रदेश, साइप्रस द्वीप और अंताकिया शहर तक पहुँच गए थे,
परंतु वे यहूदी समाज के लोगों के अलावा और किसी को प्रभु येशु का
शुभ संदेश नहीं सुनाया करते थे। 20किंतु उनमें से कुछ साइप्रस और
साइरेन के निवासी, जब अंताकिया शहर पहुँचे तब वे दूसरे समाज
के लोगों को भी प्रभु येशु का शुभ संदेश सुनाने लगे। 21प्रभु परमात्मा
की शक्ति इन लोगों के साथ थी, इसलिए उन में से बहुतों ने अपने बुरे
कर्मों से पश्चाताप किया और प्रभु येशु में आस्था प्रकट की।
22जब यरूशलम के यहूदी येशु सत्संग के कानों तक यह बात पहुँची,
तब उन्होंने बरनबास को अंताकिया शहर भेजा। 23बरनबास वहाँ
पहुँचा और जब उसने परमात्मा की कृपा लोगों पर देखी वह बहुत
खुश हुआ और सब में जोश भरा कि वे पूरे मन से प्रभु येशु पर आस्था
रखे रहें। 24बरनबास भले व्यक्ति थे और पवित्र आत्मा और आस्था से
भरे थे। और बहुत से लोग प्रभु येशु की शरण में लाए गए।
25तब बरनबास शाऊल की खोज में तरसुस शहर गया 26और जब
शाऊल उसे मिल गया तो वह उसे अंताकिया शहर ले आया। वे दोनों
पूरे एक साल तक सत्संगियों के साथ वहाँ रहे और बहुत से लोगों
को उपदेश देते रहे। सबसे पहले अंताकिया में ही प्रभु येशु के शिष्य
"मुक्तिदाता के भक्त"* कहलाए।

यरूशलम सत्संग को सहायता

27उन्हीं दिनों में यरूशलम से कुछ परमात्मा के प्रवक्ता अंताकिया
शहर आए। 28उनमें से अगबस नामक सत्संग की सभा में उठकर
पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी की कि पूरे संसार में
भयंकर अकाल पड़ने वाला है और यह अकाल सम्राट क्लौदियस
के शासन-काल* में पड़ा। 29तब शिष्यों ने निश्चय किया कि हर एक

---

* **11:26** *"मुक्तिदाता के भक्त"* - या, "मसीही" * **11:28** *सम्राट क्लौदियस के शासन-काल* - 41 सी.ई. से 54 तक

व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार यहूदिया प्रदेश में रहने वाले भक्त
भाइयों और बहनों की सहायता के लिए कुछ पैसे भेजेगा। 30उन्होंने
ऐसा ही किया और बरनबास और शाऊल के हाथ सत्संग के अनुभवी
सेवकों के पास आर्थिक सहायता भेजी।

12

राजा हेरोदेस का अत्याचार

1उसी समय राजा हेरोदेस कुछ सत्संगियों के साथ हिंसा करने लगा
और उन्हें जेल में डलवा दिया। 2उसने प्रभु येशु के राजदूत योहन
के भाई याकोब को तलवार से मरवा डाला। 3जब हेरोदेस ने देखा
कि कुछ यहूदी लोग इससे कितने खुश हैं, तब उसने पतरस को
रोटी-त्यौहार के समय गिरफ्तर कर, 4जेल में डालवा दिया। उसने
पतरस की पहरेदारी के लिए चार-चार सैनिकों के चार दल नियुक्त कर
दिए। राजा हेरोदेस की इच्छा थी कि मुक्ति-त्यौहार के बाद पतरस को
लोगों के सामने उस पर मुकद्दमा चलाए। 5पतरस जेल में बंद थे और
इधर सत्संगी उसके लिए एक मन से परमात्मा से लगातार प्रार्थना कर
रहे थे।

जेल के दरवाज़े प्रार्थना से खुल गए

6पतरस पर मुकदमा चलाए जाने से एक रात पहले, वह दो जंजीरों
से बंधा सो रहा था। उसकी दोनों तरफ सिपाही उसकी रखवाली कर
रहे थे, और अन्य सिपाही जेल के दरवाज़े की रखवाली कर रहे थे।
7अचानक प्रभु का स्वर्गदूत वहाँ आ खड़ा हुआ और प्रकाश से जेल
की कोठरी भर गई। स्वर्गदूत ने पतरस को थपथपाकर जगाया और
कहा, “जल्दी उठो।” तब पतरस की हाथ में पड़ी ज़ंजीरे खुलकर
गिर पड़ीं। 8स्वर्गदूत ने उससे कहा, “अपने कपड़े और चप्पल पहन
लो।” पतरस ने वैसा ही किया। फिर स्वर्गदूत उससे बोला, “मेरे पीछे
आओ।”

9पतरस उसके पीछे-पीछे जेल के कमरे से बाहर गए। पर पतरस को
समझ नहीं आ रहा था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सच में हो
रहा है। पतरस ने सोचा कि वह कोई सपना देख रहा है। 10जब वे पहले

और दूसरे सैनिक को पारकर उस लौह-दरवाज़े पर पहुँचे जहाँ से शहर
की ओर रास्ता जाता है, यह दरवाज़ा उनके लिए अपने आप खुल
गया। वे बाहर निकलकर गली के छोर तक ही गए थे कि अचानक
स्वर्गदूत पतरस को छोड़कर चला गया।
[11]जब पतरस को समझ में आया की वास्तव में क्या हो रहा है तो
वह बोला, "अब मैंने सचमुच जान लिया है कि प्रभु येशु* ने अपना दूत
भेजकर हेरोदेस और यहूदी धर्मगुरुओं की सारी योजनाएँ बेकार कर दीं।"
[12]तब पतरस ये सब बातें सोचते हुए, योहन, जो मरकुस भी कहलाता
है, उसकी माता मरियम के घर गया। वहाँ बहुत लोग इकट्ठा थे और
प्रार्थना कर रहे थे। [13]जब पतरस ने दरवाज़ा खटखटाया, रोदा नामक
सेविका देखने आई कि दरवाज़े पर कौन है। [14]पर पतरस की आवाज़
सुनकर वह खुशी के मारे दरवाज़ा खोलना भूल गयी, परंतु दौड़कर
अंदर गई और बोली, "पतरस दरवाज़े पर हैं!"
[15]वे उससे कहने लगे, "तुम पागल हो गई हो।" जब उसने ज़ोर देकर
कहा कि वह पतरस ही है, तब वे बोले, "वह पतरस का स्वर्गदूत होगा।"
[16]उधर पतरस दरवाज़ा खटखटाए ही जा रहा था और जब उन्होंने
दरवाज़ा खोला तो पतरस को देखकर हैरान रह गए। [17]पतरस ने उन्हें
हाथ से चुप रहने का इशारा करते हुए बताया कि किस प्रकार प्रभु
येशु* उनको जेल से बाहर ले आए। अंत में पतरस ने कहा, "याकोब
और भक्तों को ये बातें बता देना," और तब वह वहाँ से निकलकर
किसी और जगह को चले गए।
[18]सुबह होने पर सैनिकों में बड़ी खलबली मच गई कि पतरस का क्या
हुआ। [19]हेरोदेस ने पतरस की बहुत खोज करवाई पर उनका कोई पता न
चला। उसने सैनिकों की जाँच कर उन्हें प्राणदंड का आदेश दिया। इसके
बाद हेरोदेस यहूदिया प्रदेश छोड़कर कैसरया शहर में जाकर रहने लगा।

राजा हेरोदेस की मृत्यु

[20]उस समय राजा हेरोदेस सोर और सीदोन निवासियों से बहुत
नाराज़ था। ये लोग राजा के घर की देखभाल करने वाले ब्लास्तस की

---

* **12:11** *प्रभु येशु* - या, "प्रभु परमात्मा" * **12:17** *प्रभु येशु* - या, "प्रभु परमात्मा"

सहानुभूति प्राप्त करी थी। और ये एकमत हो कर शांति और व्यापार
का प्रस्ताव लेकर राजा के पास आए थे, क्योंकि अनाज की पूर्ति के
लिए वे राजा के क्षेत्र पर ही निर्भर थे। 21तय दिन आने पर हेरोदेस
ने राजसी कपड़े पहने और सिंहासन पर बैठकर उनके सामने भाषण
देने लगा। 22इस पर लोग चिल्लाते रहे, "यह मनुष्य की आवाज़ नहीं,
परंतु देवता की आवाज़ है!" 23उसी घड़ी प्रभु परमात्मा के स्वर्गदूत
ने हेरोदेस पर हमला किया क्योंकि उसने परमात्मा का गुणगान नहीं
किया था। हेरोदेस के शरीर में कीड़े पड़ गए और वह मर गया।
24जबकि मुक्तिदाता येशु के बारे में परमात्मा का शुभ संदेश लगातार
फैलता गया। और बहुत से नए शिष्य बन गए। 25उधर बरनबास और
शाऊल यरूशलम में अपना काम पूराकर लौटे और वे अपने साथ
योहन-मरकुस ले लिया था।

13

अंताकिया का येशु सत्संग

1अंताकिया शहर के सत्संग में कुछ परमात्मा के प्रवक्ता और
शिक्षक थे जैसे बरनबास, शिमयोन जो "सांवला" कहलाता था,
साइरेन निवासी लुकियस, मनाहेन जिसका पालन-पोषण शासक
हेरोदेस के साथ हुआ था और शाऊल। 2जब वे प्रभु* की भक्ति में
उपवास के साथ लगे हुए थे तब पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिए
बरनबास और शाऊल को उस कार्य के लिए अलग करके समर्पित
करो जिसके लिए मैंने उन्हें चुना है।" 3तब अनुभवी सेवकों ने उपवास
और प्रार्थना करने के बाद बरनबास और शाऊल के सर पर हाथ
रखकर उन्हें आशीर्वाद देकर विदा किया।

राजदूत पौलुस बरनबास और जादूगर

4पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाने पर बरनबास और शाऊल सिलूकिया
बंदरगाह गए। वहाँ से उन्होंने पानी के जहाज़ से साइप्रस द्वीप की यात्रा
की 5और सलमीस शहर पहुँचकर यहूदी सत्संग भवनों में परमात्मा का

---

* **13:2** *प्रभु* - "प्रभु परमात्मा" या "प्रभु येशु"

संदेश सुनाया, और योहन-मरकुस सहायक के रूप में उनके साथ थे।
6पूरे द्वीप की यात्रा कर वे पाफोस शहर पहुँचे। वहाँ उनकी मुलाकात
बार-येसु नामक एक यहूदी जादूगर से हुई, जो एक झूठा प्रवक्ता था
और 7राज्यपाल सिरगिस पौलुस का सहयोगी था। राज्यपाल सिरगिस
एक बुद्धिमान व्यक्ति था और उसने बरनबास और शाऊल को
बुलाकर परमात्मा का संदेश सुनने की इच्छा प्रकट की। 8पर जादूगर
बार-येसु* ने, जो इलीमस भी कहलाता था, इनका विरोध किया और
वह राज्यपाल सिरगिस को प्रभु में आस्था रखने से रोकना चाहता था।
9तब शाऊल ने, जो पौलुस भी कहलाता था, पवित्र आत्मा से भरकर
उसकी ओर देखकर कहा, 10"ओ शैतान के बेटे! तुम झूठे, धोखेबाज़,
और परमात्मा की आज्ञाओं के विरोधी हो। तुम कब प्रभु के सत्य मार्ग
के विरुद्ध बोलना बंद करोगे? 11देखो, अब प्रभु का हाथ तुम्हारे विरुद्ध
उठा है। तुम अंधे हो जाओगे और कुछ समय तक सूर्य का प्रकाश
नहीं देख सकोगे।" उसी समय उसकी आँखों के सामने धुँधलापन
और अंधकार छा गया और वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई
उसका हाथ पकड़कर ले चले। 12राज्यपाल ने जब यह घटना देखी तो
उसने प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की। वह प्रभु के बारे में बरनबास और
शाऊल की शिक्षाओं को सुनकर हैरान था।

पिसीदिया प्रदेश के यहूदियों के मध्य पौलुस का उपदेश

13पौलुस और उनके साथी जलमार्ग द्वारा पाफोस से पंफिलिया के
पेरगे शहर में आए। योहन-मरकुस उनको वहाँ छोड़कर यरूशलम
लौट गया। 14वे पेरगे से चलकर पिसीदिया के अंताकिया शहर में आए
और आराम-दिवस पर यहूदी सत्संग भवन में जाकर बैठ गए। 15मोशे
के नियम और शिक्षा को और परमात्मा के प्रवक्ताओं की पुस्तकों में
से पाठ पढ़े जाने के बाद यहूदी सत्संग भवन के अधिकारियों ने उनसे
कहा, "भाइयो, यदि तुम लोगों में जोश भरने के लिए कुछ कहना चाहते
हैं तो कहिए।"

*** 13:8** *बार-येसु* - येसु (या "येशु") एक आम यहूदी नाम था। इस कारण से प्रभु येशु को अक्सर "नासरत-निवासी येशु" कहा जाता है, ताकि कोई भ्रम में न रहे।

16इस पर पौलुस उठे और हाथ से उन्हें चुप रहने का इशारा कर यह
कहने लगे, "इज़राएल देश के भाइयो और परमात्मा का आदर-सम्मान
करने वाले दूसरे देश के लोगों सुनो। 17हम इज़राएल के लोग जिन
परमात्मा की भक्ति करते हैं, उन्होंने हमारे पूर्वजों को चुना। और जब वे
इजिप्ट देश में रह रहे थे जो उनका अपना देश नहीं था तब भी वे बहुत
फलवंत हुए। तब परमात्मा अपनी महाशक्ति द्वारा उनको इजिप्ट देश से
निकाल लाए 18और चालीस साल तक परमात्मा सुनसान बंजर जगह में
उनकी आदतों को बर्दाश्त करते रहे।
19-20"तब परमात्मा ने कनान देश में सात राज्यों का विनाश कर कनान
की भूमि उनके उत्तराधिकार में कर दी। यह सब होने में लगभग चार
सौ पचास साल लगे।
"इसके बाद परमात्मा ने अपने प्रवक्ता शमुएल के आने तक उनके
लिए शासक नियुक्त किए। 21तब उन्होंने परमात्मा से राजा की माँग
की, और परमात्मा ने बिन्यामिन वंश में जन्मे कीश के पुत्र शाऊल
को नि युक्त किया जो चालीस साल तक उनका राजा रहा। 22फिर
परमात्मा ने उसे हटाकर दाविद को उन लोगों का राजा बनाया। उसके
बारे में परमात्मा ने यह बताया, 'मुझे एक मनुष्य, यिशय का पुत्र दाविद
मिल गया है जो मेरे मन के अनुसार है और वह मेरी सब इच्छाएँ पूरी
करेगा।'
23"और राजा दाविद के वंश में परमात्मा ने अपनी प्रतिज्ञानुसार
इज़राएल के लिए मसीहा येशु को नियुक्त किया। 24मुक्तिदाता येशु के
आने से पहले समर्पण-स्नान दाता योहन ने इज़राएल देश के सारे लोगों
के लिए अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करने का समर्पण-स्नान लेने का
प्रचार किया। 25योहन शुभ संदेश के प्रचार कार्य में अक्सर कहा करते
थे, 'क्या तुम मुझे मुक्तिदाता समझ रहे हो? वह मैं नहीं हूँ! जो मेरे पीछे
आ रहे हैं, मैं उनके पैरों के जूते तक खोलने के योग्य नहीं हूँ।'
26"भाइयो, अब्राहम के वंशजो और दूसरे समाज के लोग जो
परमात्मा का आदर-सम्मान करते हैं, सुनें! यह मुक्ति का संदेश हम
सभी लोगों के लिए+ भेजा गया है। 27यरूशलम के निवासियों और

13:22 1 शमुएल 13:14; भजन शास्त्र 89:20

उनके शासकों ने प्रभु येशु को नहीं पहचाना कि वह मुक्तिदाता हैं और
वे परमात्मा के प्रवक्ताओं की बातों को भी नहीं समझ पाए जिसको वे
हर आराम-दिवस पर पढ़ते थे। इसलिए उन्होंने प्रभु येशु को दंड-आज्ञा
देकर उसे पूरा किया जो परमात्मा के प्रवक्ताओं ने कहा था।
28"उन्होंने मृत्युदण्ड के योग्य कोई दोष उनमें नहीं पाया, तो भी
उन्होंने शासक पिलातुस से माँग की कि मुक्तिदाता येशु को मार डाला
जाए।
29"जब उन लोगों ने परमात्मा-ग्रंथ में मुक्तिदाता येशु के बारे में लिखा
हुआ सब पूरा कर दिया तब उन्हें क्रूस से उतार कर शव रखने वाली
गुफा में रख दिया। 30परंतु परमात्मा ने प्रभु येशु के मरने के बाद उन्हें
ज़िन्दा कर दिया 31और वह बहुत दिनों तक उन लोगों को, जो उनके
साथ गलील प्रदेश से यरूशलम में आए थे, दर्शन देते रहे। प्रभु येशु के
साथ जो कुछ भी हुआ ये ही लोग उस बात के गवाह हैं।
32-33"हम लोग यह शुभ संदेश तुमको सुनाते हैं कि परमात्मा ने प्रभु येशु
को ज़िन्दा किया है और इस प्रकार हमारे पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञा को
उनकी संतान अर्थात् हमारे लिए पूरा किया है। जैसा कि भजन शास्त्र
अध्याय दो में लिखा है, 'आज मैंने सबको दिखा दिया है कि तुम सच
में मेरे बेटे हो और मैं तुम्हारा पिता हूँ।'"
34"परमात्मा ने प्रभु येशु के मरने के बाद उन्हें ज़िन्दा किया जिससे
उनका शरीर कभी नहीं सड़े। उन्होंने यह कहा है, 'मैं तुम्हें वे पवित्र
आशीर्वाद दूँगा जिनका वादा मैंने राजा दाविद से किया था।' 35इसी
कारण भजन शास्त्र के अन्य भाग में यह भी लिखा है, 'तुम अपने
पवित्र भक्त के मृत शरीर को सड़ने नहीं दोगे।' 36राजा दाविद तो अपने
समय में परमात्मा का उद्देश्य पूराकर मृत्यु की नींद में सो गए, और
अपने पूर्वजों के साथ शव रखने वाली गुफा में रखे गए और उनका
शरीर सड़ गया। 37परंतु जिन्हें परमात्मा ने ज़िन्दा किया, उनका शरीर
सड़ा नहीं।
38-39"इसलिए भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि इन्हीं के द्वारा तुम्हें
बुरे कर्मों से मुक्ति का संदेश सुनाया जा रहा है। मोशे के नियम और

13:32-33 भजन शास्त्र 2:7 **13:34** यशायाह 55:3 **13:35** भजन शास्त्र 16:10

शिक्षा तुम्हारे बुरे कर्मों के खाते को नहीं मिटा सके। परंतु मुक्तिदाता येशु
पर आस्था रखने वाले हर एक व्यक्ति के बुरे कर्मों के खाते को मिटाया
जा सकता है! 40इसलिए सावधान, कहीं परमात्मा के प्रवक्ताओं की यह
बात तुम पर घटित न हो, 41'ओ निंदा करने वालो! देखो, हैरान हो और
नष्ट हो जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे समय में वह कार्य कर रहा हूँ जिसे यदि
कोई तुम्हें बताए तो तुम उस पर विश्वास नहीं करोगे।'"
42पौलुस और बरनबास यहूदी सत्संग भवन से बाहर निकले। लोगों
ने+ उनसे विनती कि की अगले आराम-दिवस को ये बातें उन्हें फिर से
बताएँ। 43जब सभा समाप्त हो गई तब बहुत से यहूदी और यहूदी धर्म
अपनाने वाले लोग पौलुस और बरनबास से बात करना जारी रखा।
पौलुस और बरनबास ने उन्हें समझाया कि वे परमात्मा की कृपा की
छाया में बने रहें।

मुक्ति का शुभ संदेश सबके लिए

44आने वाले आराम-दिवस पर प्रभु येशु+ का संदेश सुनने के लिए
लगभग सारा शहर उमड़ पड़ा। 45इस भीड़ को देखकर यहूदी धर्मगुरु
जलन से भर गए। उन्होंने पौलुस का अपमान किया और उसकी हर
बात का विरोध किया।
46इस पर पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, "यह ज़रूरी था
कि परमात्मा का संदेश पहले तुम्हें सुनाया जाता। परंतु तुम ने इसको
नकार दिया और ऐसा करके अपने आपको मोक्ष पाने के लिए अयोग्य
साबित कर दिया। हम उन लोगों को संदेश सुनाते हैं जो यहूदी समाज
के नहीं हैं। 47क्योंकि प्रभु येशु* ने हमें ऐसी ही आज्ञा दी है, 'मैंने तुम्हें
दुनिया के हर समाज के लोगों के लिए प्रकाश नियुक्त किया है कि तुम
पृथ्वी की अंतिम सीमा तक मुक्ति का माध्यम बनो।'"
48दूसरे समाज के लोग यह सुनकर खुश हुए और कहने लगे कि प्रभु
येशु का संदेश कितना अच्छा है। उन सब ने जिन्हें परमात्मा ने मोक्ष
प्राप्त करने के लिए चुना था, प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की 49और प्रभु
का संदेश सारे इलाके में फैलता गया।

13:41 हबक्कुक 1:5 * **13:47** *प्रभु येशु* - या "प्रभु परमात्मा" **13:47** यशायाह 49:6

50परंतु यहूदी धर्मगुरुओं ने धनी धार्मिक महिलाओं और शहर के
नेताओं को उकसाया, और पौलुस तथा बरनबास का विरोध कर
उनको अपने प्रदेश से निकाल दिया। 51तब पौलुस और बरनबास
उनके विरोध में चेतावनी के तौर पर अपने पैरों की धूल झाड़ते हुए
इकोनियुम शहर चले गए। 52और शिष्य खुशी और पवित्र आत्मा से भरे
थे।

14

इकोनियुम में पौलुस और बरनबास

1पौलुस और बरनबास ने इकोनियुम शहर के यहूदी सत्संग भवन में
शुभ संदेश सुनाया जैसे उन्होंने अंताकिया शहर में सुनाया था, जिससे
यहूदियों और दूसरे समाज के एक बड़े समूह ने प्रभु येशु पर आस्था
प्रकट की। 2किंतु जिन यहूदियों ने प्रभु येशु पर आस्था प्रकट नहीं की
थी, उन्होंने दूसरे समाज के कुछ लोगों को पौलुस बरनबास और अन्य
भक्तों के विरुद्ध भड़का दिया। 3बहुत दिनों तक पौलुस और बरनबास
वहाँ रहे और निडर होकर प्रभु येशु की कृपा के बारे में बताया। प्रभु ने
उनकी शक्ति के चिन्हों और अद्‌भुत कामों को दिखाकर उनके संदेश
को सत्य साबित किया। 4अब शहर के लोगों में फूट पड़ गई कुछ लोग
यहूदियों के साथ हो गए और कुछ प्रभु येशु के राजदूतों के साथ।
5भड़के हुए यहूदियों और दूसरे समाज के लोगों ने अपने नेताओं
के साथ मिलकर पौलुस और बरनबास को हमला करने और पत्थरों
से मार डालने की कोशिश की। 6इस की खबर मिलने पर बरनबास
और पौलुस लिकोनिया प्रदेश के शहरों लिस्त्रा और दरबे एवं उनके
आसपास के गाँवों की ओर चले गए। 7और इन जगहों पर भी वे
मुक्तिदाता येशु का शुभ संदेश सुनाने लगे।

लिस्त्रा शहर में

8लिस्त्रा शहर में एक मनुष्य पैरों में शक्ति न होने के कारण बैठा
हुआ था। वह जन्म से लँगड़ा था और कभी चल-फिर ही न सका था।
9वह पौलुस का प्रवचन सुन रहा था। तब पौलुस ने उसकी ओर ध्यान
से देखा, और यह पाया कि उसमें प्रभु येशु के प्रति आस्था है कि वह

ठीक हो जाएगा। [10]पौलुस ने ऊँची आवाज़ से कहा, "अपने पैरों पर
सीधे खड़े हो जाओ।" वह तुरंत ही खड़ा हो गया और चलने लगा।
[11]जब लोगों ने देखा कि पौलुस ने क्या किया है, तो लोग लिकोनि
भाषा में चिल्ला उठे, "देवता मनुष्यों के रूप में अवतरित हो हमारे बीच
में उतर आए हैं!" [12]उन्होंने बरनबास को ज़्यूस देवता कहा और
पौलुस को हेरमेस देवता, क्योंकि वह प्रमुख वक्ता था। [13]ज़्यूस देवता
का पुजारी भी, जिसका मंदिर शहर के थोड़ा बाहर था, पौलुस और
बरनबास को पशु-बलि चढ़ाने के लिए बैलों और मालाओं को लेकर
भारी भीड़ के साथ नगर द्वार पर आ पहुँचा।
[14]परंतु जब राजदूत बरनबास और पौलुस ने लोगों इस हरकत को
देखा उन्होंने गुस्से में अपने कपड़े फाड़े और भीड़ की तरफ दौड़े और
चिल्लाते हुए कहा, [15]"तुम लोग यह क्या कर रहे हो? हम भी तो तुम्हारे
समान दुख-सुख भोगने वाले मनुष्य हैं। हम तुम्हें शुभ संदेश सुनाते हैं।
तुम ये सब खोकली चीज़ें मत करो पर जीवित परमात्मा पर आस्था
रखो जिन्होंने आकाश, पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उनमें है, सबको
रचा है। [16]उन्होंने बीते समय में पूरी दुनिया के लोगों को अपनी-अपनी
मान्यता के अनुसार चलने दिया। [17]फिर भी वह मनुष्य जाति को
अपनी भलाई का प्रमाण देते रहे। वह आकाश से तुम्हें बारिश और
अलग-अलग मौसमों में अच्छी उपज प्रदान करते हैं और तुमको भोजन
और मन की खुशी से तृप्त भी करते रहे हैं।" [18]उनके इतना समझाने के
बाद ही पौलुस और बरनबास ने लोगों को बड़ी मुश्किल से रोका कि
उनके लिए बलि न चढ़ाएँ।
[19]पर अंताकिया और इकोनियुम शहर के कुछ यहूदी वहाँ आ पहुँचे।
उन्होंने लोगों को अपने पक्ष में करके पौलुस को पत्थरों से मारा और
उन्हें मृत समझकर शहर के बाहर खींच ले गए। [20]परंतु जब शिष्य
पौलुस के चारों ओर इकट्ठा हुए तब वह उठे और शहर में गए। दूसरे
दिन बरनबास के साथ वह दरबे शहर को चले गए।
[21]पौलुस और बरनबास ने दिरबे शहर में शुभ संदेश सुनाया और वहाँ
अनेक शिष्य बनाकर लिस्त्रा, इकोनियुम और अंताकिया शहर की
ओर लौटे। [22]वे शिष्यों के मन मज़बूत करते और येशु भक्ति में स्थिर
रहने के लिए उनमें जोश भरते हुए कहते थे, "हमें परमात्मा के साम्राज्य

में जाने के लिए बहुत संकट झेलने होंगे।” 23पौलुस और बरनबास ने
हर सत्संग में अनुभवी सेवक नियुक्त किए और प्रार्थना एवं उपवास
कर उन्हें प्रभु* को, जिनपर उनकी आस्था थी, समर्पित किया। 24तब
पौलुस और बरनबास पिसिदिया से होते हुए पंफिलिया प्रदेश पहुँचे,
25और पेरगे शहर में शुभ संदेश सुनाकर अतालिया शहर में गए।
26वहाँ से वे जलमार्ग द्वारा अंताकिया शहर पहुँचे जहाँ उनकी यात्रा
शुरू हुई थी। अंताकिया शहर के सत्संगियों ने उनके लिए प्रार्थना की
थी कि परमात्मा की कृपा उन्हें उनके कार्य में सफल करें, जो अब
पूरा हो चुका था। 27अंताकिया शहर पहुँचकर पौलुस और बरनबास ने
सत्संगियों को इकट्ठा किया और उन्हें बताया कि परमात्मा ने उनका
साथ देकर कैसे-कैसे महान कार्य किए और जो यहूदी समाज से नहीं
हैं उनके लिए भी मुक्तिदाता येशु पर आस्था रखने का दरवाज़ा खोल
दिया है। 28और अंताकिया में वे शिष्यों के साथ बहुत दिन तक रहे।

15

दो मतों में बहस

1अब कुछ लोग यहूदिया प्रदेश से अंताकिया शहर में आकर भक्त
भाइयों और बहनों को यह सिखाने लगे, “मोशे के नियम और शिक्षा
के अनुसार जब तक तुम्हारा चीरा-संस्कार नहीं होगा, तुम मुक्ति प्राप्त
नहीं कर सकते।” 2इस विषय पर जब पौलुस और बरनबास के साथ
उनकी बहुत बहस हुई, तब अंताकिया शहर के सत्संग के सत्संगियों
ने यह फैसला किया कि पौलुस, बरनबास और उनमें से अन्य व्यक्ति
इस बात के हल के लिए यरूशलम शहर में मुक्तिदाता येशु के राजदूतों
और सत्संग के अनुभवी सेवकों के पास जाएँ। 3तो सत्संग ने इन लोगों
को यरूशलम भेज दिया। उन्होंने फिनिके और समेरिया प्रदेश से होकर
यात्रा की और वहाँ सब भक्त भाइयों और बहनों को बताया कि जो
यहूदी समाज से नहीं हैं, वे भी अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप कर रहे हैं
और प्रभु येशु पर अपनी आस्था प्रकट कर रहे हैं। यह बात सुनकर
सभी सत्संगियों को बहुत खुशी हुई।

---

* **14:23** *प्रभु* - या, “प्रभु परमात्मा” या, “प्रभु येशु”

4जब पौलुस बरनबास और कुछ अन्य लोग यरूशलम पहुँचे तो
वहाँ के राजदूतों, सत्संगियों और अनुभवी सेवकों ने उनका स्वागत
किया। पौलुस और बरनबास ने बताया कि परमात्मा ने उनके माध्यम
से कैसे-कैसे महान कार्य किए हैं। 5इस पर फरीसी पंथ के कुछ लोग
जिन्होंने येशु भक्ति अपनाई थी, उठकर कहने लगे, "उन येशु-भक्तों
को भी चीरा-संस्कार लेना चाहिए जो यहूदी समाज से नहीं हैं और उन्हें
आज्ञा दी जानी चाहिए कि वे मोशे के नियम और शिक्षा का पालन
ज़रूर करें।"

सत्संग परिषद

6इस बात पर विचार करने के लिए राजदूत और सत्संग के अनुभवी
सेवक इकट्ठा हुए। 7बहुत बातचीत के बाद पतरस ने उठकर कहा,
"भाइयो, तुम्हें पता है कि कुछ समय पहले परमात्मा ने तुम में से मुझे
चुना कि वे लोग जो यहूदी समाज से नहीं हैं मुझसे प्रभु येशु का शुभ
संदेश सुनें और विश्वास करें। 8परमात्मा लोगों के दिलों को जानता है,
और उन्होंने उन लोगों को पवित्र आत्मा देकर जो यहूदी नहीं है। यह
इस बात की पुष्टि है की वह उन्हें हमारी ही तरह स्वीकार करते हैं।
9और प्रभु में आस्था द्वारा उनका मन शुद्धकर हम यहूदियों और उनके
बीच कोई भेद नहीं रखा।
10"तो तुम अब परमात्मा को क्यों परखते हों, और शिष्यों के कंधों
पर यह भारी बोझ क्यों लादते हो जिसे न हम और न हमारे पूर्वज ढो
सके हैं? 11हमारा विश्वास तो यह है कि प्रभु येशु की कृपा के द्वारा हम
यहूदियों को और जो यहूदी समाज से नहीं हैं दोनों को बिना किसी भेद
भाव के मुक्ति प्राप्त हुई है।"
12सभी लोग चुप रहे और बरनबास और पौलुस की बातें सुनने लगे
कि कैसे उनके द्वारा परमात्मा ने उन लोगों के लिए जो यहूदी समाज से
नहीं हैं बहुत सारे चमत्कार और अद्‌भुत काम किए हैं।
13जब बरनबास और पौलुस बोल चुके तब याकोब ने कहा, "भाइयो,
मेरी बात सुनो। 14शिमोन पतरस ने हमें बताया है कि परमात्मा की
मुख्य योजना क्या है। उन्होंने बहुत से उन लोगों को भी अपने लोग
बनानें के लिए चुना है जो यहूदी समाज से नहीं हैं। 15इस बात

का प्रमाण परमात्मा के प्रवक्ताओं की बातों में मिलता है, जो
परमात्मा-ग्रंथ में लिखीं हैं,
16 'इसके बाद मैं लौटूँगा
और राजा दाविद के गिरे हुए निवास-स्थान को
फिर खड़ा करूँगा।
उसके खंडहरों का फिर से निर्माण करूँगा,
और उसे मज़बूत करूँगा
17 जिससे दूसरे देश के लोग
मुझ प्रभु की खोज करें,
अर्थात् दुनिया के हर समाज के लोग
जो मेरी भक्ति करते हैं।
मैं, प्रभु परमात्मा यह कहता हूँ।
18 मैंने इसकी प्रतिज्ञा बहुत समय पहले कर दी थी।'
19"इस कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अलग-अलग समाज
से लोग परमात्मा की शरण में आ रहे हैं, तो उन्हें हम परेशानी में न डालें।
20परंतु उन्हें हम लिख भेजें कि वे मूर्तियों की अशुद्धताओं से, अवैध
सम्बन्धों से, गला घोटे हुए पशुओं के मांस+ और खून के खान-पान से बचें।
21"हमें याद रखना चाहिए कि मोशे के नियम और शिक्षा का
शहर-शहर में बहुत सालों से प्रचार किया जाता रहा है, और उसका
पाठ हर एक आराम-दिवस पर यहूदी सत्संग भवनों में किया जाता है।"

परिषद का फैसला

22तब सारे सत्संगियों, राजदूतों और अनुभवी सेवकों ने फैसला किया कि
अपने बीच से कुछ लोगों को चुनकर पौलुस और बरनबास के साथ उन्हें
सीरिया में अंताकिया शहर भेजें। उन्होंने यहूदा, जो बरसब्बा भी कहलाता था
और सीलास के जो अनुभवी सेवक थे। 23उनके हाथ से भेजा पत्र यह था।
अंताकिया, सिरिया, किलिकिया निवासी भक्त भाइयों और बहनों
को जो यहूदी समाज के नहीं हैं, तुम्हारे यहूदी भाइयों, राजदूतों और
सत्संग के अनुभवी सेवकों की ओर से नमस्कार।

15:17 आमोस 9:11-12; यशायाह 45:21

[24]हमने सुना है कि हमारे यहाँ से छोड़ कर गए कुछ भाइयों ने अपनी
बातों से तुमको उलझन में डाल दिया है और तुम्हारे मन को परेशान
कर दिया है। हमने उनको ऐसा कोई अधिकार नहीं दिया था कि वे ये
बातें तुमसे कहें। [25]इसलिए हमने सबकी मर्ज़ी से निर्णय लिया है कि
कुछ व्यक्तियों को चुनें और उन्हें प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ,
[26]जिन्होंने हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के नाम के लिए अपने जीवन में
खतरे उठाए, तुम्हारे पास भेजें। [27]हम यहूदा और सीलास को भी भेज
रहे हैं। वे स्वयं अपने मुँह से इन बातों को बताएँगे।
[28]पवित्र आत्मा की सहमति से हमने यह फैसला लिया है कि इन
ज़रूरी बातों को छोड़कर तुम पर और कोई और बोझ न लादा जाए
- [29]मूर्तियों को अर्पित पशुओं के मांस, खून के खान-पान से, गला घोटे
हुए पशुओं के मांस से+ और अवैध सम्बन्ध से बचो। इनसे दूर रहने
में तुम्हारी भलाई है।
नमस्कार।
[30]तब वे सब विदा हुए और अंताकिया शहर पहुँचे। उन्होंने सब
सत्संगियों को बुलाया और उन्हें यह पत्र दिया। [31]उसमें लिखे सुंदर
संदेश को पढ़कर वे खुश हुए।
[32]यहूदा और सीलास स्वयं परमात्मा के प्रवक्ता थे और उन्होंने भी
भक्त भाइयों और बहनों को मज़बूत किया और आशा दिलाई। [33]यहूदा
और सीलास कुछ दिन तक अंताकिया में रहे। उसके बाद वे अपने
भेजनेवाले राजदूतों के पास लौटने के लिए शांति के साथ भाइयों से
विदा हुए। [34-35]परंतु पौलुस और बरनबास अंताकिया में रह गए और
अन्य बहुत लोगों के साथ प्रभु के वचन की शिक्षा देते और शुभ संदेश
सुनाते रहे।

पौलुस और बरनबास का अलग होना

[36]कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "आओ, जिन-जिन शहरों
में हमने प्रभु येशु का शुभ संदेश* सुनाया था, वहाँ चलें और भक्त भाइयों

---

* **15:36** *प्रभु येशु का शुभ संदेश* - या, "प्रभु का शब्द" है, लेकिन इसका अर्थ प्रभु के बारे में शुभ संदेश है।

और बहनों को देखे कि वे कैसे हैं।” 37बरनबास की इच्छा थी कि
योहन-मरकुस को भी ले चलें, 38परंतु पौलुस ने यह ठीक नहीं समझा कि
जिस व्यक्ति ने उन्हें पंफिलिया प्रदेश में छोड़ दिया था और जो उनके
साथ अब कार्य नहीं कर रहा था, उसे अपने साथ ले जाएँ। 39इस पर
उनमें गंभीर मतभेद हो गया, यहाँ तक कि वे एक-दूसरे से अलग हो गए।
बरनबास मरकुस को लेकर जलमार्ग से साइप्रस द्वीप चले गए। 40पौलुस
ने सीलास को चुना, और जब वे यात्रा के लिए निकले, तो भक्त भाइयों
और बहनों ने उनके लिए प्रार्थना की कि प्रभु की कृपा और सुरक्षा
की छाया उन पर बनी रहे। 41तब वे वहाँ से चल पड़े और सीरिया एवं
किलिकिया प्रदेशों से होते हुए सत्संगियों के मनों को मज़बूत करने लगे।

16

राजदूत पौलुस का तिमोथियस को साथ लेना

1पौलुस दरबे और लिस्त्रा शहर पहुँचे। वहाँ तिमोथियस नामक
शिष्य था जो येशु-भक्त यहूदी महिला का पुत्र था, पर उसका पिता
ग्रीस देश से था। 2लिस्त्रा और इकोनियुम शहरों में रहने वाले भक्तों में
तिमोथियस का बड़ा मान था, 3इसलिए पौलुस की इच्छा थी कि उसे
अपने साथ रख लें। तो पौलुस ने तिमोथियस का चीरा-संस्कार कराया,
उसने ऐसा इसलिए किया ताकि स्थानीय यहूदी तिमोथियस को
स्वीकार कर लें क्योंकि सब जानते थे कि उसका पिता ग्रीक समाज से
था जिसमें चीरा-संस्कार नहीं होता। 4जो फैसला यरूशलम में प्रभु येशु
के राजदूतों और सत्संग के अनुभवी सेवकों ने लिया था उसे पौलुस,
सीलास और तिमोथियस ने शहर-शहर घूमकर उन येशु-भक्तों तक
पहुँचाया जो यहूदी नहीं थे कि वे लोग उसका पालन करें। 5सत्संग येशु
भक्ति में मज़बूत होते गए और हर रोज़ सत्संगियों की संख्या बढ़ती
गयी।

पौलुस को दिव्य दर्शन

6पवित्र आत्मा ने राजदूत पौलुस, सीलास और तिमोथियस को
आसिया प्रदेश में संदेश सुनाने को मना कर दिया। इसलिए वे फ्रूगिया
और गलातिया प्रदेश से होकर गए। 7जब वे मिसिया प्रदेश की सीमा

पर पहुँचे तब उन्होंने बिथिनिया प्रदेश में जाने की कोशिश की पर प्रभु
येशु की आत्मा ने इसकी आज्ञा नहीं दी। [8]इसलिए वे मिसिया से होकर
त्रोआस शहर में आए।
[9]वहाँ पौलुस ने रात में दिव्य दर्शन पाया कि कोई मैसेडोनिया
प्रदेश का एक व्यक्ति उनके सामने खड़ा हुआ विनती कर रहा है,
"मैसेडोनिया में आइए और हमारी सहायता कीजिए।" [10]ज्योंही पौलुस
ने यह दर्शन पाया हम लोग मैसेडोनिया पहुँचने की कोशिश करने लगे,
क्योंकि हमने जान लिया था कि परमात्मा उन लोगों को शुभ संदेश
सुनाने के लिए हमें बुला रहे हैं।

धनी महिला का मन-परिवर्तन

[11]त्रोआस से हमने* समुद्री मार्ग से यात्रा शुरू की तो सीधे समोत्राके के
द्वीप तक गए, और दूसरे दिन नियापोलिस बंदरगाह पहुँच गए। [12]फिर
स्थल मार्ग से फिलिपी शहर आए जो मैसेडोनिया प्रदेश के ज़िले का
एक प्रमुख शहर और रोम का उपनिवेश है। हम फिलिपी शहर में कुछ
दिन रहे।
[13]आराम-दिवस पर हम शहर-फाटक के बाहर नदी किनारे पर गए,
क्योंकि हमारा अनुमान था कि वहाँ प्रार्थना करने का कोई स्थान
होगा। हम नदी किनारे बैठ गए और वहाँ इकट्ठा हुई महिलाओं से
बातचीत करने लगे। [14]उनमें लिडीया नाम की एक महिला थी जो
परमात्मा का आदर-सम्मान करती थी। वह थियातिरा शहर की रहने
वाली और बहुमूल्य बैंजनी कपड़े का व्यापार करती थी। वह हमारी
बातें सुना करती थी और प्रभु येशु* ने लिडीया का मन खोला कि वह
पौलुस द्वारा दिए जा रहे शुभ संदेश को अपनाए। [15]लिडीया ने और
उसके साथ रह रहे सब लोगों ने समर्पण-स्नान लिया और लिडीया
ने हम से विनती की, "यदि आप मानते हैं कि मैं प्रभु येशु में आस्था
रखती हूँ तो मेरे साथ आइए और मेरे घर में ठहरिए।" इस तरह उसने
हमें मना लिया कि हम उसके घर जाएँ।

---

* **16:11** *हमने* - ऐसा लगता है कि लेखक लूकस ने यहाँ से पौलुस के साथ यात्रा का आरंभ किया क्योंकि वह "हम" शब्द का अपने वाक्यों में इस्तेमाल करता है। * **16:14** *प्रभु येशु* - या, "प्रभु परमात्मा"

पौलुस और सीलास जेल में

16एक दिन हम प्रार्थना-स्थान को जा रहे थे तो हमें एक गुलाम
लड़की मिली जिसमें भविष्य बताने वाली अशुद्ध आत्मा थी। वह लोगों
का भविष्य बताकर अपने मालिकों के लिए बहुत पैसा कमा लेती थी।
17वह राजदूत पौलुस के और हमारे पीछे लग गई और चिल्लाने लगी, "ये
लोग परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुम लोगों को मुक्ति के मार्ग का संदेश
देते हैं।"
18वह बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही। अंत में पौलुस तंग
आकर उसकी ओर मुड़े और उस लड़की में बैठी अशुद्ध आत्मा से
बोले, "मुक्तिदाता प्रभु येशु के नाम से मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि इसमें
से निकल जा।" उसी समय भविष्य बताने वाली अशुद्ध आत्मा उस
गुलाम लड़की में से निकल गई।
19जब लड़की के मालिकों ने देखा कि उनके पैसे कमाने का
साधन खत्म हो गया तो उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ा और
उन्हें उच्चाधिकारियों के पास चौक में घसीटकर ले गए। 20-21उन्होंने
अधिकारीयों के सामने उन्हें पेश किया और कहा, "ये लोग यहूदी हैं
और शहर में हंगामा मचा रहे हैं। ये ऐसी प्रथाओं का प्रचार करते हैं
जिनको मानना या करना हम रोम नागरिकों * के लिए मना है।"
22पौलुस और सीलास के विरुद्ध भीड़ इकट्ठा हो गई। इस पर
अधिकारियों ने पौलुस और सीलास के कपड़े फाड़ डाले और उनको
बेंत लगाने का आदेश दिया। 23उन्होंने उन्हें बेतों से बहुत पीटा और
जेल में डाल दिया और जेलर को आदेश दिया कि उन्हें कड़ी सुरक्षा
में रखा जाए। 24जेलर ने यह आदेश पाकर उन्हें जेल के भीतरी कमरे में
डाल दिया और उनके पैरों को फट्टों और जंजीरों से कस दिया।

पौलुस और सीलास की जेल से मुक्ति

25लगभग आधी रात के समय पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे
और परमात्मा के गुणगान में भजन गा रहे थे, और जेल के कैदी यह

---

* **16:20-21** *रोम नागरिकों* - यद्यपि फिलिपी शहर ग्रीस देश में स्थित था, फिर भी यह एक रोमन उपनिवेश था।

सुन रहे थे। [26]इतने में एकाएक भारी भूकंप आया जिससे जेल की नींव
हिल गई। पलभर में सब दरवाज़े खुल गए और सब कैदियों की जंजीरें
खुल गईं। [27]जब जेलर नींद से जागा और उसने जेल के दरवाज़ों को
खुला देखा तो यह सोचकर कि कैदी भाग गए हैं, उसने अपनी तलवार
खींच ली और वह अपने आप को मारने ही वाला था [28]कि पौलुस ने
ऊँची आवाज़ में पुकारकर कहा, "रूक जाओ अपने आपको हानि न
पहुँचाओ, क्योंकि हम सब यहीं हैं।"

[29]तब जेलर ने मशाल मँगाई और दौड़कर अंदर आया। वह काँपता
हुआ पौलुस और सीलास के चरणों पर गिर पड़ा। [30]जेलर उन्हें बाहर
ले गया और बोला, "सज्जनो, मुझे मुक्ति पाने के लिए क्या करना
चाहिए?"

[31]उन्होंने उत्तर दिया, "प्रभु येशु पर आस्था रखो तो तुम और तुम्हारा
परिवार मुक्ति पाएगा।" [32]पौलुस और सीलास ने उसको और उसके
परिवार के सब सदस्यों को प्रभु येशु का शुभ संदेश+ सुनाया। [33]जेलर
उसी रात उनको ले गया और उसने उनके घाव धोए। फिर अपने सारे
परिवार के साथ उसी समय समर्पण-स्नान लिया। [34]उसके बाद वह
पौलुस और सीलास को अपने घर लाया और वहाँ उनको भोजन
कराया। जेलर ने अपने परिवार के साथ खुशी मनाई, क्योंकि उसने
और उसके साथ रह रहे सब लोगों ने परमात्मा पर आस्था प्रकट की
थी।

[35]दिन होने पर अधिकारियों ने सिपाहियों के हाथ यह आदेश भेजा
कि पौलुस और सीलास छोड़ दिए जाएँ। [36]जेलर ने पौलुस को बताया,
"अधिकारियों ने आपको छोड़ देने के लिए आदेश भेजा है। अब आप
दोनों आज़ाद हैं, इसलिए शांति से चले जाइए।"

[37]पर पौलुस ने सिपाहियों से कहा, "उन्होंने बिना किसी सुनवाई, हम
रोम नागरिकों को लोगों के सामने पीटा और जेल में डाल दिया और
अब हमें चुपके जेल से निकाल रहे हैं? ऐसा नहीं चलेगा। वे स्वयं आएँ
और हमें जेल से बाहर ले जाएँ।"

[38]सिपाहियों ने अधिकारियों को ये बातें बता दीं। यह सुनकर कि
पौलुस और सीलास रोम नागरिक हैं, वे डर गए [39]और आकर उनसे
माफी माँगने लगे। वे उन्हें जेल से बाहर ले आए और उनसे विनती कि

की वे शहर से विदा हो जाएँ। 40पौलुस और सीलास जेल से निकलकर
लिडीया के घर गए। वे भक्त भाइयों और बहनों से मिले और उनमे
जोश भरकर वहाँ से विदा हो गए।

17

थिसलुनीके शहर में

1पौलुस और सीलास अमफीपोलिस और अपोलोनिया शहरों से होते हुए
थिसलोनीकी शहर में आए जहाँ यहूदियों का सत्संग भवन था। 2हमेशा
की तरह पौलुस वहाँ सत्संग में गए और लगातार तीन आराम-दिवस तक
उन्हें परमात्मा-ग्रंथ पर प्रवचन देते रहे। 3और परमात्मा-ग्रंथ की बातों को
समझाकर इस बात का प्रमाण देते रहे कि यह तय था कि मुक्तिदाता की
दर्दनाक मौत होगी और वह बाद में ज़िन्दा हो जाएँगे। तब पौलुस ने कहा
"जिन येशु के बारे में मैं तुम्हें बता रहा हूँ, यह वही मुक्तिदाता हैं।" 4उनमें से
बहुत से यहुदी समाज के लोगों ने पौलुस की कही हुई बातों पर विश्वास
किया, और वे पौलुस और सीलास के समान प्रभु येशु के भक्त बन गए।
बहुत से दूसरे समाज के लोगों ने जो परमात्मा का आदर सम्मान करते हैं
और कई महत्वपूर्ण महिलाओं ने भी संदेश पर विश्वास किया।
5पर जब अन्य यहूदी लोगों ने इसे देखा तो वे जलन से भर गए और कुछ
गुंडों को लेकर और भीड़ इकट्ठा कर शहर चौक में हुल्लड़ मचाने लगे। वे
यासोन के घर में पौलुस और सीलास की तलाश में ज़बरदस्ती घुस गए
ताकि उन्हें शहर-सभा के सामने ले जा सकें। 6उन्हें वहाँ न पाकर वे यासोन
और कई भाइयों को शहर के उच्चाधिकारियों के पास खींच लाए और
चिल्लाने लगे, "हर जगह गड़बड़ी फैलाने वाले ये लोग यहाँ भी आ पहुँचे हैं
7और यासोन के मेहमान हैं। ये सब सम्राट के [कानूनों का विरोध] करते
हैं और कहते हैं कि एक दूसरा सम्राट भी है, जिसका नाम येशु है।"
8शहर के उच्चाधिकारी और भीड़ ये बातें सुनकर उलझन में पड़ गई। 9तब
उन्होंने यासोन और अन्य शिष्यों की ज़मानत मिलने पर ही उन्हें रिहा किया।

बेरोया शहर में नई कठिनाइयाँ

10भाइयों ने पौलुस और सीलास को रातोंरात बेरोया शहर में भेज
दिया। वहाँ पहुँचने पर वे यहूदी सत्संग भवन में गए। 11बेरोया के निवासी

थिसलोनीकी शहर के निवासियों के मुकाबले चीज़ों को सीखने में अधिक
ध्यान देते थे, क्योंकि वे पौलुस की बातों में बहुत रुचि रखते थे। वे हर दिन
परमात्मा-ग्रंथ में खोजा करते थे कि पौलुस और सीलास जो सीखा रहे हैं वह
सच है या नहीं। 12इसका फल यह मिला की उनमें से बहुत-से लोगों ने प्रभु
येशु पर आस्था प्रकट की, जिनमें अनेक जाने माने ग्रीक स्त्री-पुरुष भी थे।
13किंतु जब थिसलोनीकी शहर के कुछ यहूदियों को पता चला कि
पौलुस बेरोया शहर में परमात्मा का संदेश सुना रहे हैं तब वे वहाँ भी
पहुँचकर हलचल मचाने और लोगों को भड़काने लगे। 14तब भाइयों ने
पौलुस और कुछ लोगों को तुरंत विदा कर दिया कि पौलुस समुद्र-तट
पर चले जाएँ, पर सीलास और तिमोथियस बेरोया शहर में ही रह
गए। 15पौलुस को पहुँचाने वाले उसे एथेंस शहर तक ले गए और वहाँ
पौलुस ने उन्हें सीलास और तिमोथियस के लिए यह संदेश दिया कि वे
तुरंत चले आएँ। तब वे पौलुस को विदा कर वहाँ से लौट गए।

एथेंस शहर में

16जब राजदूत पौलुस एथेंस शहर में सीलास और तिमोथियस का इंतज़ार
कर रहे थे, तो शहर में देवी-देवताओं की मूर्तियों की भरमार देखकर उनके
मन में बहुत पीड़ा हुई। 17इस कारण पौलुस ने यहूदी सत्संग भवन में यहूदियों
और परमात्मा का आदर सम्मान करने वाले अन्य लोगों से इस बारे में
बातचीत की। इसके साथ-साथ वह रोज़ाना शहर के चौक में जाते थे और
जो कोई वहाँ होता, उससे भी ऐसा ही किया करते थे।
18कुछ एपिक्यूरी* और स्टोइकवादी* दार्शनिकों से भी पौलुस की बातचीत
हुई। कई बोले, “यह मूर्ख बातूनी कहना क्या चाहता है?” दूसरों ने कहा,

---

* **17:18** *एपिक्यूरी* - एपिक्यूरी ने ग्रीक दर्शनशास्त्री एपिक्यूरस (सन् 307 बी.सी.ई.) का अनुसरण किया। वे अपने गुरु से ज्ञान प्राप्त करते थे और उनका मानना था कि यह ज्ञान उन्हें मानसिक और शारीरिक दर्द से दूर रखेगा और वे सुखी रहेंगे। वे अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन और मोक्ष प्राप्ति में विश्वास नहीं करते थे। * **17:18** *स्टोइकवादी* - स्टोइकवादियों ने ज़ेनो नामक ग्रीक दर्शनशास्त्री (सन् बी.सी.ई. 334) का अनुसरण किया। ज़ेनो ने सिखाया कि प्रकृति ही परमात्मा थी, इसलिए प्रार्थना की कोई आवश्यकता नहीं और जो कुछ होता है वो भाग्य से होता है। उन्होंने कहा कि प्रकृति सिखाती है कि सब लोग समान थे और हमें सभी बुरी स्थितियों में आत्म-नियंत्रण के द्वारा खुश रहना चाहिए। पौलुस भी मानते थे कि आत्म-नियंत्रण महत्वपूर्ण था और सभी लोग समान थे, लेकिन उनकी शिक्षा (और प्रभु येशु की शिक्षा) सृष्टिकर्ता पिता परमात्मा के बारे में थी जो हमारी परेशानियों में हमारे साथ रहते और हमारी प्रार्थना सुनते हैं। यह शिक्षा अलग थी।

"विदेशी देवी-देवताओं का प्रचारक लगता है।" उन्होंने ऐसा इसलिए कहा
क्योंकि पौलुस येशु और अनास्तासिस* के शुभ संदेश का प्रचार कर रहे थे।
19तब वे लोग पौलुस को अपने साथ अरयोपगस नामक दार्शनिको
की विचार में ले गए वहाँ उन्होंने पौलुस से पूछा, "क्या हम जान सकते
हैं कि आप यह कौन-सी नई शिक्षा दे रहे हैं? 20आप कुछ ऐसी बातें
कहते हैं जो हमने कभी नहीं सुनी। हम जानना चाहते हैं कि इनका क्या
अर्थ है।" 21एथेंस शहर के मूल निवासी और परदेशी जो वहाँ रहते थे,
नई-नई बातें कहने और सुनने के अलावा और किसी काम में समय
नहीं बिताते थे।

दार्शनिक सभा में पौलुस का भाषण

22तब पौलुस सभा के बीच खड़े होकर कहने लगे, "एथेंस निवासियो,
मैं देखता हूँ कि आप बड़े धर्मप्रेमी हैं। 23जब मैं यहाँ-वहाँ घूमते हुए
आपके उन स्थानों को देख रहा था जहाँ आप लोग पूजा करते हैं तब
मुझे एक वेदी मिली जिस पर लिखा था, 'अनजान परमात्मा के लिए।'
यह परमात्मा, जिनकी आप बिना जाने पूजा करते हैं, मैं आपको उन्हीं
के बारे में बताता हूँ। 24इन्हीं परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड को और इसकी
हर एक चीज़ को रचा है। वह आकाश और पृथ्वी के प्रभु हैं। वह
मनुष्य के बनाए मंदिरों में नहीं रहते। 25उन्हें किसी व्यक्ति की मदद
की ज़रूरत नहीं है। वह सभी लोगों को जीवन, सांस और बाकी सब
कुछ देते हैं। 26परमात्मा ने एक आदमी और एक औरत द्वारा सभी
अलग-अलग समाज के लोगों को बनाया है कि वे सारी पृथ्वी पर बस
जाएँ। परमात्मा ने पहले से ही यह तय कर रखा था कि वे लोग कब
और कहाँ रहेंगे।
27"क्योंकि परमात्मा का लक्ष्य था कि लोग उनको ढूँढ़े और
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उन्हें प्राप्त भी कर लें। हालाँकि वह हममें से किसी से दूर
नहीं हैं, क्योंकि 28उन्हीं की शक्ति से हम जीवित रहते, चलते-फिरते

---

* **17:18** *येशु और अनास्तासिस* - "अनास्तासिस" लड़कियों का रखा जाने वाला नाम है। उस समय जो लोग पौलुस को सुन रहे थे, उन्हें गलतफहमी हो गई कि पौलुस किसी देवी "अनास्तासिस" और किसी "येशु" नामक देवता के बारे में बात कर रहे हैं। अनास्तासिस का सही अर्थ है, "मरे हुए लोगों का ज़िन्दा होना।"

और अपना अस्तित्व रखते हैं। आपके ही कुछ कवियों ने कहा है,
'हम भी परमात्मा की संतान हैं।'
29"अब यदि हम उनकी संतान हैं, तो हमें समझना चाहिए कि
परमात्मा सोना, चाँदी और पत्थर की प्रतिमा के समान नहीं हैं। ये
सब कौशलपूर्ण कलाकारों की कल्पनाओं की कलाकृति मात्र है।
30परमात्मा ने बीते समय में पूरी दुनिया के लोगों को अपनी मर्ज़ी के
अनुसार चलने दिया, परंतु अब उनकी आज्ञा है कि हर जगह के सब
लोग अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करें। 31क्योंकि परमात्मा ने एक दिन
तय कर दिया है जब वह पहले से ही नियुक्त प्रभु येशु द्वारा संसार के
लोगों का परमात्मा की आज्ञाओं के अनुसार न्याय करेंगे। परमात्मा ने
प्रभु येशु की मौत के बाद उन्हें ज़िन्दा कर सबूत दिया कि वह ही सब
लोगों के अच्छे और बुरे कर्मों का बिना भेद भाव न्याय करेंगे।"
32मरे हुए लोगों के ज़िन्दा होने की बात सुनकर कुछ लोग पौलुस
का मज़ाक उड़ाने लगे। परंतु कुछ अन्य लोग बोले, "हम इस बारे में
आपसे फिर कभी सुनेंगे।" 33तब पौलुस उनके बीच से चले गए। 34फिर
भी कुछ लोग पौलुस के साथ हो लिए और प्रभु येशु पर आस्था रखने
लगे। इनमें दार्शनिक सभा का सदस्य दियोनिसियस, दामारिस नाम की
एक महिला, और कुछ अन्य लोग भी थे।

18

कुरिंथ शहर में

1राजदूत पौलुस दार्शनिक सभा में शुभ संदेश सुनाने के बाद, एथेंस
से विदा होकर कुरिंथ शहर में आए। 2वहाँ उनको अकुलस नामक
एक यहूदी मिला जिसकी जन्मभूमि पोंतुस प्रदेश थी। वह अपनी पत्नी
प्रिस्का के साथ कुछ समय पहले ही इटली देश के प्रमुख शहर रोम से
आया था क्योंकि सम्राट क्लौदियस ने सब यहूदियों को रोम से निकल
जाने का आदेश दिया था। 3अकुलस, प्रिस्का और पौलुस इन सब का
व्यवसाय तंबू बनाने का था इसलिए इन तीनों ने साथ रहने और काम
करने का फैसला किया।
4पौलुस हर आराम-दिवस पर यहूदी सत्संग भवन में यहूदी और
ग्रीक लोगों को मुक्तिदाता के बारे में समझाकर विश्वास दिलाने की

कोशिश करते थे। [5]और जब सीलास और तिमोथियस मैसेडोनिया
से आ गए, तो पौलुस ने अपना सारा समय यहूदियों में यह शुभ संदेश
प्रचार करने में बिताया कि येशु ही मुक्तिदाता हैं। [6]परंतु जब ये लोग
पौलुस का विरोध करने और निंदा करने लगे तब पौलुस ने इस पर
आपत्ति जताकर कहा, "हमारा साथ यहीं तक था। अपनी करनी के
लिए तुम स्वयं ज़िम्मेदार हो। मैं निर्दोष हूँ। अब से मैं उन लोगों के बीच
प्रचार करूँगा जो यहूदी समाज के नहीं हैं।"

[7]वहाँ से पौलुस तितयस यूस्तुस नामक रोम के एक व्यक्ति के यहाँ
आ गए जो परमात्मा का भक्त था और उसका घर यहूदी सत्संग भवन
के पास ही था। [8]पौलुस की बातें सुनकर सत्संग भवन के मुखिया
क्रिसपस और उनके साथ जितने लोग रहते थे तथा कुरिंथ के अनेक
निवासियों ने प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की और समर्पण-स्नान लिया।

[9]तब प्रभु येशु ने एक रात पौलुस को दिव्य दर्शन दिया और यह कहा,
"इन लोगों से डरो मत! बोलते जाओ और चुप मत रहो, [10]क्योंकि
मैं तुम्हारे साथ हूँ। कोई मनुष्य तुम पर हमला कर तुम्हारा नुकसान
नहीं कर पाएगा, क्योंकि इस शहर में मेरे बहुत से भक्त हैं।" [11]पौलुस
परमात्मा के संदेश की शिक्षा देते हुए उनके बीच डेढ़ साल तक रहे।

प्रशासक गैलियो और पौलुस

[12]जिस समय गैलियो ग्रीस देश के आखेया प्रदेश का प्रशासक था,
कुछ यहूदियों ने एका कर पौलुस पर हमला कर दिया। उन्होंने पौलुस
को पकड़ा और न्यायालय ले गए। [13]उन्होंने गैलियो से कहा, "यह
मनुष्य लोगों को परमात्मा की भक्ति की ऐसी बातें सिखाता है जो मोशे
के नियम और शिक्षा के विरुद्ध हैं।"

[14]पौलुस कुछ बोलने ही वाले थे कि गैलियो ने यहूदियों से कहा,
"यदि यह कोई अन्याय या घोर अपराध का मामला होता तो मैं ज़रूर
तुम यहूदियों की बात पर ध्यान देता। [15]किंतु यह वाद-विवाद शब्दों
और नामों और तुम्हारे यहूदी नियमों के बारे में है, तो तुम्हीं इनसे
निपटो। मैं इस प्रकार के मामलों में अपना समय बेकार नहीं करना
माँगता।" [16]और उसने उन्हें कोर्ट के कमरे से धक्का दिलवाकर निकाल
दिया।

[17]तब सब ने यहूदी सत्संग भवन के मुखिया सोस्थिनेस को पकड़कर
कोर्ट के सामने ही पीटा, पर गैलियो ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

सीरिया देश लौटना

[18]राजदूत पौलुस कुरिंथ शहर में भक्त भाइयों और बहनों के साथ
बहुत दिन रहे और फिर उनसे विदा लेकर जलमार्ग द्वारा सीरिया देश
को चले गए। उनके साथ प्रिस्का और अकुलस भी थे। किसी संकल्प
के कारण पौलुस ने केनखराई शहर में अपने सिर का मुंडन करा
लिया।
[19]इफिसुस शहर पहुँचकर पौलुस ने प्रिस्का और अकुलस को
वहीं छोड़ दिया, और स्वयं यहूदी सत्संग भवन में जाकर यहूदियों से
मुक्तिदाता येशु के बारे में बातचीत करने लगे। [20]यहूदियों ने पौलुस
से कहा, "आप हमारे साथ कुछ दिन रहिए," परंतु पौलुस ने मना
कर दिया। [21-22]उन्होंने उनसे यह कहते हुए विदा ली, "यदि परमात्मा
की इच्छा हो तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।" तो वह इफिसुस से
जलमार्ग द्वारा कैसरया गए और वहाँ से यरूशलम जाकर सत्संगियों से
भेंट की और फिर अंताकिया शहर चले गए।
[23]अंताकिया में कुछ दिन ठहरकर पौलुस फिर यात्रा पर निकले और
सारे गलातिया और फ्रिगिया क्षेत्रों में घूमते हुए सब शिष्यों के मन को
मज़बूत करते रहे।

इफिसुस शहर में अपोलोस

[24]अपोलोस नामक एक यहूदी था। उसका जन्म इजिप्ट देश के
सिकंदरिया शहर में हुआ था। वह अच्छा वक्ता था और परमात्मा-ग्रंथ
का भी ज्ञान रखता था। वह एक दिन इफिसुस शहर पहुँचा। [25]उसने प्रभु
के मार्ग की शिक्षा पाई थी और वह प्रभु येशु की कहानी को बड़े जोश
से ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था। हालाँकि वह केवल योहन के
समर्पण-स्नान की शिक्षा के बारे में ही जनता था। [26]वह यहूदी सत्संग
भवन में निडरता से बोलने लगा। प्रिस्का और अकुलस उसकी बातें
सुनकर उसे अपने साथ ले गए और परमात्मा के मार्ग के बारे में और
अधिक ज्ञान दिया।

27 अपोलोस की इच्छा थी कि वह समुद्र पार कर आखेया प्रदेश
को जाए। भक्त भाइयो ने उसे इस विषय में मदद की और प्रभु येशु
के शिष्यों को लिखा कि वे उसका स्वागत करें। आखेया पहुँचकर
अपोलोस ने उन लोगों की सहायता की जो परमात्मा की कृपा द्वारा
मुक्तिदाता येशु पर आस्था प्रकट कर चुके थे। 28 अपोलोस ने यहूदियों
का सबके सामने प्रभावशाली शब्दों में खंडन किया और परमात्मा-ग्रंथ
से प्रमाणित किया कि येशु ही मुक्तिदाता हैं।

19

समर्पण-स्नान दाता योहन के शिष्य

1 जब अपोलोस कुरिंथ शहर में था तब राजदूत पौलुस देश के भीतरी
क्षेत्रों से होते हुए इफिसुस शहर में आए। वहाँ उन्हें कुछ शिष्य मिले।
2 पौलुस ने उनसे पूछा, "तुमने जब परमात्मा के संदेश पर विश्वास
किया, क्या तुम्हें उस समय परमात्मा की पवित्र आत्मा प्राप्त हुई?"
उन्होंने उत्तर दिया, "हम तो जानते भी नहीं कि परमात्मा की पवित्र
आत्मा क्या होती है।"
3 पौलुस ने कहा, "तो तुमने किसका समर्पण-स्नान प्राप्त किया है?"
वे बोले, "योहन का समर्पण-स्नान।"
4 इस पर पौलुस ने उनसे कहा, "योहन बुरे कर्मों से पश्चाताप करने
का समर्पण-स्नान देते थे। वह लोगों से कहते थे, 'जो मेरे बाद आने
वाले हैं उन पर, अर्थात् प्रभु येशु पर आस्था रखो।'"
5 यह सुनकर उन्होंने प्रभु येशु के नाम में समर्पण-स्नान लिया। 6 जब
पौलुस ने उनके सर पर हाथ रखा तब पवित्र आत्मा उन पर आया और
वे पवित्र आत्मा द्वारा अलग-अलग भाषाएँ बोलने लगे जो उन्होंने कभी
सीखी नहीं थीं और दिव्य संदेश सुनाने लगे। 7 ये सब लगभग बारह
पुरुष थे।

इफिसुस शहर में पौलुस

8 पौलुस यहूदी सत्संग भवन में गए और तीन महीने तक लोगों को निडर
होकर परमात्मा के साम्राज्य के बारे में बताते और समझाते रहे। 9 परंतु
जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उनकी बात न मानी और सत्संग भवन में

प्रभु के मार्ग की निंदा करने लगे, पौलुस ने उनको छोड़ दिया और अपने
शिष्यों को साथ ले गए। तब वह तिरानस नामक व्यक्ति के विद्यालय में
हर रोज़ प्रभु के मार्ग के बारे में बात किया करते थे। 10ऐसा दो साल तक
चलता रहा। इसके कारण सारे आसिया प्रदेश, निवासी यहूदी, या जो
यहूदी समाज से नहीं हैं, सबने प्रभु येशु का संदेश सुन लिया।
11परमात्मा पौलुस के माध्यम से अद्‌भुत चमत्कार कर रहे थे, 12यहाँ
तक कि पौलुस के शरीर से स्पर्श किए हुए अँगोछे और रूमाल बीमारों
पर डाल दिए जाते, तो उनकी अनेक बीमारियाँ दूर हो जाती थीं और
उनमें से अशुद्ध आत्मा निकल जाती थीं।
13शहर-शहर घूमने वाले कुछ यहूदी ओझाओं ने कोशिश की कि
अशुद्ध आत्माओं से जकड़े हुए लोगों के अन्दर से प्रभु येशु के नाम
से अशुद्ध आत्माएँ निकालीं। वे इस प्रकार कहते हैं, "तुम्हें येशु के
नाम से बाहर आने का आदेश देता हूँ जिनका प्रचार पौलुस करते हैं।"
14स्किवा नामक एक यहूदी "महापुरोहित"* था। उसके सात पुत्र भी
अशुद्ध आत्माओं को निकाल ने की कोशिश किया करते थे। 15एक बार
अशुद्ध आत्मा ने उनसे कहा, "येशु को मैं जानती हूँ और पौलुस को भी
मैं पहचानती हूँ, पर तुम कौन हो?" 16और अशुद्ध आत्मा से जकड़े हुए
मनुष्य ने झपटकर उन लोगों पर हमला किया और उनकी ऐसी पिटाई
की कि वे नंगे और घायल हो गए और उस घर से निकल भागे।
17यह बात इफिसुस के रहने वाले सब यहूदी समाज के लोगों और
दूसरे समाज के लोगों को भी मालूम हो गई। उन सब पर डर छा
गया और प्रभु येशु के नाम का गुणगान होने लगा, 18और जिन्होंने प्रभु
येशु पर आस्था प्रकट की थी, उनमें से बहुत से लोगों ने सबके सामने
स्वीकार किया कि वे जादू-टोना करवाया करते थे। 19अनेक जादू-टोना
करने वालों ने अपनी पोथियाँ इकट्ठाकर सबके सामने जला डालीं।
और जब इन पोथियों का मूल्य आका गया तो पचास हजार चाँदी के
सिक्के निकला। 20इसलिए प्रभु येशु की शक्ति के कारण, उनका संदेश
फैलता गया और लोगों पर प्रभाव पड़ा।

---

* **19:14** *महापुरोहित* - यह माना जाता है कि स्केवा नाम का यह व्यक्ति इज़राएल का असली महापुरोहित नहीं था, लेकिन लोगों पर बड़ा प्रभाव डालने के लिए उसने खुद को यह उपाधि दे दी।

21 यह सब होने पर पौलुस ने निर्णय लिया,* "मैं मैसेडोनिया और
आखेया प्रदेश होते हुए यरूशलम शहर जाऊँगा और वहाँ पहुँचने के
बाद रोम भी ज़रूर जाऊँगा।" 22 उन्होंने अपने दो सहायकों तिमोथियस
और इरास्तस को मैसेडोनिया भेज दिया जबकि वह स्वयं कुछ दिन
तक आसिया प्रदेश में ठहरे रहे।

इफिसुस में विरोध

23 इन्हीं दिनों की बात है, प्रभु के मार्ग को लेकर बहुत हंगामा मचा।
24 दमेत्रियस नामक एक सुनार था। वह ग्रीस देश की देवी अरतमिस* के
लिए चाँदी के मंदिर और मूर्तियाँ बनवाता था और इस तरह कारीगरों
को बहुत काम दिलाता था। 25 उसने ऐसे ही व्यवसायों के कारीगरों
को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "सज्जनो, आप जानते हैं कि इस
व्यवसाय से हमें कितने पैसे मिलते हैं। 26 और आप यहाँ भी देख रहे हैं
और सुन रहे हैं कि इस पौलुस ने केवल इफिसुस शहर में ही नहीं, परंतु
लगभग सारे आसिया प्रदेश में एक बड़े समाज को बहका दिया है कि
हाथ से बनाए देवता, देवता नहीं होते। 27 डर केवल इसी बात का नहीं
कि हमारे व्यवसाय में गिरावट आ सकती है, परंतु यह भी है कि लोग
महान देवी अरतमिस के मंदिर को तुच्छ समझने लगेंगे। और यह देवी
जिसकी पूजा सारा आसिया प्रदेश और पूरा विश्व करता है, अपने
गौरव से वंचित हो जाएगी।"

28 यह सुनकर कारीगरों का गुस्सा भड़क गया और वे चिल्लाने लगे,
"इफिसियों की देवी अरतमिस महान हैं!" 29 और इससे सारे शहर में
खलबली मच गई। लोगों ने पौलुस के साथ यात्रा कर रहे गयस और
अरिस्तारखस को, जो मैसेडोनिया निवासी थे, पकड़ लिया और दोनों
को एक-साथ घसीटते हुए विशाल सभा स्थल* की ओर दौड़े। 30 पौलुस
भी सभा स्थल के अंदर जाना चाहते थे, पर शिष्यों ने उन्हें जाने नहीं
दिया। 31 आसिया प्रदेश के कुछ अधिकारी पौलुस के मित्र थे। उन्होंने
भी संदेश भेजकर विनती की कि वह सभा स्थल में न जाएँ।

---

* **19:21** *यह सब होने पर पौलुस ने निर्णय लिया* - या, "पौलुस का पवित्र आत्मा ने मार्गदर्शन किया"
* **19:24** *देवी अरतमिस* - देवी अरतमिस का मंदिर दुनिया के 7 प्राचीन अजूबों में से एक है।
* **19:29** *विशाल सभा स्थल* - यह सभा स्थल आज भी टर्की देश के इफिसुस शहर में मौजूद है

[32]सभा स्थल में कोई कुछ चिल्ला रहा था, और कोई कुछ सभा में
गड़बड़ी मची हुई थी। अधिकतर लोग तो यह भी नहीं जानते थे कि
वे किस कारण इकट्ठे हुए हैं। [33]सिकंदर नामक एक व्यक्ति को कुछ
यहूदियों ने लोगों को स्थिति समझाने के लिए* आगे किया हुआ था।
वह अपने हाथ के इशारे से अपने बचाव में भीड़ से कुछ कहने की
कोशिश भी कर रहा था। [34]परंतु जब लोगों को मालूम हुआ कि वह
यहूदी है तब सब-के-सब कोई दो घंटे तक एक आवाज़ में चिल्लाते रहे,
"इफिसियों की देवी अरतमिस महान हैं!"

[35]तब शहर के एक मंत्री ने भीड़ को शांत किया और यह कहा,
"इफिसुस-निवासियो, ऐसा कौन मनुष्य है जो यह नहीं जानता
कि इफिसुस का शहर महान अरतमिस के मंदिर का और स्वर्ग
से अवतरित मूर्ति का सेवक है। [36]इस बात से कोई इंकार नहीं कर
सकता इसलिए आपको शांत रहना चाहिए और बिना सोचे-विचारे
कोई काम नहीं करना चाहिए। [37]आप ऐसे मनुष्यों को पकड़ लाए हैं
जिन्होंने न तो मंदिर को लूटा है और न ही हमारी देवी का अपमान
किया है।

[38]"यदि दमेत्रियस और उसके साथी कारीगरों का किसी से कुछ
झगड़ा है तो न्यायालय खुले हैं और प्रशासक भी उपलब्ध हैं। वहाँ इन
पुरुषों की शिकायत करें। [39]परंतु यदि आप की कुछ और माँग है तो
इसका फैसला नागरिक परिषद् में किया जाएगा। [40]हमें डर है कि रोम
की सरकार कहीं आज के दंगे का दोष हम पर न मढ़ दे, क्योंकि हम
इस हंगामे का कारण नहीं बता सकेंगे।" [41]यह कहकर उसने लोगों को
अपने घर जाने को कहा।

20

मैसेडोनिया, यूनान और त्रोआस में राजदूत पौलुस

[1]दंगा शांत होने के बाद पौलुस ने शिष्यों को बुलवाया और उनका
साहस बढ़ाया। और उनसे विदा लेकर मैसेडोनिया प्रदेश की ओर चले

---

* **19:33** *स्थिति समझाने के लिए* - शायद यहूदी चाहते थे कि सिकंदर यहूदियों और येशु-भक्तों के बीच का अंतर स्पष्ट करे। लेकिन यहूदियों को मूर्तिपूजा के खिलाफ भी जाना जाता था, इसलिए शायद यही वजह थी कि इफिसियों ने सिकंदर और उसके बोलने के प्रयास को अस्वीकार कर दिया।

गए। [2]वह मैसेडोनिया क्षेत्रों में रहनेवाले शिष्यों का भी साहस बढ़ाते
हुए दक्षिण दिशा से होते हुए ग्रीस देश में आए। [3]वहाँ तीन महीने बिताने
के बाद, जब वह जलमार्ग से सीरिया देश को जाने वाले ही थे तब
उन्हें पता चला कि कुछ यहूदी उनके विरुद्ध साज़िश रच रहे हैं, तो
उन्होंने मैसेडोनिया होकर लौटने का फैसला किया।
[4]इस यात्रा में पौलुस के साथ पिररस का पुत्र सोपत्रस जो बेरोया
निवासी था, थसलोनीकी निवासी अरिस्तारखस और सिकुंदस, दरबे
शहर का गयस, तिमोथियस, और आसिया प्रदेश का तिखिकस और
त्रोफिमस भी थे। [5]ये हम से पहले चले गए और त्रोआस बंदरगाह में
हमारा इंतज़ार करने लगे। [6]हमने रोटी-त्यौहार के बाद फिलिपी शहर
से विदा ली और बंदरगाह पहुँचकर त्रोआस के लिए जलयात्रा शुरू की
और पाँच दिन के बाद उनके पास त्रोआस पहुँचे और वहाँ सात दिन रहे।

पौलुस का त्रोआस से विदा लेना

[7]हफ्ते के पहले दिन हम शिष्य प्रभु के स्मृति भोज के लिए इकट्ठा
हुए। पौलुस, जो दूसरे दिन चले जाने को थे, लोगों को प्रवचन देने लगे,
और उनका प्रवचन आधी रात तक चलता रहा। [8]जिस ऊपर के कमरे
में हम लोग इकट्ठे हुए थे वहाँ बहुत से दीपक जल रहे थे। [9]जब पौलुस
देर तक प्रवचन करते रहे तब युतिखस नामक एक युवक जो खिड़की
पर बैठा था, ऊँघने लगा और ऊँघते-ऊँघते उसे गहरी नींद आ गई।
वह नींद के झोंके में मकान की तीसरी मंजिल से नीचे गिर पड़ा और
मर गया। [10]पौलुस नीचे उतरे और झुककर उसको गले लगाकर बोले,
“घबराओ मत, यह अभी ज़िन्दा है।” [11]फिर पौलुस वापिस ऊपर गए।
उन्होंने प्रभु का स्मृति भोज लिया और साथ-साथ खाना खाया। उसके
पौलुस बाद इतनी देर तक बातें करता रहा कि सवेरा हो गया। तब वह
विदा हुए। [12]उस युवक को वहाँ से जीवित ले जाते हुए सत्संगियों की
खुशी का ठिकाना न रहा।

पौलुस की इफिसुस सत्संग के अनुभवी सेवकों से मुलाकात

[13-14]हम पानी के जहाज़ से असोस शहर पहुंचे। पौलुस वहाँ उनकी
योजना के अनुसार थल मार्ग से आए और फिर हम एक साथ यात्रा

करते हुए मितीलेन शहर पहुँच गए। 15दूसरे दिन वहाँ से हम खियोस
द्वीप के सामने पहुँचे। अगले दिन सामोस द्वीप जा लगे। फिर एक दिन
बाद मिलेतस शहर में आए।
16पौलुस ने सोच रखा था कि हम इफिसुस शहर में नहीं उतरेंगे पर
आगे बढ़ते जाएँगे जिससे आसिया प्रदेश में समय न बिताना पड़े। वह
इसलिए जल्दी कर रहे थे कि हो सके तो पेंतेकोस्ट-त्यौहार के दिन
यरूशलम में हों।
17पौलुस ने मिलेतस से इफिसुस को संदेश भेजकर सत्संग के
अनुभवी सेवकों को बुलवाया। 18सत्संग के अनुभवी सेवक आए और
पौलुस ने उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जिस दिन से मैं आसिया
प्रदेश पहुँचा हूँ, मैंने अपना सारा समय तुम्हारे साथ किस प्रकार
बिताया। 19कुछ यहूदी लोगों की साज़िशों के कारण जो संकट मुझ
पर आ पड़े थे उनके बीच भी मैं बहुत दीनता से आँसू बहा-बहाकर
प्रभु येशु की सेवा करता रहा। 20जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनके
बारे में मैं चुप नहीं रहा और अलग-अलग जगह और तुम्हारे घर जाकर
तुमको उपदेश देता रहा। 21मैं यहूदी समाज के लोगों और दूसरे समाज
के लोगों दोनों को सच्चाई से बताता रहा कि वे अपने बुरे कर्मों से
पश्चाताप करके परमात्मा की शरण में आएँ और हमारे प्रभु येशु पर
आस्था रखें।
22"परंतु अब मैं पवित्र आत्मा की प्रेरणा से विवश होकर यरूशलम
जा रहा हूँ। वहाँ मुझ पर क्या बीतेगी, मैं नहीं जानता। 23केवल यह
जानता हूँ कि हर एक शहर में पवित्र आत्मा मुझे चेतावनी दे रही है कि
जेल और परेशानियाँ मेरी राह देख रही हैं। 24मेरे लिए मेरे जीवन का
कोई मूल्य नहीं। यदि है तो केवल यह कि मेरी वह दौड़ और वह काम
पूरा हो, जो प्रभु येशु ने मुझे दिया है, अर्थात् मैं परमात्मा के कृपा से भरे
शुभ संदेश को बताता रहूँ।
25"अब मुझे निश्चय है कि तुम सब, जिनके बीच मैं परमात्मा
के साम्राज्य का शुभ संदेश सुनाता रहा, मुझे फिर न देख पाओगे।
26इसलिए मैं तुम्हें आज यह बता रहा हूँ कि जो कुछ मैं तुम्हारी मुक्ति के
लिए कर सकता था मैंने किया। अब मुझे दोष मत देना, 27क्योंकि मैंने
साफ शब्दों में तुम्हें बताया है कि परमात्मा की पूरी योजना क्या है।

28“तुम लोग अपना और अपने इफिसुस सत्संग समूह का भी ध्यान
रखो। इस समूह पर पवित्र आत्मा ने तुमको रखवाला नियुक्त किया
है ताकि तुम परमात्मा के सत्संग की रखवाली करो, सत्संग को उन्होंने
अपने पुत्र के खून द्वारा* प्राप्त किया है।
29“मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद भयानक भेड़िए तुम्हारे बीच घुस
आएँगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। 30हाँ, तुम्हारे सत्संग में से ही ऐसे लोग
उठ खड़े होंगे जो प्रभु येशु के शिष्यों को अपना शिष्य बनाने के लिए
झूठी शिक्षाएँ देंगे। 31इसलिए सतर्क रहो और याद रखो कि मैंने तीन
साल तक दिन-रात आँसू बहा-बहाकर तुममें से एक-एक व्यक्ति को
समझाया है।
32“और अब मैं तुमको परमात्मा के और उनके कृपा की छाया
में सौंपता हूँ, जो तुम्हारा निर्माण और सारे शुद्ध किए गए भक्तों को
उत्तराधिकार प्रदान करता है।
33“मैंने किसी के सोने-चाँदी और कपड़ों का लालच नहीं किया।
34तुम स्वयं जानते हो कि इन हाथों की मेहनत ने मेरी और मेरे साथियों
की ज़रूरतें पूरी की हैं। 35मैंने हमेशा तुम्हारे सामने उदाहरण रखा कि
हमें किस प्रकार मेहनत करके कमज़ोर लोगों को संभालना चाहिए।
स्वयं प्रभु येशु द्वारा कहे गए ये शब्द याद रखो, ‘लेने के बजाय देने में
अधिक भलाई है।’”
36इतना कहकर पौलुस ने घुटने टेके और सबके साथ प्रार्थना की।
37तब वे सब फूट-फूटकर रोने और पौलुस के गले लिपटकर उन्हें चूमने
लगे। 38उनके दुख का सबसे बड़ा कारण यह था कि पौलुस ने उन्हें यह
कहा था, “तुम मुझे फिर न देखने पाओगे।” तब वे लोग पौलुस को
जहाज़ तक पहुँचाने गए।

21

राजदूत पौलुस की यरूशलम यात्रा

1इफिसुस सत्संग के अनुभवी सेवकों से भारी मन से विदा लेकर हम
जलमार्ग द्वारा सीधे कोस द्वीप में आए। फिर दूसरे दिन रोदस द्वीप और

---

* **20:28** *अपने पुत्र के खून द्वारा* - या, “अपने खून द्वारा”

वहाँ से पतारा बंदरगाह पहुँचे। 2वहाँ हमें फिनिके प्रदेश जाने वाला
एक जहाज़ मिला। हम उस पर चढ़े और फिर यात्रा शुरू की। 3तब हमें
साइप्रस द्वीप दिखाई दिया, परंतु हम उसे अपने बाएँ छोड़कर सीरिया
देश की ओर बढ़े। फिर हम सोर शहर में उतरे, क्योंकि वहाँ जहाज़ को
अपना माल उतारना था।

4हमने वहाँ प्रभु येशु के कुछ शिष्यों को ढूँढ़ निकाला और सात दिन
तक उनके यहाँ रहे। वे पवित्र आत्मा की प्रेरणा से पौलुस से बार-बार
कहते रहे कि यरूशलम मत जाना क्योंकि वहाँ खतरा है। 5जब ये दिन
पूरे हुए और हम विदा लेकर चले तब सब शिष्य अपने परिवार के
साथ शहर के बाहर तक हमें छोड़ने आए। हमने वहाँ समुद्र के किनारे
घुटने टेक कर प्रार्थना की, 6और एक-दूसरे से विदा ली। हम जहाज़ पर
चढ़ गए और वे अपने-अपने घर लौट गए।

7हम सोर के इलाके से तोलेमाई शहर पहुँचे और भक्त भाइयों और
बहनों से मिलनें एक दिन उनके यहाँ रहे। 8वहाँ से चलकर हम दूसरे
दिन कैसरया शहर पहुँचे और शुभ संदेश प्रचारक फिलिपस के यहाँ
जाकर ठहरे। जो भोजन बांटने के लिए चुने गए सात लोगों में से एक
था*। 9उनकी चार कुँवारी बेटियाँ थीं जिनको दिव्य संदेश बताने का
वरदान मिला हुआ था।

10जब हमने फिलिपस के यहाँ रुके हुए कई दिन बीत गए, तो
अगबस नामक एक और परमात्मा के प्रवक्ता यहूदिया प्रदेश से वहाँ
आया। 11जब वह हमसे मिलने आया तब उसने पौलुस का बेल्ट लिया
और अपने हाथ-पैर बाँधकर कहा, “पवित्र आत्मा का कहना है कि
जिस व्यक्ति का यह बेल्ट है उसको यरूशलम में यहूदी अधिकारी
इसी प्रकार बाँधेंगे और उन लोगों के हाथ सौंप देंगे जो यहूदी समाज
से नहीं हैं।” 12जब हमने यह सुना तब हम और वहाँ के लोग पौलुस से
विनती करने लगे कि वह यरूशलम न जाएँ।

13पर पौलुस ने उत्तर दिया, “तुम यह क्या कह रहे हो? इस प्रकार से
रो-रोकर तुम मेरे मन को क्यों दुखी करते हो? मैं तो प्रभु येशु के नाम
के कारण यरूशलम में बंदी होने को ही नहीं पर मरने को भी तैयार हूँ।”

---

* **21:8** *सात लोगों में से एक था* - राजदूतों 6:5

[14]जब पौलुस ने हमारी विनती नहीं मानी तब हम इतना ही कहकर चुप
हो गए कि प्रभु की इच्छा पूरी हो।

यरूशलम में प्रवेश

[15]कुछ दिन बाद हमने तैयारी की और यरूशलम के लिए चल दिए।
[16]कुछ शिष्य कैसरया से हमारे साथ आए और हमें साइप्रस निवासी
मनासोन के घर ले गए। वह बहुत समय से प्रभु येशु का शिष्य था।
उसके यहाँ हमें मेहमान बनना था।
[17]जब हम यरूशलम पहुँचे तब भक्त भाइयों और बहनों ने हमारा
खुशी से स्वागत किया। [18]पौलुस हमें याकोब और सत्संग के अन्य
सभी अनुभवि सेवकों से मिलवाने ले गए। [19]पौलुस ने उनको नमस्कार
किया और एक-एक करके सारे काम उन्हें बता दिए जो परमात्मा ने
उनकी सेवा के माध्यम से दूसरे समाज के लोगों के बीच में किए थे।
[20]उन्होंने यह सुनकर परमात्मा का गुणगान किया और पौलुस से
कहा, "प्रिय भाई, तुम देखते हो कि यहूदियों में से कई हज़ार लोग हैं
जिन्होंने प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की है और ये सब मोशे के नियम
और शिक्षा के भी कट्टर समर्थक हैं। [21]इनको बताया गया है कि कुछ
दूसरे समाज के लोगों के बीच रहने वाले यहूदियों को तुम सिखाते हो
कि वे परमात्मा के प्रवक्ता मोशे की शिक्षा त्याग दें, अर्थात् अपने
बेटों का चीरा-संस्कार न कराएँ और यहूदी रीती-रिवाजों के अनुसार
आचरण न करें।
[22]"तो फिर क्या किया जाए? वे ज़रूर सुनेंगे कि तुम आ पहुँचे हो।
[23]इसलिए जो हम बताते हैं, कृपया वह करो। हमारे यहाँ चार व्यक्ति
हैं जिन्होंने मन्नत मानी है। [24]उन्हें मंदिर में ले जाओ और उनके साथ
अपने को शुद्ध करने की विधि पूरी करो और उन्हें धर्म-विधि का
खर्च दो कि वे अपना मुंडन कराएँ। इस प्रकार सब लोगों को मालूम
हो जाएगा कि तुम्हारे बारे में उन्हें जो कुछ बताया गया है, वह झूठ
है और तुम स्वयं मोशे के नियम और शिक्षा को मानते हो और उन पर
चलते हो।
[25]"वे जो दूसरे समाजों के है और प्रभु येशु पर आस्था रखते हैं, हम
उनसे केवल यह बात कहना चाहते है कि वे वैसा ही करें जैसा हमने

उनको पत्र में लिखा है। वे मूर्तियों के चढ़ावे से, खून के खान-पान से, गला घोटे हुए पशुओं के मांस खाने से और अवैध सम्बन्ध से बचें।”
[26]दूसरे दिन पौलुस ने उन चार पुरुषों को अपने साथ लिया, जिन्होंने मन्नत माँगी थी और उनके साथ परमात्मा के मंदिर में प्रवेश करने की रीति को पूरा किया। फिर वह मंदिर में गया और पूछा कि अंतिम शुद्धिकरण रीति कब होगी और उनमें से हर एक के लिए भेंट कब चढ़ाई जाएगी।

पौलुस की गिरफ्तारी

[27]शुद्धिकरण रीति के सात दिन का समय पूरा होने को था, किंतु जब आसिया प्रदेश के यहूदियों ने पौलुस को मंदिर में देखा तो उन्होंने पौलुस के विरुद्ध भीड़ को उकसाया और उसे पकड़ लिया। [28]और वे चिल्लाने लगे, “इज़राएल के लोगो आओ और हमारी सहायता करो! यही वह व्यक्ति है जो हमेशा हमारे लोगों, हमारे यहूदी नियमों और इस मंदिर के विरुद्ध सबको शिक्षा देता है। इतना ही नहीं, इसने ग्रीक लोगों को मंदिर में लाकर इस पवित्र स्थान को अशुद्ध कर दिया है।”
[29]वे लोग पौलुस के साथ गैर यहूदी इफिसुस निवासी त्रोफिमस को शहर में देख चुके थे, इसलिए उन्होंने समझा कि पौलुस उसे मंदिर में ले आए हैं।
[30]सारे शहर में हड़कंप मच गई और लोगों का जमघट लग गया। वे पौलुस को पकड़कर मंदिर के आँगन के बाहर घसीट लाए, और तुरंत सारे दरवाज़े बंद कर दिए। [31]वे लोग पौलुस को जान से मारने की कोशिश कर रहे थे कि रोम की सेना के एक उच्चाधिकारी को सूचना मिली कि सारे यरूशलम में हड़कंप मचा हुआ है। [32]वह तुरंत ही सैनिकों और सेना-अधिकारियों को लेकर दौड़ पड़ा। जब लोगों ने सेना-उच्चाधिकारी और सैनिकों को देखा तब पौलुस को पीटना छोड़ दिया।
[33]फिर सेना-उच्चाधिकारी पास आया और उसने पौलुस को बंदी बना लिया। उसने आदेश दिया कि पौलुस को दो जंजीरों से बाँध लो। तब उसने पूछा, “यह कौन है? इसने क्या किया है?” [34]भीड़ में से कोई कुछ चिल्ला रहा था और कोई कुछ। शोर के मारे वह सच्चाई तक न

पहुँच सका। इसलिए उसने पौलुस को सैनिक आवास में ले जाने की
आज्ञा दी। 35जब पौलुस सीढ़ी पर पहुँचे तब भीड़ के हिंसक व्यवहार के
कारण सिपाहियों को उन्हें उठाकर ले जाना पड़ा। 36भीड़ उनका पीछा
कर रही थी और चिल्ला रही थी, "मार डालो उसे!"
37जब पौलुस सैनिक आवास में जाने को थे तब उन्होंने
सेना-उच्चाधिकारी से कहा, "क्या मैं आप से कुछ कह सकता हूँ?"
उच्चाधिकारी ने हैरान होकर कहा, "क्या तुम ग्रीक भाषा जानते हो?
38क्या तुम वही इजिप्ट देश निवासी नहीं जिसने कुछ दिन पहले विद्रोह
किया था और चार हज़ार हिंसक विद्रोहियों को अपने साथ सुनसान
बंजर जगह में ले गए थे?"
39"नहीं!" पौलुस ने कहा, "मैं यहूदी हूँ, किलिकिया प्रदेश के तरसुस
शहर का निवासी हूँ। कृपया आप मुझे इन लोगों से बातचीत करने की
आज्ञा दें।" 40जब सेना-अधिकारी ने आज्ञा दे दी, पौलुस ने सीढ़ी पर
खड़े होकर लोगों को हाथ से इशारा करके शांत रहने को कहा। और
जब वे शांत हो गए तब पौलुस ने इब्रानी भाषा में कहना शुरू किया।

22

यहूदियों के सामने राजदूत पौलुस का भाषण

1"आदरणीय यहूदी भाइयो,* अब कृपया मेरे बचाव में मुझे बोलने
दें।" 2जब लोगों ने सुना कि पौलुस उनसे उन्हीं की इब्रानी भाषा* में
बोल रहे हैं तब वे और भी शांत हो गए।
पौलुस ने आगे कहा, 3"मैं यहूदी हूँ। किलिकिया प्रदेश के तरसुस
शहर में मेरा जन्म और पालन-पोषण हुआ, पर मैंने अपनी शिक्षा इस
शहर में आचार्य गमालिएल के चरणों में बैठकर पाई। हमारे पूर्वजों के
नियमों का मैंने सख्ती से पालन किया और परमात्मा के लिए इतना
समर्पित बना जैसे आप सब आज हैं।
4"मैंने प्रभु के मार्ग पर चलने वालों पर घोर अत्याचार किया और
इसके मानने वाले पुरुषों और स्त्रियों को बाँध-बाँधकर जेल में डाला

---

* **22:1** *आदरणीय यहूदी भाइयो* - या, "आदरणीय भाइयो और गुरुवर" * **22:2** *इब्रानी भाषा* - या, "अरामी भाषा"

और कुछ की हत्या तक भी करवा दी। [5]इस बात के लिए स्वयं
महापुरोहित और सब धर्म-महासभा के बड़े मेरे गवाह हैं। एक दिन मैं
इनसे यहूदी भाइयों के नाम अधिकार-पत्र लेकर दमस्कस शहर जा
रहा था कि वहाँ इस मार्ग के मानने वालों को भी गिरफ्तार कर दंड
दिलाने के लिए यरूशलम लाऊँ।
[6]"जब मैं यात्रा करते-करते दमस्कस के निकट पहुँचा तब दोपहर के
समय आकाश से एक तेज़ प्रकाश अचानक मेरे चारों ओर चमका। [7]मैं
भूमि पर गिर पड़ा और किसी की आवाज़ सुनी। कोई मुझसे कह रहा
था, 'शाऊल, शाऊल तुम मुझे क्यों सताते हो?'
[8]"मैंने पूछा, 'प्रभु, आप कौन हैं?'
"उसने मुझसे कहा, 'मैं नासरत नगर का येशु हूँ जिसे तुम सता रहे हो।'
[9]मेरे साथियों ने प्रकाश तो देखा पर जो मुझसे बोल रहा था, उसकी
आवाज़ उन्हें साफ़ सुने नहीं दी।
[10]"मैंने कहा, 'प्रभु, मैं क्या करूँ?'
"प्रभु येशु ने मुझसे कहा, 'उठो और दमस्कस शहर जाओ। तुम्हारे
करने के लिए जो कुछ तय किया गया है वह सब तुम्हें वहीं बताया
जाएगा।' [11]उस प्रकाश के तेज के कारण मैं अँधा हो गया। इसलिए मेरे
साथी मेरा हाथ पकड़कर मुझे दमस्कस ले गए।
[12]"तब हनन्याह नामक एक व्यक्ति, जो मोशे के नियम और शिक्षा
के अनुसार परमात्मा भक्त थे और उस स्थान पर यहूदियों में उनका
अच्छा नाम था, [13]मेरे पास आए और खड़े होकर मुझसे बोले, 'भाई
शाऊल, फिर से देखने लगो!'
"उसी समय मेरा अंधापन दूर हो गया और मैं उसे देख सका। [14]तब
उसने मुझसे कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमात्मा ने पहले से ही तुम्हें चुन
लिया है कि तुम उनकी इच्छा को जानो और धर्मी मुक्तिदाता येशु के
दर्शन करो और उनकी आवाज़ सुनो। [15]तुम उनकी ओर से सब लोगों के
सामने उन बातों के गवाह बनने वाले हो जो तुमने देखी और सुनी हैं।
[16]अब देरी क्यों? उठो, प्रभु येशु के नाम को पुकारो समर्पण-स्नान लो
और अपने बुरे कर्मों के दाग धो डालो।'
[17]"जब मैं यरूशलम लौटा और परमात्मा के मंदिर में प्रार्थना कर रहा
था, तब मैंने दिव्य दर्शन पाया। [18]मैंने देखा कि प्रभु येशु मुझसे कह रहे

हैं, 'जल्दी कर और तुरंत यरूशलम शहर से बाहर चला जा, क्योंकि
तुम जो मेरे बारे में कहते हो ये लोग उसे स्वीकार नहीं करेंगे।'
19"मैंने कहा, 'प्रभु, इन्हें तो पता है कि मैं यहूदी सत्संग भवनों
से आप पर आस्था रखने वालों को गिरफ्तार करता और जेलों में
डालकर उन्हें पीटता था। 20और जब आपके गवाह स्टैफनस की हत्या
की जा रही थी, उस समय मैं स्वयं पास खड़ा था और उसकी हत्या
को ठीक मानता था और हत्यारों के कपड़ों की रखवाली कर रहा था।'
21"किंतु प्रभु येशु ने मुझसे कहा, 'जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें दूर-दूर देशों
में हर समाज के लोगों के पास भेजूँगा।'"

पौलुस की रोम की नागरिकता

22यहाँ तक तो लोगों ने पौलुस की बात सुनी। पर अब उन्होंने
चिल्लाना शुरू कर दिया, "इस मनुष्य को पृथ्वी से मिटा दो। यह ज़िन्दा
रहने लायक नहीं!" 23वे चिल्लाने, अपने कपड़े फाड़ने और आकाश में
धूल उड़ाने लगे। 24तब सेना-उच्चाधिकारी ने आदेश दिया, "इसे अंदर
सैनिक आवास में ले चलो और कोड़े मार कर इसकी जाँच करो,
ताकि मुझे पता चले कि ये लोग इसके विरुद्ध इस प्रकार क्यों चिल्ला रहे
हैं।"
25जब वे लोग पौलुस को कोड़े लगाने के लिए ज़ंजीरों में जकड़
चुके तब पौलुस ने पास खड़े सेना-अधिकारी से पूछा, "क्या कानून
के अनुसार यह सही है कि आप ऐसे व्यक्ति को कोड़े लगाएँ जो रोम
नागरिक है और जिसका दोष भी साबित नहीं हुआ है?"
26जब सेना-अधिकारी ने यह सुना तो सेना-उच्चाधिकारी के पास
जाकर कहा, "यह आप क्या कर रहे हैं? यह व्यक्ति तो रोम नागरिक
है।"
27सेना-उच्चाधिकारी ने पौलुस के पास जाकर पूछा, "मुझे बताओ,
क्या तुम रोम नागरिक हो?"
पौलुस ने कहा, "हाँ।"
28सेना-उच्चाधिकारी बोला, "मुझे यह नागरिकता भारी पैसे खर्च करने
पर मिली है।"
पौलुस ने कहा, "पर मैं तो जन्म से ही रोम का नागरिक हूँ।"

[29]जो लोग पौलुस को पीटने और उसकी जाँच करनेवाले थे, वे फौरन
पीछे हट गए। सेना-उच्चाधिकारी भी यह जानकर डर गया कि पौलुस
रोम नागरिक है और उसने उसको बंदी बनाया है।

पौलुस का यहूदी धर्म-महासभा के सामने बोलना

[30]दूसरे दिन यह सच्चाई जानने की इच्छा से कि यहूदी पौलुस पर क्यों
आरोप लगाते हैं, सेना-उच्चाधिकारी ने पौलुस की ज़ंजीरें खोल दीं।
उसने प्रधान पुरोहितों और पूरी यहूदी धर्म-महासभा को इकट्ठा होने की
आज्ञा दी, और पौलुस को लाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

23

[1]पौलुस ने यहूदी धर्म-महासभा की ओर ध्यान से देखा और यह कहा,
"भाइयो, मैंने आज के दिन तक अपने मन की आवाज़ सुनकर परमात्मा
की आज्ञाओं का पालन किया है।"
[2]इस पर महापुरोहित हनन्याह ने पास खड़े लोगों को पौलुस के मुँह
पर थप्पड़ मारने का आदेश दिया। [3]तब पौलुस ने उससे कहा, "अरे
ढोंगी, तुम्हें तो परमात्मा मारेगा! तुम यहाँ मोशे की शिक्षाओं और
नियमों के अनुसार न्याय करने को बैठे हो, फिर भी मुझे मारने का
आदेश देकर तुम नियमों को तोड़ रहे हो!"
[4]पास खड़े लोग उनसे बोले, "तुम परमात्मा के महापुरोहित को
अपशब्द बोल रहे हो!"
[5]इस पर पौलुस ने कहा, "भाइयो, मुझे मालूम नहीं था कि यह
महापुरोहित हैं, क्योंकि परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, 'अपने समाज के
किसी प्रधान का अपमान न करना'।"
[6]जब पौलुस ने देखा कि भीड़ में एक दल सदूकी पंथ का है और
दूसरा फरीसी पंथ का, तब वह धर्म-महासभा में पुकारकर कहने लगा,
"भाइयो, मैं फरीसी हूँ और फरीसियों का वंशज हूँ। मैं विश्वास करता हूँ
कि मरे हुए लोग जीवित हो जाएँगे मेरे इस विश्वास के कारण मुझ पर
मुकदमा चल रहा है।"

23:5 निर्गमन 22:28

[7]उनके यह कहते ही फरीसी और सदूकी आपस में झगड़ने लगे।
उनमें विवाद होने लगा और सभा में फूट पड़ गई, [8]क्योंकि सदूकी
मरे हुए लोगों के ज़िन्दा हो जाने को, स्वर्गदूतों और अशुद्ध आत्माओं
को नहीं मानते हैं, परंतु फरीसी इन सब को मानते हैं। [9]इसलिए बड़ा
हंगामा हुआ। कुछ फरीसी धर्मगुरु उठकर झगड़ने और यह कहने लगे,
"जो बात यह व्यक्ति कह रहा है हम तो उसमें कोई बुराई नहीं पाते।
कौन जाने इससे किसी आत्मा या स्वर्गदूत ने बात की हो।"
[10]जब विवाद बहुत बढ़ गया तब सेना-उच्चाधिकारी को डर लगा कि
कहीं ये लोग राजदूत पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें। इसलिए
उसने सैन्यदल को आज्ञा दी कि वे नीचे जाकर पौलुस को छुड़ा लें
और सैनिक आवास में ले आएँ।
[11]उसी रात को प्रभु येशु ने पौलुस के पास खड़े होकर कहा, "हिम्मत
रखो! जैसे तुमने यरूशलम में मेरे बारे में बताया है, वैसे ही तुम्हें रोम
शहर में भी मेरे बारे में बताना होगा।"

पौलुस के विरुद्ध साज़िश

[12-13]अगले दिन सवेरा होने पर चालीस यहूदियों ने साज़िश रची और
मिलकर कसम खाई कि जब तक वे पौलुस की हत्या न कर देंगे तब
तक कुछ न खाएँगे और न पीएँगे। [14]उन्होंने प्रधान पुरोहितों और
समाज के बड़ों के पास जाकर कहा, "हमने पक्की कसम खाई है कि
जब तक हम पौलुस की हत्या न कर लेंगे तब तक कुछ नहीं खाएँगे।
[15]इसलिए आप लोग धर्म-महासभा और सेना-उच्चाधिकारी को खबर
कीजिए कि वे उसे कल आपके पास भेज दें, उसको ऐसा लगे कि
आप उसके सम्बन्ध में और भी गहराई से जाँच करना चाहते हैं। हम
लोग तैयार हैं कि उसके यहाँ पहुँचने से पहले ही हम उसे रास्ते में मार
डालें।"
[16]परंतु जब पौलुस के भाँजे को इस साज़िश का पता चला, तो वह
सैनिक आवास में पहुँचा और अंदर जाकर पौलुस को बता दिया।
[17]इसके बाद पौलुस ने एक सेना-अधिकारी को बुलाकर कहा, "इस
युवक को सेना-उच्चाधिकारी के पास ले जाइए, क्योंकि इसको उनसे
कुछ कहना है।"

18वह उसको सेना-उच्चाधिकारी के पास ले गया और उससे कहा,
“कैदी पौलुस ने मुझे बुलाकर विनती की है कि मैं इस युवक को आपके
पास लाऊँ, क्योंकि यह आपसे कुछ कहना चाहता है।”
19सेना-उच्चाधिकारी उसका हाथ पकड़कर उसे अकेले में ले गया
और उससे पूछा, “तुम मुझको कौन-सी बात बताना चाहते हो?”
20उसने कहा, “कुछ यहूदियों ने साज़िश रची है कि वे आपसे कहें
कि कल आप पौलुस को धर्म-महासभा में ले जाएँ और ऐसा लगना
चाहिए मानो उनके बारे में वे गहराई से जाँच करना चाहते हैं। 21आप
उन लोगों की बात मत मानिए, क्योंकि उनमें से चालीस से अधिक
लोग पौलुस की घात में हैं। उन्होंने कसम खाई है कि जब तक वे
पौलुस की हत्या न कर देंगे तब तक न कुछ खाएँगे और न पीएँगे। वे
आपकी हाँ का इंतज़ार कर रहे हैं।”
22सेना-उच्चाधिकारी ने पौलुस के भांजे को यह आदेश दिया, “यह
किसी को न बताना कि तुमने इन बातों की सूचना मुझे दे दी है।” और
यह कहकर उसको भेज दिया।

पौलुस का कैसरया शहर को जाना

23तब सेना-उच्चाधिकारी ने दो सेना-अधिकारियों को बुलाया और
उनसे कहा, “कैसरया शहर जाने के लिए दो सौ पैदल सैनिक, सत्तर
घुड़सवार सैनिक और दो सौ हथियार-बंद सैनिक आज रात नौ बजे
तक निकलने के लिए तैयार करो। 24घोड़ों का भी प्रबंध करो जिन पर
पौलुस को बैठाकर वे उन्हें राज्यपाल फेलिक्स के पास सुरक्षित पहुँचा
दें।” 25उसने राज्यपाल फेलिक्स को यह पत्र लिखा।

26आदरणीय राज्यपाल फेलिक्स को क्लौदियस लिसियस का
नमस्कार।

27इस मनुष्य को कुछ यहूदियों ने पकड़ लिया था और वे इसे मार
डालना चाहते थे। जब मैं सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और मुझे
मालूम हुआ कि यह रोम नागरिक है तो मैंने यहूदियों से उसे छुड़ा
लिया।

28मैं जानना चाहता था कि इसके विरुद्ध क्या आरोप है, इसलिए मैं
इसे सभा के सामने लाया हूँ 29और यहाँ मुझे पता चला कि वे अपने

यहूदी नियमों के कुछ प्रश्नों को लेकर इस पर आरोप लगा रहे हैं।
पर यह कोई ऐसा आरोप नहीं है जिसके कारण इसे जेल में बंद किया
जाए या मृत्युदंड दिया जाए।
30मुझे पता चला है कि इस मनुष्य के विरुद्ध साज़िश रची जा रही
है। इसलिए मैं इसे तुरंत आपके पास भेज रहा हूँ। जिन लोगों ने इस
पर आरोप लगाया है मैंने उन्हें भी आदेश दिया है कि वे आपके सामने
इसके विरुद्ध आरोप लगाएँ। नमस्कार।
31सेना-उच्चाधिकारी के आदेश के अनुसार सैनिक पौलुस को
रातों-रात अंतिपत्रिस शहर ले गए और 32अगले दिन वहाँ से घुड़सवार
सैनिकों को पौलुस के साथ भेज कर अन्य सैनिक आवास को लौट
गए। 33सैनिकों ने कैसरया शहर जाकर राज्यपाल फेलिक्स को पत्र
दिया और पौलुस को भी उसके सामने पेश किया। 34पत्र पढ़ने के बाद
राज्यपाल ने पूछा, "तुम किस प्रदेश के हो?" जब उसे बताया गया कि
पौलुस किलिकिया के निवासी हैं 35तब उसने कहा, "जब तुम पर दोष
लगाने वाले आ जाएँगे तब मैं तुम्हारा मुकदमा सुनूँगा।" उसने आदेश
दिया कि पौलुस को हेरोदेस के राजभवन में पहरे में रखा जाए।

24

राज्यपाल फेलिक्स के सामने पौलुस पर आरोप

1पाँच दिन के बाद महापुरोहित हनन्याह कुछ यहूदी समाज के बड़ों
और तिरतुल्लुस नामक वकील के साथ कैसरया शहर आया। इन
लोगों ने राज्यपाल के सामने पौलुस के विरुद्ध आरोप पत्र प्रस्तुत
किया। 2जब पौलुस वहाँ लाया गया तब तिरतुल्लुस ने यह बोलना
शुरू किया, "आदरणीय फेलिक्स, आपके कारण हमारे बीच शांति
स्थापित है। आपके शासन-प्रबंध से हमारे यहूदी लोगों के लिए अनेक
सामाजिक सुधार शुरू हुए हैं। 3यह बात हमारे सब लोग हर जगह बड़े
धन्यवाद के साथ स्वीकार करते हैं। 4मैं आपका अधिक समय नहीं
लेना चाहता। इसलिए आप हमारे दो शब्द सुनने की कृपा करें।
5"यह मनुष्य महामारी की तरह है और संसारभर के सारे यहूदियों
में दंगा भड़काता है। यह नासरी कुपंथ का नेता है। 6इसने यहाँ तक
कोशिश की कि हमारे मंदिर को अपवित्र करे, पर हमने इसे पकड़

लिया। और इसे+ हमने मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार दंड
दिया होता, [7]किंतु सेना-उच्चाधिकारी लिसियस ने आकर इसे हमारे
हाथ से छीन लिया [8]और इस पर आरोप लगाने वालों को आपके
सामने पेश होने की आज्ञा दी। यदि आप स्वयं इन सब बातों के बारे में
इससे पूछताछ करें, तो आपको हमारे आरोपों की सच्चाई का पता चल
जाएगा।"
[9]तब कुछ अन्य यहूदियों ने भी आरोप का समर्थन किया और कहा,
"ये बातें सच हैं।"
[10]राज्यपाल ने पौलुस को बोलने का इशारा किया और पौलुस ने उत्तर
दिया, "मैं यह जानता हूँ की आप बहुत सालों से यहूदी लोगों के जज हैं,
और मैं खुशी से आपकी अदालत में अपने बचाव में बातें रख रहा हूँ।
[11]आप पता लगा सकते हैं कि मुझे भक्ति के लिए यरूशलम में आए
अभी बारह दिन से अधिक नहीं हुए हैं। [12]इन लोगों ने मुझे न तो मंदिर
में, न यहूदी सत्संग भवन और न कहीं शहर में किसी से वाद-विवाद
करते या लोगों को उकसाते पाया। [13]और न वे इन इल्ज़ामों को, जो वे
अब मुझ पर लगा रहे हैं, आपके सामने प्रमाणित कर सकते हैं।
[14]"हाँ, यह मैं आपके सामने स्वीकार करता हूँ कि ये लोग समझते हैं
कि यह मार्ग जिसका मैं पालन करता हूँ वह गलत है। लेकिन मैं अभी
भी उन्हीं परमात्मा की भक्ति करता हूँ जिनकी मेरे पूर्वज भक्ति करते
थे। और मैं मोशे की शिक्षाओं और नियमों और परमात्मा के प्रवक्ताओं
की पुस्तकों में जो कुछ लिखा है, उन सब पर विश्वास करता हूँ। [15]इन
लोगों की तरह मुझे भी भरोसा है कि परमात्मा धर्मी और अधर्मी लोगों
के न्याय के दिन हर एक मरे हुए इंसान को जीवित करेंगे। [16]इसलिए मैं
हमेशा कोशिश करता हूँ कि परमात्मा और मनुष्यों के सामने जो सही है
वही करूँ कि मेरा मन मुझे दोषी न ठहराए।
[17]"कुछ सालों बाद मैं अपने लोगों में जो गरीब हैं, उनको दान पहुँचाने
और भेंट चढ़ाने यरूशलम आया था। [18]मेरे आरोपियों ने मुझे परमात्मा
के मंदिर में देखा जब मैं शुद्धिकरण की रीति को पूरा कर रहा था। उस
समय मेरे आस-पास कोई भीड़ नहीं थी और न दंगा हो रहा था।
[19]"परंतु आसिया प्रदेश के कुछ यहूदी वहाँ पर थे। अगर वे मुझ पर
कोई आरोप लगाना चाहते हैं तो उन्हें अब यहाँ होना चाहिए। [20]या फिर

ये लोग ही बताएँ कि जब मैं यहूदी धर्म-महासभा के सामने पेश हुआ
तब इन्होंने मुझमें कौन-सा दोष पाया। 21हाँ, जब मैं इनके बीच खड़ा
था तब ऊँची आवाज़ में मैंने सिर्फ इतना कहा था, 'मरे हुए लोगों के
जीवित हो जाने पर विश्वास करने के कारण आज आपके सामने मुझ
पर मुकद्दमा चलाया जा रहा है।'"

फेलिक्स द्वारा सुनवाई का टालना

22फेलिक्स को प्रभु मार्ग की अच्छी जानकारी थी, इसलिए
उसने सुनवाई समाप्त की और कहा, "सेना-उच्चाधिकारी लिसियस
के आने पर मैं तुम्हारे मामले पर अपना निर्णय दूँगा।" 23फिर उसने
सेना-अधिकारी को बुलाकर आज्ञा दी कि पौलुस को हिरासत में रखा
जाए, पर उन्हें कुछ आज़ादी रहे ताकि पौलुस के अपने लोगों को
उसकी ज़रूरतें पूरी करने से और मिलने से न रोका जाए।

24कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिला को जो यहूदी
थी साथ लेकर वहाँ आया। फेलिक्स ने पौलुस को बुलवाया। पौलुस
ने उससे मुक्तिदाता येशु पर आस्था के बारे में बातचीत की, और
फेलिक्स ने उसको सुना। 25परंतु जब पौलुस परमात्मा की आज्ञाओं का
पालन, संयम और अच्छे और बुरे कर्मो के होने वाले न्याय के दिन की
चर्चा करने लगे तब फेलिक्स डर गया और बोला, "अभी तुम जाओ।
समय मिलने पर मैं तुम्हें फिर बुलाऊँगा।" 26उसे पौलुस से रिशवत
मिलने की उम्मीद थी ताकि वह उसे छोड़ दे। इसलिए भी वह पौलुस
को बुलाकर उनसे बातचीत करता था।

27दो साल बीतने पर फेलिक्स के स्थान पर पोरकियस फेस्तुस
राज्यपाल के पद पर नियुक्त हुआ लेकिन फेलिक्स यहूदियों को खुश
करने के उद्देश्य से पौलुस को जेल में ही छोड़ गया।

25

फेस्तुस के सामने राजदूत पौलुस पर आरोप

1राज्यपाल फेस्तुस के अपनी नयी ज़िम्मेदारियाँ संभालने के लिए
कैसरया शहर पहुँचने के तीन दिन बाद, वह यरूशलम शहर गया। 2वहाँ
प्रधान पुरोहितों और यहूदियों के प्रमुख नेताओं ने राजदूत पौलुस का

मामला उसके सामने रखा और कहा, [3]"आप पौलुस को यरूशलम में
फिर बुलवा लें तो बड़ी कृपा होगी।" उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि
वे रास्ते में ही उसकी हत्या करने की साज़िश रच रहे थे। [4]फेस्तुस ने
उत्तर दिया, "पौलुस कैसरया में कैद में है और मैं स्वयं वहाँ जाने वाला
हूँ। [5]इसलिए आप लोगों में जो प्रधान हैं, वे मेरे साथ चलें, और यदि
उसने कोई गलत काम किया है तो उस पर मुकद्दमा चलाया जाएगा।"
[6]फेस्तुस उनके बीच लगभग आठ या दस दिन बिताकर कैसरया
लौटा। उसने दूसरे ही दिन अपने जज के स्थान पर बैठकर आदेश
दिया कि पौलुस को पेश किया जाए।
[7]पौलुस के पेश होने पर यरूशलम से आए हुए यहूदियों ने उन्हें घेर
लिया और उन पर अनेक गंभीर आरोप लगाने लगे जिन्हें वे प्रमाणित
नहीं कर सके।
[8]पौलुस ने अपने बचाव में कहा, "मैंने न तो यहूदियों के नियमों के
विरुद्ध, न मंदिर के, और न ही रोम सम्राट के विरुद्ध कोई अपराध
किया है।"
[9]फिर भी फेस्तुस ने यहूदियों को खुश करने के लिए पौलुस से पूछा,
"क्या तुम यरूशलम जाना चाहते हो कि वहाँ मेरे सामने इन बातों के
बारे में तुम्हारा न्याय हो?"
[10]पौलुस ने कहा, "मैं रोम के सम्राट द्वारा नियुक्त जज के सामने खड़ा
हुआ हूँ। मेरा न्याय यहीं होना चाहिए। जैसा कि आप अच्छी तरह जानते
हैं कि मैंने यहूदियों का कुछ बुरा नहीं किया। [11]यदि मैं गलत हूँ और यदि
मैंने ऐसा कुछ किया है जिससे मुझे मृत्यु-दंड मिले तो मैं यह दंड स्वीकार
करूँगा। परंतु यदि इनके द्वारा मुझ पर लगाए गए आरोप गलत हैं तो
कोई मुझे इनके हाथ में नहीं सौंप सकता। मैं सम्राट से गुहार लगाता हूँ!"
[12]तब फेस्तुस ने मंत्रिमंडल से परामर्श किया और उसके बाद पौलुस
को उत्तर दिया, "तुमने सम्राट से गुहार लगाई है। तुम्हें सम्राट के यहाँ
ही भेजा जाएगा।"

राजा अग्रिपा के सामने पौलुस

[13]कुछ दिन बाद राजा अग्रिपा और उसकी बहन बिरनीके फेस्तुस से
भेंट करने कैसरया में आए। [14]वे वहाँ कई दिन ठहरे। फेस्तुस ने पौलुस

के बारे में राजा को बताया। उसने कहा, "फेलिक्स एक मनुष्य को
जेल में छोड़ गए हैं कि मैं उसका न्याय करूँ। 15जब मैं यरूशलम में था
तब यहूदियों के प्रधान पुरोहितों और बड़ों ने उसके बारे में मुझे सूचना
दी और कहा कि उसे दंड दिया जाए। 16मैंने उनके सामने रोम शासन
की प्रथा स्पष्ट करते हुए उनसे कहा कि इस प्रथा के अनुसार दोषी
और दोष लगानेवालों के आमने-सामने सवाल-जवाब किए बिना तथा
दोषी को अपनी सफ़ाई पेश करने का अवसर दिए बिना दंड देना सही
नहीं है।

17"वे लोग यहाँ इकट्ठा हुए तो मैंने बिना देरी किए दूसरे ही दिन
अपने न्याय की गद्दी पर बैठा और उस मनुष्य को पेश करने का
आदेश दिया। 18आरोप लगाने वाले खड़े हुए, पर उन्होंने उस पर कोई
ऐसा गंभीर आरोप नहीं लगाया, जैसा मैं सोच रहा था। 19उससे उनका
झगड़ा धार्मिक विषयों को लेकर था, और 'येशु' के विषय में भी, जो
मर चुका था, परंतु पौलुस का कहना है कि वह ज़िन्दा हैं।

20"मेरी समझ में नहीं आया कि इन बातों की छानबीन कैसे की
जाए। इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या वह यरूशलम जाना चाहेगा कि
वहाँ इस बारे में उसका न्याय किया जाए। 21परंतु जब पौलुस ने गुहार
लगाई कि उसे सम्राट के फैसला लेने तक उसकी निगरानी की जाए,
तो मैंने आदेश दिया कि जब तक मैं उसे सम्राट के पास नहीं भेजता,
वह यहीं हिरासत में रहे।"

22इस पर राजा अग्रिपा ने फेस्तुस से कहा, "मैं भी उस मनुष्य की
बातें सुनना चाहता हूँ।" फेस्तुस बोला, "कल आप सुन लेंगे।"

23तो दूसरे दिन राजा अग्रिपा और बिरनीके बड़ी धूमधाम के साथ
आए। उन्होंने सेना-उच्चाधिकारियों और शहर के मशहूर व्यक्तियों
के साथ सभा-भवन में गए। तब फेस्तुस के आदेश से पौलुस लाए
गए। 24फेस्तुस ने कहा, "राजा अग्रिपा और सब आए हुए सज्जनो,
इस व्यक्ति को देखिए। इसके बारे में सारे यहूदी समाज ने यहाँ और
यरूशलम में भी मुझसे चिल्ला-चिल्लाकर कहा कि यह व्यक्ति ज़िन्दा
रहने लायक नहीं है। 25परंतु मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इस व्यक्ति
ने मृत्युदंड-योग्य कोई काम नहीं किया है। परंतु जब इस ने सम्राट से
गुहार लगाई तब मैंने इसे रोम भेज देने का फैसला किया।

26“परंतु मेरे पास इसके खिलाफ हमारे सम्राट को लिखने के लिए
कुछ भी नहीं है। इसलिए मैं आप लोगों के सामने और खासतौर पर
राजा अग्रिपा आप के सामने इस व्यक्ति को लाया हूँ ताकि उसकी
जाँच के बाद मुझे उसके खिलाफ लिखने को कुछ मिल जाए। 27मुझे
यह बात ठीक नहीं लगती कि किसी कैदी को सम्राट के पास भेजा
जाए और उस पर लगे आरोपों को उसे सफाई से न बताया जाए।”

26

राजदूत पौलुस की अपने बचाव में सफाई

1तब राजा अग्रिपा ने पौलुस से कहा, “तुम्हें अपनी सफाई में बोलने
की आज्ञा है।”

इस पर पौलुस ने अपना हाथ उठाकर अपनी सफाई में कहा,
2“राजा अग्रिपा, यह मेरा सौभाग्य है कि आज मुझे आपके सामने उन
सब आरोपों का खंडन करने का अवसर मिला है जो आरोप यहूदी
धर्मगुरुओं ने मुझ पर लगाए हैं। 3आप यहूदियों की सब प्रथाओं और
विवादों को अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए आपसे मेरी विनती है कि
आप मेरी बात ध्यान से सुनने की कृपा करें।

4-5“सभी यहूदी मुझे बचपन से जानते हैं। वे जानते हैं कि मैं अपने देश
और यरूशलम में कैसा जीवन बिताया करता था। और यदि वे चाहें,
तो तुम्हें बता सकते हैं कि मैं उस फरीसी पंथ का सदस्य था जो हमारे
धर्म में सबसे कट्टर पंथ है। 6परंतु अब मुझ पर आरोप लगाया जा रहा
है, क्योंकि मुझे उस प्रतिज्ञा पर भरोसा है जो परमात्मा ने हमारे पूर्वजों
से की थी।

7“इसी आशा के पूरा होने के लिए हमारे बारह वंशों पूरे मन से
रात-दिन परमात्मा की भक्ति करते हैं, और फिर भी, महाराज अग्रिपा,
कुछ यहूदी धर्म-गुरु कहते हैं कि मेरा ऐसी आशा रखना गलत है।
8आप लोग इस बात पर शक क्यों करते हैं कि परमात्मा मरे हुए लोगों
को ज़िन्दा करते हैं?

9“मैं स्वयं सोचता था कि नासरत-निवासी येशु के नाम के विरोध में
मुझे बहुत कुछ करना है 10और मैंने यरूशलम में ऐसा किया भी। मैंने
महापुरोहितों से अधिकार-पत्र लेकर, अनेक पवित्र येशु-भक्तों को जेल

में डाल दिया, और जब उनकी हत्या की गई तो उसमें मेरी सहमति थी।
11मैंने अनेक यहूदी सत्संग भवनों में कोशिश की कि उनको मार-मारकर
उन्हें प्रभु येशु की निंदा करने के लिए मजबूर करूँ। मैं गुस्से में इतना
पागल हो गया था कि विदेश के शहरों में भी जाकर उनको सताता था।
12"ऐसी स्थिति में प्रधान पुरोहितों से अधिकार पत्र प्राप्त कर मैं
दमस्कस शहर को जा रहा था। 13हे महाराज, दोपहर के समय रास्ते में
मुझे आकाश में एक दिव्य प्रकाश दिखाई दिया जो सूर्य से भी अधिक
प्रकाशवान था। वह मेरे और जो मेरे साथ यात्रा कर रहे थे उनके चारों
ओर चमक रहा था। 14हम सब भूमि पर गिर पड़े और मैंने सुना कि
कोई इब्रानी भाषा* में मुझसे कह रहा है, 'शाऊल, शाऊल, तुम मुझे
क्यों सताते हो? नुकीली चीज़ पर तुम अपने पैर क्यों मार रहे हो? तुम्हें
चोट लगेगी!'
15"मैंने पूछा, 'प्रभु, आप कौन हैं?'
"प्रभु ने कहा, 'मैं येशु हूँ, जिसे तुम सता रहे हो। 16परंतु अब उठो
और अपने पाँवों पर खड़ा हो। मैं तुमको अपना सेवक नियुक्त करने के
लिए तुम्हारे पास आया हूँ। मैं तुम्हें अपना गवाह भी ठहराता हूँ कि जो
कुछ तुमने देखा है और जो मैं तुम्हें भविष्य में दिखाऊँगा, वह दुनिया
को बताओ। 17मैं तुम्हें तुम्हारे यहूदी लोगों से और दूसरे देश के लोगों
से भी सुरक्षा दूँगा, जिनके पास मैं तुमको भेज रहा हूँ। 18मैं चाहता हूँ
कि तुम उनकी आँखें खोल दो जिससे वे अंधकार से प्रकाश की ओर
आएँ और शैतान के अधिकार से मुक्त होकर परमात्मा की ओर फिरें।
तब उनके बुरे कर्मों का हिसाब मिट जाएगा और वे उन लोगों के बीच
स्थान प्राप्त करेंगे, जो मुझ पर आस्था रखने के द्वारा शुद्ध किए गए हैं।'
19"इसलिए महाराज अग्रिपा, मैंने उस आज्ञा को जो प्रभु येशु ने मुझे
इस दिव्य दर्शन में दी, उसे नहीं तोड़ा। 20परंतु पहले दमस्कस शहर में
और उसके बाद यरूशलम और सारे यहूदिया प्रदेश तथा दूसरे समाज
के लोगों में भी प्रभु येशु का शुभ संदेश फैलाता रहा। मैंने उनको बताया,
'अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करो, परमात्मा की ओर लौटो और अपने
भले कामों के द्वारा दिखाओ कि तुम्हारा मन बदल गया है।'

---

* **26:14** *इब्रानी भाषा* - या, "अरामी भाषा"

21 "यही कारण था कि कुछ यहूदियों ने मुझे मंदिर में पकड़ा और मार
डालने की कोशिश की, 22 किंतु परमात्मा की कृपा से मैं आज तक
ज़िन्दा हूँ, और छोटे-बड़े सबको परमात्मा की सच्चाई बता रहा हूँ। जिन
बातों की भविष्यवाणी परमात्मा के प्रवक्ता मोशे और दूसरे परमात्मा
के प्रवक्ताओं ने की, उससे अधिक मैं कुछ नहीं बताता, 23 अर्थात् यह
कि मुक्तिदाता की दर्दनाक मौत होगी और यह कि वह ही सबसे पहले
मरे हुओं में से ज़िन्दा हुए और उन्होंने हमारे यहूदी लोगों और दुनिया के
हर समाज के लोगों को भी परमात्मा के प्रकाश का संदेश दिया।"

राजा अग्रिपा को राजदूत पौलुस का निमंत्रण

24 जब पौलुस अपने बचाव में यह कह ही रहे थे तब राज्यपाल
फेस्तुस चिल्लाया, "पौलुस, तुम पागल हो! अधिक ज्ञान ने तुम्हें पागल
कर दिया है।"

25 पौलुस ने उत्तर दिया, "महामहिम फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूँ। मैं
जो कह रहा हूँ वह सच है, और समझ में आता है। 26 महाराज अग्रिपा
निश्चित ही इन सब बातों के बारे में जानते हैं और उन्हीं के सामने मैं
साफ-साफ बोल रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि उनसे कोई बात छिपी
नहीं, क्योंकि यह घटना गुप्त में नहीं हुई है। 27 महाराज अग्रिपा, क्या
आप परमात्मा के प्रवक्ताओं पर विश्वास करते हैं? मैं जानता हूँ कि
आप विश्वास करते हैं।"

28 इस पर राजा अग्रिपा ने पौलुस से कहा, "क्या तुम मुझे तुरंत
मुक्तिदाता येशु का भक्त बनना चाहते हो?"

29 पौलुस ने उत्तर दिया, "तुरंत हो या बाद में, परमात्मा से मेरी प्रार्थना
है कि न केवल आप, परंतु ये सब भी, जो आज मेरी बातें सुन रहे हैं, मेरे
ही समान हो जाएँ सिर्फ एक बात में नहीं कि जंजीरों में ना जकड़े हों।"

30 तब राजा अग्रिपा, राज्यपाल फेस्तुस और बिरनीके तथा उनके
साथ बैठे हुए व्यक्ति उठ गए 31 और न्यायालय से बाहर निकल कर
एक-दूसरे से विचार-विमर्श करने लगे। उन्होंने कहा, "इस व्यक्ति ने
मृत्युदंड या जेल में डाले जाने के योग्य कोई काम नहीं किया है।"

32 राजा अग्रिपा ने फेस्तुस से कहा, "यदि इस मनुष्य ने सम्राट से
गुहार न लगाई होती तो इसे छोड़ दिया गया होता।"

27

राजदूत पौलुस की रोम यात्रा की शुरुआत

[1]जब यह तय हो गया कि हम* पानी के जहाज़ द्वारा इटली देश जाएँगे
तब पौलुस और अन्य कई कैदी यूलियस नामक सेना-अधिकारी को
सौंप दिए गए। वह सम्राट अगस्तस के सेना-दल का था। [2]हम लोग
अद्रमितियम शहर के एक पानी के जहाज़ पर चढ़े जो आसिया प्रदेश के
कुछ बंदरगाहों से होते हुए जाने को था। जल मार्ग द्वारा यात्रा शुरू की।
मैसेडोनिया प्रदेश के थसलोनीकी शहर का रहने वाला अरिस्तारखस
नामक एक व्यक्ति भी हमारे साथ था।
[3]दूसरे दिन हम सीदोन शहर पहुँच गए। यहाँ यूलियस ने पौलुस के
प्रति दया दिखाई और उन्हें उनके मित्रों के यहाँ जाने की आज्ञा दे दी
ताकि उनके मित्र यात्रा के लिए उन्हें कुछ सामान दे सकें। [4]वहाँ से हम
साइप्रस द्वीप की आड़ में बढ़ने लगे, क्योंकि हवा विपरीत दिशा में
चल रही थी। [5]जब हम किलिकिया और पंफिलिया के समुद्र को पार
कर चुके तब लिकिया प्रायदीप के मिरा नामक बंदरगाह पर पहुँचे।
[6]वहाँ सेना-अधिकारी को सिकंदरिया शहर का एक जहाज़ मिला जो
इटली देश जा रहा था। अधिकारी ने हमें उस पर चढ़ा दिया।
[7]हम लोग कई दिनों तक धीरे-धीरे यात्रा करते हुए कठिनाई से क्नीदस
प्रायद्वीप के सामने पहुँचे। हवा हमें आगे बढ़ने से रोक रही थी, इसलिए
हम सलमोने अंतरीप के पास क्रेते द्वीप की आड़ से होते हुए आगे बढ़ने
लगे ताकि हवा से बचे रहें। [8]उसके किनारे-किनारे धीरे-धीरे बढ़ते हुए हम
कठिनाई से "मनोहर बंदरगाह" पहुँचे। यहाँ से लसिया नगर निकट है।
[9]काफी समय बीत चुका था, यहाँ तक कि यहूदी उपवास त्यौहार* भी बीत
गया था। साल के इस समय में जल-यात्रा करना खतरे से खाली नहीं था।
इसलिए पौलुस ने लोगों को सलाह दी, [10]"मित्रो! मैं देख रहा हूँ कि इस
जलयात्रा में हम पर मुसीबतें आएँगी और हमें न केवल माल और जहाज़
की, परंतु अपने जीवन की भी हानि उठानी पड़ेगी।" [11]किंतु सेना-अधिकारी

*** 27:1** *हम* - इस पद से शुरू होकर राजदूतों के अद्‌भुत कार्य 28:16 तक, लेखक लूकस, पौलुस के साथ कहानी सुनाते हुए प्रतीत होता है। *** 27:9** *यहूदी उपवास त्यौहार* - (या, "योम किप्पूर") यह यहूदी त्यौहार सितंबर के अंत में आता था। सितंबर महीने के बीच में यात्रा करना खतरनाक समझा जाता था

ने पौलुस की बात के बजाय कप्तान और जहाज़ के मालिक की बातों पर
ज़्यादा ध्यान दिया। [12]यह बंदरगाह सरदियों के लिए उपयुक्त नहीं था।
इस कारण अधिकांश लोग सहमत थे कि किसी-न-किसी प्रकार फीनिक्स
शहर पहुँचकर वहाँ सर्दी बिताएँ। यह क्रेते द्वीप का एक बंदरगाह है जो
दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर खुलता था।

भूमध्य सागर में तूफान

[13]जब दक्षिणी हवा धीरे-धीरे बहने लगी तो जहाज़ चलने वाले समझे
कि हमारा काम बन गया है। उन्होंने लंगर उठा लिया और वे क्रेते टापू के
किनारे-किनारे चल पड़े। [14]पर तब ही टापू की ओर से यूरकुलीन* नामक
तूफान उठा। [15]जहाज़ तूफान में फँस गया और वह तूफान का सामना नहीं
कर पाया। इसलिए हमने हवा की दिशा में बहना ठीक समझा।
[16]तब कौदा नामक एक छोटे द्वीप की आड़ में बहते-बहते हम कठिनाई
से जीवनरक्षक छोटी नांव को* जहाज़ में ऊपर खींच सके, [17]और उसे
उठाने के बाद नाविकों ने अनेक उपाय करके रस्सियों से जहाज़ को
चारों तरफ से बाँध दिया ताकि जहाज़ टूट न जाए। उन्हें डर था कि कहीं
जहाज़ सिरतिस नामक रेतीली खाड़ी में फँस न जाए। इसलिए वे जहाज़
के पाल को थोड़ा नीचे उतारकर योंही हवा के साथ-साथ बहते चले गए।
[18]हम तूफान से बुरी तरह हिचकोले खा रहे थे, इसलिए वे दूसरे दिन
जहाज़ का माल समुद्र में फेंकने लगे। [19]तीसरे दिन वे अपने ही हाथों
जहाज़ के भारी उपकरण फेंकने लगे। [20]बहुत दिनों तक घने बादल
छाए रहने के कारण सूरज और तारे दिखाई नहीं दिए और तूफान
भयंकर बना रहा। हमें अपने बचने की कोई आशा न रही।

राजदूत पौलुस का आश्वासन

[21]जहाज़ के यात्रियों ने कई दिनों से भोजन नहीं किया था। इसलिए
पौलुस उनके बीच में खड़े हुए और यह कहा, “मित्रो, अच्छा होता

---

* **27:14** *यूरकुलीन* - उत्तर-पूर्वी दिशा में बहने वाली तूफ़ानी हवा * **27:16** *जीवनरक्षक छोटी नांव* - यह एक छोटी नाव थी जिसे आम तौर पर अच्छे मौसम में जहाज के पीछे ले जाया जाता था, न कि जहाज़ पर रखा जाता था। इसका उपयोग किनारे पर उतरने के लिए, जहाज को कुशलता से चलने और लंगर लगाने के लिए किया जाता था।

अगर तुम मेरी सलाह पर ध्यान देते और क्रेते से लंगर न उठाते। तब न
तो यह मुसीबत हम पर आती और न ही यह नुकसान उठाना पड़ता।
22अब भी मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि हिम्मत रखो। तुम लोगों में से
किसी की भी जान नहीं जाएगी, केवल जहाज़ नष्ट हो जाएगा।
23"क्योंकि परमात्मा जिनका मैं सेवक हूँ और जिनकी भक्ति मैं
करता हूँ, उनके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा, 24'पौलुस,
डरो मत! तुम्हें सम्राट के सामने खड़ा होना है। और देखो, परमात्मा ने
अपनी कृपा से तुम्हें और तुम्हारे साथ यात्रा करनेवालों को जीवनदान
देकर बचा लिया है।' 25इस कारण, हिम्मत रखो। मुझे परमात्मा पर
भरोसा है कि जैसा उन्होंने मुझसे कहा है, ठीक वैसा ही होगा। 26परंतु
पहले किसी द्वीप से हमारा जहाज़ टकराएगा।"
27जब चौदहवीं रात आई और हम आद्रियास सागर में इधर-उधर
भटक रहे थे तब लगभग आधी रात को नाविकों को लगा कि हम थल
के निकट पहुँच रहे हैं। 28जब उन्होंने गहराईनापी तो सैंतीस मीटर जल
पाया। थोड़ा आगे चलकर फिर उन्होंने नापा तो छब्बीस मीटर। 29तब
इस डर से कि कहीं चट्टानों से न टकरा जाएँ, उन्होंने जहाज़ के पिछले
भाग से चार लंगर डाले और सुबह होने के लिए प्रार्थना करने लगे।
30किंतु नाविक तो जहाज़ से भागने का विचार कर रहे थे और अगले
भाग में लंगर डालने के बहाने जीवनरक्षक छोटी नांव को समुद्र में
उतार चुके थे। 31पौलुस ने सेना-अधिकारी और सैनिकों से कहा, "यदि
नाविक जहाज़ से भाग गए, तो आप लोग भी नहीं बच पाएँगे।" 32इसके
बाद सैनिकों ने जीवनरक्षक छोटी नांव को पकड़ने वाली रस्सियों को
काट दिया और उसे समुद्र में गिरने दिया।
33जब दिन निकलने वाला था तब पौलुस ने उन सबको भोजन करने
के लिए उत्साहित किया। उन्होंने कहा, "आज चौदह दिन हो गए,
तुम लोगों ने चिंता के कारण कुछ नहीं खाया। 34मेरी तुमसे विनती
है कि कुछ तो भोजन खा लो। इससे तुम जीवित रहोगे। मित्रो, जैसा
परमात्मा ने कहा है, तुममें से किसी को कुछ भी नहीं होगा।" 35यह
कहकर पौलुस ने रोटी ली और उसके टुकड़े किए। उन्होंने सबके
सामने परमात्मा को धन्यवाद दिया और खाने लगे। 36इससे सबको
जोश मिला और वे भी भोजन करने लगे। 37जहाज़ पर हम सब दो सौ

छिहत्तर लोग थे। [38]भरपेट भोजन करने के बाद उन्होंने लदा अनाज
समुद्र में फेंक दिया कि जहाज़ का भार कम हो जाए।

जहाज़ की तबाही

[39]दिन निकलने पर वे उस जगह को पहचान न सके। तब उनकी
नज़र एक खाड़ी पर पड़ी जिसका तट रेतीला था। उन्होंने सोचा कि
यदि हो सके तो जहाज़ को वही लगा दिया जाए। [40]तो उन्होंने लंगर
काटकर समुद्र में फेंक दिया और साथ ही पतवारों के रस्से खोल दिए।
तब हवा की दिशा में किनारे की ओर बढ़ने के लिए पाल उठा दिए।
[41]परंतु जहाज़ दो जल धाराओं के बीच में फंस जाने के कारण रेत में
धँस गया। जहाज़ का अगला भाग तो रेत में धस जाने के कारण हिल
न सका, और पिछला भाग लहरों के थपेड़ों से टूटने लगा।
[42]सैनिकों का विचार था कि कैदियों को मार डाला जाए जिससे कोई
तैरकर भाग न सके। [43]परंतु सेना-अधिकारी ने पौलुस का जीवन बचाने
के इरादे से सैनिकों को कैदियों को मारने से रोक दिया। उसने आदेश
दिया कि जो तैर सकते हैं, वे पानी में कूदकर भूमि पर चले जाएँ।
[44]और जो लोग तैरना नहीं जानते थे, वे लकड़ी के पटरों और जहाज़
के टूटे टुकड़ों का सहारा लेकर ज़मीन तक पहुँच जाएँ। इस प्रकार हम
सब ज़मीन पर ठीक-ठाक पहुँच गए।

28

माल्टा द्वीप में राजदूत पौलुस का स्वागत

[1-2]इस प्रकार बच जाने के बाद, हमें वहाँ के आदिवासियों से पता
चला कि उस द्वीप का नाम माल्टा है। उन्होंने हमारे साथ बड़ा अच्छा
व्यवहार दिखाते हुए हमारा स्वागत आग जलाकर किया क्योंकि ठंड
बढ़ गई थी और बारिश भी हो रही थी।
[3]जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठर इकट्ठा कर आग पर रखा तब ताप
के कारण एक ज़हरीला साँप निकला और पौलुस के हाथ से लिपट गया।
[4]जब वहाँ के निवासियों ने उस साँप को उनके हाथ से लिपटे हुए देखा तो
वे एक-दूसरे से कहने लगे, “बेशक, यह कोई हत्यारा है। यह समुद्र से तो
बच निकला था पर ‘न्याय की देवी’ इसे ज़िन्दा नहीं रहने देना चाहती।”

5परंतु पौलुस ने उस साँप को आग में झटक दिया और उन्हें कुछ भी नहीं
हुआ। 6लोगों को अब भी ऐसा लग रहा था कि पौलुस का शरीर सूज
जाएगा या अचानक गिरकर मर जाएँगे। जब वे देर तक इंतज़ार करते रहे
और देखा कि पौलुस को कुछ भी नुकसान नहीं हुआ है तो उन लोगों का
विचार बदल गया और वे कहने लगे, "यह तो कोई देवता है।"
7उस स्थान के पास ही एक बड़ी ज़मीन थी जो उस द्वीप के मुखिया
पुबलियस की सम्पत्ति थी। उसने हमारा स्वागत किया और तीन दिन तक
प्यार से हमारी खातिरदारी की। 8पुबलियस का पिता बुखार और पेचिश
के कारण बिस्तर पर था। पौलुस ने उसके पास जाकर उस पर हाथ रखकर
प्रार्थना की और उसे स्वस्थ कर दिया। 9लोगों को जब इस बारे में मालूम
हुआ तो उस द्वीप के बीमार लोग पौलुस के पास आने लगे, और वे भी
स्वस्थ हो गए। 10उन्होंने हमारा बहुत आदर-सत्कार किया और जब हम चलने
लगे तब हमारी यात्रा के लिए ज़रूरत की सारी चीज़ें जहाज़ पर लाद दीं।

माल्टा द्वीप से रोम शहर की ओर

11माल्टा द्वीप पर इन लोगों के साथ तीन महीने रहने के बाद हम इटली जा
रहे* सिकंदरिया शहर के एक जहाज़ पर चढ़े। यह जहाज़ माल्टा द्वीप पर सर्दी
के कारण ठहरा हुआ था। इस जहाज़ के सामने वाले भाग पर जुड़वाँ देवता*
की आकृति गढ़ी हुई थी। 12हम सिराकूज़ शहर पहुँचे और वहाँ तीन दिन
ठहरे। 13वहाँ से जहाज़ में रेगियम बंदरगाह पहुँचे। वहाँ एक दिन ठहरे, और
जब दक्षिणी हवा बहने लगी, तब हम दूसरे दिन पुतेओली* शहर आए। 14वहाँ
कुछ भक्त भाइयों और बहनों से हमारी मुलाकात हुई और उनके कहने पर
हम सात दिन उनके यहाँ ठहरे। इस तरह हम रोम शहर तक आ पहुँचे।
15रोम के भक्त भाइयों और बहनों ने हमारे आने खबर सुनकर हमसे
मिलने के लिए* अपियस के चौक और तीन ताबेरनान नामक स्थान

---

* **28:11** *हम इटली जा रहे* - यह वाक्याँश पद 14 से निहित है। * **28:11** *जुड़वाँ देवता* - ये कैस्टर और पोलक्स, नाविकों के संरक्षक देवता और ज़ूस और लेडा के जुड़वां बेटे हैं। * **28:13** *पुतेओली* - जिसे पाज़ुओली भी कहते हैं जो वर्तमान में इटली देश में स्थित नेपल्स शहर का हिस्सा है।
* **28:15** *मिलने के लिए* - कुछ लोग पौलुस से मिलने के लिए तीन ताबेरनान से 53 किलोमीटर की दूरी तय करके रोम आए और कुछ लोग अप्पियस के चौक से 70 किलोमीटर की दूरी तय करके आए थे।

पर आए। उन्हें देखकर पौलुस जोश से भर गए और परमात्मा को
धन्यवाद दिया।
16 आखिरकार हम रोम शहर पहुँच गए। पौलुस को आज्ञा मिल गई
कि वह एक सैनिक के पहरे में, अपने निजी स्थान में रह सकते हैं।

रोम में यहूदियों से वार्तालाप

17 तीन दिन बाद पौलुस ने रोम में यहूदियों के प्रमुख प्रधानों को
बुलाया। जब वे आए तब पौलुस ने उनसे कहा,
"भाइयो, मैंने अपने यहूदी लोगों या पूर्वजों की प्राचीन प्रथाओं के
विरुद्ध कोई काम नहीं किया। फिर भी यरूशलम के यहूदी गुरुओं
ने मुझे बंदी बनाकर रोम के अधिकारियों के हाथ सौंप दिया है। 18 रोम
के उच्चाधिकारियों ने तो मेरी जाँच कर मुझे छोड़ना चाहा, क्योंकि
मैंने मृत्युदंड के लायक कोई काम नहीं किया था। 19 परंतु यहूदी
अधिकारियों के विरोध के कारण मुझे सम्राट के यहाँ गुहार लगानी पड़ी,
हालांकि मुझे अपने ही यहूदी लोगों के खिलाफ आरोप लगाने की कोई
इच्छा नहीं थी। 20 इस लिए मैंने आपको बुलाया है कि आपसे मिलूँ और
बातचीत करूँ। इज़राएल देश की आशा, अर्थात् हमारे मुक्तिदाता आ
चुके हैं और मैं उनका समर्थक हूँ। इसी कारण मैं इन जंजीरों से बंधा हूँ।"
21 उन्होंने पौलुस से कहा, "हमें यहूदिया प्रदेश से आपके बारे में
कोई पत्र नहीं मिला और न वहाँ से आए हुए हमारे लोगों में से किसी ने
आपके बारे में संदेश दिया या कोई बुरी बात कही। 22 परंतु हम आपके
विचार सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि इस पंथ का सब
जगह विरोध हो रहा है।"
23 उन्होंने पौलुस से मिलने के लिए एक दिन तय किया और लोग
बड़ी संख्या में उनके यहाँ आए। पौलुस सुबह से शाम तक परमात्मा के
साम्राज्य के बारे में समझाते रहे। उसने मोशे के नियम और शिक्षा तथा
परमात्मा के प्रवक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा उनमें प्रभु येशु के प्रति
आस्था जगाने की कोशिश की। 24 कुछ यहूदियों ने उनकी बातों पर
विश्वास किया और कुछ ने नहीं। 25 जब वे आपस में सहमत नहीं हुए
और जाने लगे, तब पौलुस ने उनसे यह बात कही, "पवित्र आत्मा ने
परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह के द्वारा तुम्हारे+ पूर्वजों से ठीक कहा है,

[26] 'इन लोगों के पास जाकर कहो,
"तुम सुनोगे तो ज़रूर, पर समझोगे नहीं,
तुम देखोगे तो ज़रूर, पर पहचान न सकोगे
[27] क्योंकि इन लोगों के दिल पत्थर के हो गए हैं।
ये कानों से ऊँचा सुनने लगे हैं
और इन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं
कि कहीं ऐसा न हो
कि वे आँखों से देखें, कानों से सुनें, मन से समझें
और मुझ परमात्मा के पास लौट आएँ
और मैं उनको स्वस्थ कर दूँ।"'
[28-29]"इसलिए तुम जान लो कि परमात्मा का यह मुक्ति संदेश दुनिया के दूसरे समाज के लोगों के पास भेजा गया है। वे यह शुभ संदेश सुनेंगे।"+

[30]पौलुस वहाँ किराए के मकान में पूरे दो साल तक रहे। वह अपने पास आने वाले लोगों का दिल से स्वागत करते और [31]निडर होकर वह बिना किसी बाधा के परमात्मा के साम्राज्य का प्रचार करते और उन्हें मुक्तिदाता प्रभु येशु के बारे में शिक्षा देते थे।

28:27 यशायाह 6:9-10